बिन्दो का लड़का

(मूल बंगला से अनूदित)

लेखक
शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली-६

बिन्दो का लड़का

एक

इसे वे ही नही बल्कि बाहर के लोग भी भूल गये थे कि यादव मुखर्जी और माधव मुखर्जी दोना सगे भाई नही हैं। जाने कितनी तकलीफें उठाकर बचारे यादव मुखर्जी ने अपने छोटे भाई माधव को कानून की शिक्षा दिलाई थी। बडी महनत व कोशिशो के बाद कही वे धनी मानी जमीदार की एकमात्र सन्तान, पुत्री बिन्दुवासिनी को अपनी भ्रातृ बहू बनाकर घर मे लाये थे। बहू बिन्दुवासिनी बहुत ही रूपवती थी, असाधारण सुन्दरी। पहले ही दिन जब बहू बिन्दुवासिनी अपना बेजोड रूप तथा दस हजार रुपयो के प्रामेसरी नाट लेकर घर मे आई थी तब बडी बहू अन्नपूर्णा की आखो से आनन्द के आँसू छलकने लगे थे। घर म सास ननद तो थी नही। वे ही घर की मालकिन थी। उसी दिन छोटी देवरानी का मुँह अपने हाथो से ऊपर उठा कर उन्होन जान पहिचान के पडासिनो से सामने कहा था, 'घर म बहू आवे तो ऐसी! हूबहू लक्ष्मी का रूप।

मगर दो ही दिनो मे उन्हे पता लग गया कि उनका सोचना गलत था। दो ही दिन मे सब विदित हो गया कि बहू अपने साथ जिस नाप तौल से रूप व रुपया लाई है उससे कई गुना ज्यादा अहकार व अभिमान भी साथ लेती आई है। फौरन ही बडी बहू ने अपने पति को एक ओर बुलाकर कहा, 'क्यो जी क्या रूप और रुपयो की गठरी को ही देखकर बहू को ले आये थे, जाना पहचाना भी था? यह तो काली नागिन है, नागिन!'

यादव को पत्नी की बात पर विश्वास न आया। वे चुपचाप सिर खुजलाते हुए कई बार 'सो तो—सो तो' कहकर कचहरी चले गए।

यादव बहुत ही शान्त व गम्भीर प्रकृति के आदमी हैं। ये जमींदार के यहा कारिन्दा थे। घर आते ही पूजा पाठ मे लीन हो जाते थे। माधव तो यादव से उम्र म दस साल छोटा था। अभी-अभी वकालत पास करके अपना कारोबार शुरू किया है।

माधव ने भी एक दिन भाभी से कहा, 'भाभी क्या भइया के लिए रुपया

ही सबकुछ हो गया है ? दो दिनों बाद तो मैं भी वकालत से रुपया कमा कर ला ही सकता था।'

बेचारी अन्नपूर्णा चुप ही रही।

इसके सिवा और एक मुसीबत थी कि छोटी बहू पर काबू रखना भी आसान काम न था। उसे एक प्रकार के भयानक फिट की बीमारी थी और 'फिट' का दौरा आने पर उसको ओर देखना तो कठिन ही था साथ ही डाक्टर को बुलाये बिना और कोई रास्ता भी न था। इसलिए सबों के मन में यही धारणा बैठ गई थी कि ऐसे दिखावटी ब्याह में बहुत बडी गलती हो गई। सिर्फ यादव ने अभी तक हिम्मत नहीं छोडी थी। वे सबका विरोध करके कहते, नहीं जी, जरा रुको तो, तुम लोग बाद में देखना। मेरी बहू साक्षात् जगदम्बा का है। क्या यह बिल्कुल बेकार ही हो जाएगा। ऐसा कैसे होगा ?'

फिर एक दिन देखा कि घर में कोई बात हुई होगी कि छोटी बहू उदास मुँह लटकाये बैठी थी। अन्नपूर्णा बहुत डरी अचानक उसे जाने क्या सूझा कि वह भागकर गई और अपने कमरे में सोते हुए अपने डेढ साल के बच्चे को उठा लाकर बिन्दो की गोद में डाल दिया और वहाँ से चली गई।

बच्चा अमूल्यचरण कच्ची नींद में जागकर रो पडा।

बिन्दो ने अपने को सम्हाला और बच्चे को छाती से लगाकर कमरे में चली गई।

छिपकर अन्नपूर्णा सब देख रही थी। बिन्दो के फिट की इस महा औषधि की खोज से वह बहुत प्रसन्न थी।

एक प्रकार से पूरी गृहस्थी का सम्पूर्ण भार अन्नपूर्णा पर ही था। इससे वह ठीक से बच्चे की देखभाल न कर पाती थी। और अगर दिनभर के काम काज के बाद रात को उसे सोने का न मिले तो वह और भी बीमार हो जाती है। इसीलिए बच्चे का भार अपने ऊपर उठा लिया है छोटी बहू ने।

लगभग एक महीने बाद एक दिन सवेरे सबेरे बिन्दो बच्चे को गोद में लिए रसोई घर में गई, 'जीजी, बच्चा का दूध कहा रखा है ?'

एक मिनट ठहर जा बहिन' अभी देती हूँ।

'तभी बिन्दो की नजर बच्चे रखे दूध पर पडी। वह नाराज हो गई। उसने तेज आवाज में कहा मैंने कल हा कह दिया था न कि मुझे आठ ही बजे दूध मिल जाना चाहिए लेकिन आठ ही नहीं अब तो नौ बज गये। अगर इतन तुम्हें कष्ट होता है तो साफ-साफ कहो न। मैं कोई और प्रबन्ध करूँ।'

फिर मिसरानी की ओर घूमकर बोली, 'क्यो मिसरानी जी, तुम्हें भी इतना होश नही रहता। घर के लिए जो पाक हो रहा है उसे क्या दो मिनट बाद करने मे बडी घटी हो जाती।'

मिसरानी चुप रही। अन्नपूर्णा बोल पडी, 'तेरी तरह ही अगर सिर्फ लडके को काजल लगाना और टीका देना ही दिनभर का काम हो तो जरूर होश रहे। क्या एक मिनट की भी देरी बरदास्त नही है छोटी बहू।

उत्तर मे छोटी बहू बोली, 'तुम्हें बहुत बडी कसम है जो कभी तुमने अब लल्ला के दूध से हाथ लगाया और मुझे भी कसम है। जो कभी तुमसे कहूँ।'

कहते हुए छोटी बहू ने लल्ला को धम्म से जमीन पर बैठाकर दूध की कडाही चूल्हे पर चढा दी। यह सब देखकर अमूल्य जोरो से रो उठा। और उसका रोना था कि बिन्दो ने उसके गाल पर रगड देकर कहा, चुप रह बद माश अगर चिल्लाया तो मार ही डालूँगी।'

सुनकर घर की महरी दौडी और बच्चे को गोद मे उठाने लगी कि बिन्दो ने डाटा, 'दूर हो जा तू मेरे सामने से।

महरी सिटपिटाकर खडी ही रह गई।

बिन्दो चुपचाप लल्ला को गोद मे लेकर दूध गरम करके लेकर चली गई तो वह बोली, 'सुना मिसरानी, इसकी बातें। उस दिन जरा हँसी मे ही मैंने कहा था कि अमूल्य को तू ले ले। उसी के जोर पर मुझे भी कसम खवा गई है आज।'

और अन्नपूर्णा का लडका बिन्दो की गोद मे रहकर जिस तरह बढने लगा कि परिणाम यह हुआ कि वह चाची को 'माँ' और मा को 'चाची' कहने लग गया।

दो

और चार साल बीत गए। अमूल्य का बडे धूमधाम से विद्यारम्भ कराया गया। इसके दूसरे ही दिन अन्नपूर्णा रसोई घर मे फसी थी तभी बाहर से बिन्दो ने पुकारा, 'जीजी लल्ला पाव छूने आया है जरा बाहर तो आओ।'

बाहर आकर लल्ला का ठाठ देखकर अन्नपूर्णा आश्चर्य चकित सी रह गई आँखो मे काजल, माथे पर टीका, गले मे सोने की जजीर सिर पर बालो मे चोटी पीली रगीन धोती, हाथ मे मिट्टी की दवात, बगल मे छोटी सी चटाई और ताडपत्र।

बिन्दा ने कहा, जीजी के पाँव छू ले बेटा।'

अमूल्य ने अपनी जननी को प्रणाम किया।

अन्नपूर्णा ने हँसकर कहा बहू तुझे इतना भय आता है। बच्चा पढ़ने जा रहा है शायद।'

'हाँ जीजी, गंगा पण्डित की पाठशाला म जा रहा है। आशीर्वाद दो कि आज का दिन इसके लिए सार्थक बने।' फिर नौकर से बोली अरे भैया पण्डित जी से मेरा नाम लेकर ठीक से कहना कि लल्ला को कोई मारे पीटे नहीं। और जीजी यह पाँच रुपये लो, जिसे सीधे पर रखकर कदम से पण्डित जी के पास भेज दो। कहते हुए उसने बडे प्यार से लल्ला को उठाया और चूम लिया।

यह देखकर जाने क्या अन्नपूर्णा की दोनो आँखें गीली हो गई। उसने धीरे से कहा, इसे तो लल्ला से ही छुट्टी नही हर समय परेशान रहती है। यह तो कहो कि पेट मे नही रखा नही जाने और क्या करती।'

मिसरानी बोल उठी 'अठारह उन्नीस की तो है ही और ईर्षा से शायद भगवान ने नही दिया ।'

तभी लल्ला लिए बिन्दो लौट पडी। बोली 'जीजी क्या जेठ जी से कह कर अपने ही मकान पर एक पाठशाला नही खुलवाई जा सकती। मैं सब खर्च सम्हाल लूँगी।'

अन्नपूर्णा हँसी, बोली 'अभी से मन बदल गया। बल्कि तू भी जाकर पाठशाला मे बैठी रह।'

शरमाकर बिन्दो हँस पडी। 'मन नही बदला जीजी। लेकिन आखो के सामने और आँखो से दूर रहना दो बाते है। पाठशाला के बच्चे बहुत बदमाश व शरारती हैं। इसे छोटा समझकर कहीं मारें पीटें तब।'

अन्नपूर्णा बोली 'लडके तो मार पीट करते ही हैं। फिर सभी लडके तो एक ही जैसे हैं बहू। अगर उनके माँ बाप यही सोचकर भेज सकते है तो तू क्या नही भेज सकती ?

दूसरो से अपने लल्ला की तुलना बिन्दो कभी नही सह पाती। वह मन ही मन असंतुष्ट होकर बोली 'तुम्हारी भी खूब बात होती है जीजी, मान लो कोई इसकी आँख मे कलम ही खोस दे तब।'

अन्नपूर्णा समझ गई और बोली, 'तो डाक्टर को दिखा देना, लेकिन मैं सच कहती हू कि हफ्ते भर सोचने के बाद भी आँख मे कलम खोसने की बात कभी

मेरे दिमाग म न आती। इतने लडके पढते है। आज तक तो कभी नही सुना ऐसी घटना।'

'नही सुना ता क्या ऐसा हो नही सकता ? भविष्य की बात कोई जानता ह क्या ? अच्छी बात है एक बार रहकर दखो तो ! बाद म तो जो होगा देखा ही जायगा।

'मैं जानती हूँ कि तूने जब ठान लिया है ता पूरा किए बिना तो छोडेगी नही। लेकिन म ऐसी उल्टी बात नही कह सकती। और क्या तू अपन जेठ जी से बालती नही तू ही खुद कह लेना ?'

बस बिन्दा का गुस्सा आ गया। बोली, कहना ही पडेगा नही तो मैं अपने लल्ला को राज इतनी दूर थोटे ही भेज सकती हूँ। इसस चाहे किसी का बुरा लगे या भला या वह पढ सके या नही। और क्योरी कदम, तुझस सीधा दे जाने को कहा था न ! मुह बाए क्या खडी ह ?

बिन्दो का क्रोध देखकर अन्नपूर्णा ने कहा, सीधा दे रही हूँ अभी। छोटी बहू इतनी उतावली मत हो। क्या तेरा लल्ला भी कभी बडा न होगा ? क्या तू सदा उसे आचल मे ही छिपाए रहगी, कभी यह भी तो सोच !'

छोटी बहू अपनी ही बात मे चिन्तित थी, बोली, 'कदम जाकर सीधा दे आ और पण्डित जी के पाव की धूल जरा लल्ला के माथे पर लगाकर उसे अपन साथ ही लिये आना और शाम को जरा पण्डित जी को बुलाये आना। जो नही समझे उसे समझाया भी नही जा सकता। म तो सोचती हूँ छोटा ह, कही कोई मार पीट न कर दे। ऊपर से कहती ह कि म सदा आचल म छिपाए रहूँगी ! मैं कोइ सलाह लेने तो नही आई न !' कहकर जवाब लिए बिना ही वह दनदनाती हुई वहा से चली गई।

दग अन्नपूर्णा जहाँ की तहा ही खडी रही।

कदम ने कहा, बहू जी खडी क्यो हो ? कही फिर न वह पलट पडे। जब उसन मन मे कुछ ठान लिया है तब विधाता भी आ जाए तो वह उसे बदलेगी नही।'

उसी दिन की बात है। शाम के बाद बडे बाबू अफीम का नशा करके बिस्तर पर लेटे हुक्का पी रहे थे कि अचानक दरवाजे की साकल बज उठी।

यादव चौक पडे, पूछा, 'कौन है ?'

अन्नपूर्णा कमर मे आ गई, बोली, छोटी बहू कुछ कहना चाहती है, सुन ला।

छोटी बहू से जैसे यादव बहुत डरते थे। छोटी बहू खुद तो न बोली पर उसकी तरफ से अन्नपूर्णा ने कहा, 'उसकी लल्ला की आँखों में कहीं लड़के कलम न खोस दें इससे घर में पाठशाला खुलवानी होगी।'

हुक्के की नली हटाकर यादव ने चौंककर पूछा, देखूँ तो, किसने आँख में मार दिया।'

अन्नपूर्णा ने फिर नली उन्हें पकड़ा दी और हँसकर कहा 'अभी किसी ने नहीं मारा है। कहीं मार न दे, इसकी बात है।'

अब मैं समझा !

किवाड़ के पीछे ओट में खड़ी बिन्दो जलभुन रही थी। कुढ़कर बोली, 'जीजी, तभी तो तुमने कहा था कि ऐसी उल्टी बात तुम मुँह से नहीं निकाल सकती अब क्यों कह रही हो ?'

अन्नपूर्णा खुद समझती थी कि उसने गलत तरीके से कहा है और शायद परिणाम भी ठीक न निकले। वह अपनी कुढ़न से पति पर नाराज हो गई, बोली 'अफीम के नशे में आँखें बन्द हो जाती हैं क्या कान भी बन्द हो जाते हैं ? मैंने कहा क्या और तुमने सुना क्या ? कहाँ है देखूँ ? मैंने क्या तुमसे यह कहा था कि आँख ही लल्ला की फाड़ दी है। मेरी तो हर तरह से आफत है।'

यह सुनकर यादव की सिनक जैसे हवा हो गई। घबराकर पूछा, 'क्यों क्या बात हुई है भाई ?'

अन्नपूर्णा ने गुस्से से कहा सब अच्छा ही हुआ। ऐसे आदमी से क्या बात की जाए ? मेरी किस्मत का ही दोष है। कहकर वह चली गई वहाँ से।

यादव ने पूछा बहू रानी जरा खोलकर बताओ न क्या हुआ ?'

दरवाजे की आड़ से ही बिन्दो ने कहा 'बाहर अपने दरवाजे पर एक पाठशाला हो जाती तो ।'

'यह कौन सी बात है ? पर उसमें पढ़ाएगा कौन ?'

'पण्डित जी आये थे। वे कहते हैं कि अगर उन्हें दस रुपये महीने मिलें तो वे वहाँ से अपनी पाठशाला उठा लावेंगे। मैं कहती थी कि मेरे सूद के जमा हुए रुपयों से सब खर्चा किया जाय।

यादव बोले, तब ठीक है। मैं कल ही प्रबन्ध करूँगा। गंगाराम अगर यहीं पाठशाला लावें तो ठीक रहेगा।

जेठ जी की बातों से बिन्दो का क्रोध शान्त हुआ। वह प्रसन्न होकर गई तो देखा कि रसोई घर में अन्नपूर्णा मुँह फुलाये बैठी है। और उसके सामने

हाथ मटकाकर कदम कुछ भाषण कर रही है। बिन्दो को देखते ही बोली, 'अरे माई रे !'

बिन्दो समझ गई कि उसी का गिला हो रहा था। सामने आकर वह बोली, 'अरे कहा न, रुक क्यों गई ?'

डर के मारे जैसे कदम की जीभ लटपटा गई। वह बोली, 'नही बहू, यह समझो कि—बडी जीजी ने कहा था सो मैंने कहा—क्या नामसे—कि—कि।'

सब जानती हूँ। चल भाई तू ! जाकर अपना काम देख !

कदम तो जान छुडाकर भागी।

तब बिन्दो ने अन्नपूर्णा को लक्ष्य करके व्यग्य किया, मालकिन के सलाहकार भी खूब है। जेठ जी से कहकर इनकी तनख्वाह की तरक्की करा देनी चाहिए।

बिन्दो प्रसन्न रहती है तो अन्नपूर्णा को जीजी कहती है और नाराज होने पर, मालकिन।

अन्नपूर्णा भी कुढ गई। बोली, 'जा जा कह दे। तेरे जेठ जी मेरा सिर कटवा देंगे न। तेरे जेठ जी भी कम नही है। देखते ही शुरू हो जाएँगे—'क्या है बहूरानी, ठीक कहती हो, ठीक बात है।' मैंने भी तेरी जैसी तकदीर वाली कभी नही देखी। क्या भाग्य है छोटी होकर घर भर पर राज करती है।

अन्नपूर्णा की बात पर बिन्दो को हँसी आ गई बोली, 'लेकिन तुम कहा डरती हो ?'

तेरी रणचण्डी की मूर्ति देखकर किसकी छाती का खून पानी न हो जाय। पर इतना गुस्सैल मिजाज अच्छा नही बहू। और अब तू कोई बच्ची नही। अगर बच्चे होते तो चार पाँच की मा होती। लेकिन तेरा भला क्या दोष ! दोष तो उस बूढ़े का है जो तुम्हे लाड-प्यार करके बिगाड दिया है।

'तकदीर लेकर तो जरूर पैदा हुई हूँ जीजी। धन, दौलत लाड, प्यार तो बहुतों को मिलता है इसमें कुछ खास नही। लेकिन ऐसा देवता सा जेठ पाना तो कई कई जन्म की तपस्या का ही फल है। मेरे भाग्य से डाह मत करो जीजी। मगर उनके लाड ने मेरा सिर नही फिराया। तुम्हारे लाड ने मेरा सिर फिराया है। समझी।'

'क्या बात करती हो ? मेरा शासन बहुत कडा है पर क्या करूँ ? मेरी किस्मत ही फूटी है। कोई बात ही नही मानता। नौकर चाकर भी मुँह पर आकर लडते हैं जैसे मैं ही दास दासी हूँ और वे मालिक। और मैं ही हूँ जो इतना सहती हूँ अन्यथा !'

अन्नपूर्णा की परेशानी से बिन्दो खिलखिलाकर हँस पड़ी। बोली, 'जीजी तुम मतजुगी हो। मतजुगी। इस युग में क्या पैदा हुई ? और मुझसे तो कोई भी नहीं पढ़ता बिगड़ता।' कहती हुई वह घुटने टेककर सामने ही बैठ गई और जीजी के गले में दोनों बाहें डालकर बोली, 'जीजी कोई कहानी कहो।'

अन्नपूर्णा सचमुच गुस्सा थीं। चेहरा हटा लिया।

इतने में भागती हुई कदम आई बोली, 'अमूल्य ने सरौते से हाथ काट लिया है। रोता है।'

बिन्दो चीख उठी 'सरौता मिला कहाँ से ? तुम सब क्या मर गई थीं ?'

मैं तो कमरे में बिछौना कर रही थी। पता नहीं कब बड़ी बहू के कमरे में जाकर ।

बिन्दो भागकर गई और थोड़ी देर बाद लल्ला की उँगली पर गीला लत्ता बाँधकर गोदी में लेकर आई तो बोली, 'जीजी, जाने कब से तुमसे कह रहा हूँ कि बाल बच्चों का घर ठहरा। सरौता चाकू जरा ठीक से ऊपर रखा करो पर ।'

अन्नपूर्णा अभी भी गुस्सा थीं 'बेसिर पाँव की बात मत करो बहू ! लल्ला के डर से अब पहले से ही सब क्या लोहे के सन्दूक में रखा करूँ ?'

तो ठीक है। कल से मैं उसे रस्सी से बाँधकर रखूँगी कि वह फिर कमरे में न घुसे।' बिन्दो ने कहा और चली गई।

अन्नपूर्णा बोली 'अरे कदम सुना। इतनी जबरदस्ती तो देखो।'

कदम कुछ कहना चाहती थी पर मुँह खुला ही रह गया। बिन्दो लौट आई थी। आकर बोली, अगर फिर कभी हमारी बात में किसी नौकर को तुमने पंच बनाया तो कहे देती हूँ लल्ला को लेकर मायके चली जाऊँगी।

अन्नपूर्णा ने कहा, जाने क्या दिखाती है। चली जा न, पर समझ ले कि सिर पटकेगी फिर भी बुलाऊँगी नहीं।

तो मैं भी नहीं आना चाहती !' कहती हुई बिन्दो चली गई।

दो घण्टे बाद पाँव पटकती अन्नपूर्णा बिन्दो के कमरे में गई। एक कोने में एक छोटी टेबिल पर कागज पत्तर फैलाए माधवचन्द्र बैठा था, और अपने लल्ला को लिए पलंग पर लेटी बिन्दो कहानी सुना रही थी। अन्नपूर्णा ने कहा, 'चलो खा लो।'

बिन्दो बोली मुझे भूख नहीं है।'

लल्ला भी बिन्दो से लिपटकर बोला, 'तुम जाओ। छोटी माँ नहीं खाएगी।'

अन्नपूर्णा ने डाँट दिया 'तू चुप रह ! तू ही तो सारे झगड़े की जड़ है न ! खूब दुलार मे बिगाड़ दे छोटी बहू बाद मे समझ मे आवेगा। तब याद करेगी और रोएगी कि जीजी ने कहा था।'

बिन्दो ने धीरे से लल्ला को सिखा दिया, वह चिल्ला पड़ा 'तुम जाओ न ! अभी रानी की कहानी सुना रही है छोटी मा।'

अन्नपूर्णा ने डाटा, 'छोटी बहू अगर अपना भला चाहती है तो उठ आ, नही तो कह देती हूँ कल ही तुम दोनो को मैं विदा कर दूँगी।' कहकर वह चली गई।

माधव ने पूछा, 'आज फिर क्या हो गया ?'

बिन्दो बोली, जीजी के नाराज होने पर जो होता है। मेरा तो सिर्फ इतना कसूर था कि बाल बच्चो का घर है जरा सयाना चाकू सम्हालकर रखा करो। इसी पर इतना तूफान उठा है।'

'अच्छा तो जाओ और अब ज्यादा गड़बड़ मत करो क्योकि कही भाभी के गुस्से से भइया न जग जायें।'

जाने क्या सोचकर बिन्दो उठी और लल्ला को गोद मे लेकर हँसती हुई रसोई घर की ओर चली गई।

तीन

जिस तरह एक ही माँ के दो बच्चे अपनी मा के आश्रय मे बढ़ते हैं उसी तरह दोनो माताओ ने एक ही सन्तान के आश्रय मे छः साल बिता दिए। अब अमूल्य बड़ा हो गया था। वह दूसरी कक्षा मे पढ़ता है। घर पर भी मास्टर लगे है। आज रविवार है, स्कूल बन्द है। मास्टर पढ़ाकर जा चुके हैं अमूल्य बाहर निकला।

अन्नपूर्णा ने पूछा, 'छोटी बहू बताओ क्या करूँ ?'

बिन्दो अपने कमरे भर मे तमाम आलमारी के कपड़े बिछाये अमूल्य के कपड़े ठीक कर रही थी। आज वह अपने चाचा के साथ किसी बड़े अमीर मुवक्किल के यहा दावत खाने जायगा। बिन्दो ने ऊपर देखे बिना ही पूछा 'क्या बताऊँ जीजी ?'

अन्नपूर्णा जरा अप्रसन्न थी और इतने रंग बिरंगे कपड़े फैले देख जैसे ठगी सी रह गई। फिर बोली, 'ये सभी क्या लल्ला के कपड़े हैं ?'

बिन्दो ने कहा, 'हाँ ।'

अन्नपूर्णा बोली, 'तू इस पर कितने रुपये बहाती है । तुम्हारे एक एक कपडे का गरीब के घर के लडके साल भर पहनें ।

बिन्दो को बुरा लगा फिर भी सम्हालकर बोली, 'हो सकता है । गरीब और अमीर मे इतना तो फर्क रहेगा ही । इसके लिए कहाँ तक सोचोगी जीजी ! तुम जो कहने आई थी, वही कहो । देखो न अभी हमे फुरसत नही है ।'

'तो तुझे कब फुरसत रहती है !' कहकर वह चली गई । भैरो लल्ला को खोजने गया था । एक घण्टे बाद लौटा ।

कहाँ था अभी तक ?' बिन्दो ने, पूछा ।

अमूल्य कुछ न बोला ।

'इस मुहल्ले के किसानो के बच्चो के साथ गुल्ली डण्डा खेल रहा था न !'

इस खेल से जाने क्यो बिन्दो बहुत डरती है । इसी से इस खेल के लिये उसकी इजाजत न थी । डाटकर बोली 'गुल्ली डण्डा खेलने के लिए तुझे मना किया था न !

अमूल्य डर से घबरा रहा था । बोला, 'उन्होने मुझे जबरदस्ती ही ।'

'क्या कहा ? जबरदस्ती ! अच्छा अभी तो जा फिर बताऊँगी ।' कहकर वह उसे कपडे पहनाने लगी ।

दो महीने हुए अमूल्य का जनऊ हुआ था । उसने अपने घुटे सिर पर टोपी लगाने से इन्कार किया । पर बिन्दो कहा मानने वाली थी । पहना ही दिया । और जरी की काम वाली टोपी पहनकर वह रो पडा तभी कमरे मे माधव ने कहा, 'और कितनी देरी है ?'

और अमूल्य पर नजर पडते ही बोला, 'वाह यह तो मथुरा का बाल कृष्ण बन गया है !

बिन्दो नाराज होकर बोली एक तो वह यो ही रो रहा है ऊपर से तुम भी ।

अमूल्य ने टोपी फेंक दी और जाकर पलग पर लेट रहा । माधव बोले, 'लल्ला, रो मत । चल लोग मुझे ही तो पागल कहेंगे न !'

एक दिन और भी ऐसी ही बात हुई थी । उस दिन बिन्दो बहुत नाराज थी । आज भी वही हुआ तो चिल्ला पडी 'मेरे सभी काम ऐसे ही होने हैं न ! कहती हुई गुस्से मे उठी और पखे की डण्डी चार पाच लल्ला को जमा दी । फिर कीमती मखमली कपडे फेंकने लगी ।

डरकर माधव चले गए। उन्होंने जाकर भाभी को सब बताया। 'सिर पर भूत चढा है भाभी। जाकर देखो न !'

अन्नपूर्णा ने जाकर देखा कि लल्ला डर से कांपता खडा था और कीमती कपडे उतारकर बिन्दो मामूली कपडे पहना रही थी। अन्नपूर्णा बोली, 'अच्छा तो लगता था बहू। कपडे क्यो उतार रही हो ?'

बिन्दो ने लल्ला को छोड दिया और गले मे साडी का पल्ला डालकर हाथ जोडकर कहा, 'मैं तुम्हारे पाँवो पडती हूँ बडी मालकिन ! जरा थोडी देर को चली जाओ। सबो की सलाह से तो उसकी जान ही निकल जाएगी।'

अन्नपूर्णा अवाक् रह गई।

बिन्दो अमूल्य का कान पकडकर एक ओर ले गई और बोली, 'तुम जस हो वैसी ही तुम्हारी सजा भी है। अब दिनभर इसी कमरे मे बन्द रहो। जीजी बाहर जाओ। मैं दरवाजा बन्द करूँगी।'

बाहर आकर उसने साकल चढा दी।

दोपहर को एक बज गया तो अन्नपूर्णा से नही रहा गया। बोली, 'बहू क्या सचमुच लल्ला को भूखा ही रखेगी ? क्या घर का उपवास रहेगा ?'

बिन्दो ने धीमे से कहा, 'जो घर भर की मरजी हो।

कसी बात कहती है रे बहू ! घर मे एक तो लडका है वह भी भूखा रहेगा ? मेरी अपनी चाहे छोड भी दे। नौकर चाकर भी तो भूखे रह जाएँग। जरा सोच तो !'

'मैं कुछ नही जानती।'

जब अन्नपूणा समझ गई कि बेकार बात करना है। अन्त में धीरे से बोली, 'अच्छा तो मैं कह रही हूँ कि बडी बहन की एक ही बात मान लो। आज उसे माफ कर दो। क्योकि चिन्ता से कही उसकी तबियत खराब हो गई तो तुझे ही तो भुगतना पडेगा।'

धूप की तेजी देखकर बिन्दो को शान्त व नरम होना ही पडा। कदम को बुलाकर कहा, 'आआ उसे ले आओ' लेकिन देखो जीजी, मैं आज फिर कहे देती हूँ कि आइन्दा कोई मेरी बाता मे न बोले, 'नही तो बहुत बुरा हो जाएगा।'

उस दिन इसके आगे झगट नही बढी।

छोटे भाई की वकालत जब चल निकली तो यादव ने नौकरी छोडकर जमीन जायदाद की देखभाल मे ही समय काटना प्रारम्भ किया। छोटी बहू के यहाँ से प्राप्त दस हजार रुपया को ब्याज पर चढाकर उन्होंने करीब करीब

दूना बना लिया था। उन्ही म से कुछ रुपया अलग करके, और माधव की आमदनी के सहारे पर और माधव के वकालत स बढती हुई आमदनी के सहार पर थोडी दूर पर एक जमीन लेकर बडा और पक्का मकान बनवाने का प्रबन्ध किया था। दस दिन हुए मकान तैयार हुआ था। निश्चय हुआ कि दुर्गापूजा के बाद कोई अच्छी सी तिथि विचार कर फिर सभी वहीं रहने चले जायेंगे। इसी प्रसग म यादव ने एक दिन खाना खाते समय छोटी बहू से कहा 'बहू रानी, तुम्हारा तो मकान बन गया अब किसी दिन चलकर उसे देख लो ताकि कोई कसर न रह जाए।'

ऐसी बातें सुनने की बिन्दो को आदत पड गई थी। वह चाह जितना भी काम मे रहती, जब जेठ जी के खान का समय होता तो सब काम छोडकर वह जाकर दरवाजे की ओट से बैठ जाती थी। अपने जेठ जी को देवता मानकर वह वसी ही भक्ति भी करती थी। वह बोली 'नही, कोई कसर कसे रह सकती है।

हँसकर यादव बाले, 'बिना दखे ही कह दिया। अच्छा तो, पर एक बात है। मेरी राय है कि अपने जितने भी नाते रिश्तदार व स्वजन जहाँ भी हैं उन्हे बुलाकर एक शुभ मुहूर्त मे वहाँ चले चलें। और गृह देवता की पूजा भी हो।'

बिन्दा न कहा, 'ता मैं जीजी से कहूगी। व जो कहेगी वही होगा।'

यादव बोले, 'लेकिन हमार घर की लक्ष्मी तो तुम्ही हो। जो तुम चाहोगी वही होगा।'

अन्नपूर्णा भी पास ही थी। हँसकर बोली, 'ठीक कहते हो लेकिन अगर तुम्हारी लक्ष्मी वह थोडा सा भी शान्त होती तो ।

यादव बीच म ही बोल पडे 'शान्त होने की क्या बात चलाई ! बहू रानी तो साक्षात् जगदम्बा ह। वर भी देती है और जरूरत पडने पर खड्ग भी उठाना नही भूलती। यही तो मैं भी चाहता हूँ। देखा न बहूरानी के आने के बाद से हमारे घर मे कोई भी कष्ट नही रह गया।'

अन्नपूर्णा न कहा बात तो ठीक कहते हो। इसके आन के पहल के दिनो को याद करके भी लगता है।

बिन्दा ने लजाकर इस बात को दबाया। बाली, 'आप सबका न्योता भेजिए। वह मकान काफी बडा भी है किसी को दिक्कत न होगी। चाह तो काफी दिन भी वे लोग रहें।

यादव ने कहा, 'तो मैं कल ही बुलवाने का इतजाम करता हूँ।'

चार

यादव की एक फुफेरी बहिन है, एलोकेशी। आज उसकी दशा कुछ अच्छी नही है। यादव से जब भी जो बन पडता, उसकी आर्थिक सहायता करते थे। इधर उसके जो भी पत्र आते थे उसमे वह सदा ही अपने लडके नरेन्द्र को यही यादव के यहाँ रखकर पढान लिखाने की इच्छा जाहिर करती थी। सो अचानक वह एक दिन अपने लडके के साथ आ धमकी। उसके पति प्रियनाथ कहा क्या काम करते हैं किसी को नही मालूम था और वे भी चार पाच दिन के बाद आ धमके। उस समय नरेन्द्र की उम्र सोलह के लगभग थी। चौडे किनार की धोती घुमाकर बाधता था। दिनभर मे आठ दस बार वह अपन बाल सँभालता। बडी बडी जुल्फें थी। शाम को रसोई घर के बाहर सभी इकटठे थे। एलोकेशी अपने सुपुत्र के असाधारण रूप और गुणो की तारीफ कर रही थी।

बिन्दो बीच मे ही पूँछ बैठी, 'तो नरेन्द्र किस क्लास मे पढता हा?'

नरेन्द्र बाला, 'चौथे क्लास म। रायल रीडर, ग्रामर, ज्योग्राफी, अथमटिक, डेसीमल, टेसिमल जान क्या क्या है। तुम यह सब नही जानागी मामी।

एलोकेशी इतने मे ही गव स फूल गई और बिन्दो की ओर देखकर बाली, 'अर छाटी बहू एकाध हा तो बन.वे भी। किताबो का तो पहाड है न! बटा कल बक्से स किताबें निकालकर अपनी मामिया का जरा दिखा ता दना बटा!'

सिर हिला दिया नरन्द्र न, 'अच्छा दिखा दूँगा।'

बिन्दा न फिर पूछा, 'पास होन का नतीजा कब तक आएगा।

नरन्द्र की जगह एलाकेशी ही बाल उठी, 'अब क्या बताऊँ भाभी। अब तक एक क्या चार चार क्लास पास कर लेता लेकिन सत्यानाश हा उस कलमुँहे मास्टर का जो इसे जहर की आँखा से देखता है। उसी के कारण कुछ नही होता। वही तो दरजा नही चढन देता। एक ही क्लास म बरस के बरस डाल रहता है।'

बिन्दो ने ताज्जुब से कहा, 'एसा कैसे हाता है?'

का रहना भी पसन्द न करे क्योंकि लल्ला इसकी सगत म पडकर बिगड जाएगा उसने नरे द्र से कहा, बेटा नरन्द्र, देखा तुम अपनी छोटी मामी के सामन फिर कभी यह ड्रामा बरामा मत दिखाना। वह नाराज हो जाती है। उन्हें यह सब अच्छा नही लगता।

एलोकेशी न कहा 'आहा, इसी से उठकर चली गई है।'

अन्नपूर्णा बोली, 'और बटा नरन्द, देख तू खूब मन लगाकर पढाई लिखाई करना ताकि तू अपनी मा का दुख दूर कर सके। और लल्ला से बहुत हल मेल भी मत रखना। वह तुझसे बहुत छोटा है न।'

एलोकेशी को यह बुरा लगा। कुढकर बोली, "ठीक है, गरीब का लडका है न गरीबो की तरह ही इसे रहना भी चाहिए। और भाभी जब तुमन बात छेड दी है तो कह ही दूँ कि अगर अमूल्य छोटा बच्चा है तो नरेन्द्र ही कौन बूढा है ? एक आध साल की बढाई नही गिनी जाती। क्या इसन कभी बडे घर के अमीर लडके नही देखे जो यही आकर देख रहा है। इसके ड्रामा म तो जाने कितने ही राजा महाराजा के लडके भी आते है।

अन्नपूर्णा डर गई, बोली, 'नही बीबीजी, सो मैं नही कहती। मैं तो कह रही थी कि ।

और कैसे कहोगी भाभी ? हम लोग इतने बेवकूफ तो नही कि इतनी भी बात न समझ सके। और भइया ने कहा था इसलिए नरे द्र को पढाने के लिए लाई हूँ नही तो क्या हमारे दिन कट ही रहे थे न ?'

'भगवान की कसम बीबी जी ! मेरा गलत अर्थ मत लगाओ और मैं तो कह रही थी कि ऐसा करे कि मा का दुख कम हो ।'

ऐसा ही सही। जाओ नरन्द्र बाहर जाकर बैठ और बडे लोगो से मत मिलना जुलना। यह कह एलोकेशी ने खुद नरन्द्र को उठाया और चल दी।

आँधी की तरह अन्नपूर्णा भागकर बिन्दो के कमरे म गई। फिर रोकर कहने लगी, 'बेचारी, क्या सभी नाते रिश्तेदारो को छोड देगी ? बता तो आखिर वहाँ से क्यो उठ आई तू ?

रिश्तेदारी क्यो छोडा। तुम सबो को लेकर आराम से घर म रहना, मैं लल्ला को लेकर कही और चली जाऊँगी। यही चाहती हो न।

कहाँ चली जाओगी जरा सुनूँ तो।

जाते समय बता दूँगी। चिन्ता मत करो।

'मैं सब जानती हूँ। तू तो वही करेगी जिसमे चार आदमियो म मुँह न

दिखा सकूँ।' कहकर अन्नपूर्णा बाहर आई। इतने मे माधव आ गया उसे देखत ही तडप उठी, 'नही लालाजी अब तुम लोग कही और जाकर रहो। नही तो वहू को भेज दा। अब मुझसे नही पटेगी। समझ ला।' कहती हुई वह चली गई।

घबराकर माधव ने पत्नी से पूछा, 'क्या हो गया है?'

'मैं क्या जानूँ। उन्ही से पूछो। अब तो हमे जाने की ही तैयारी करनी है।'

माधव कुछ न बोला। टेबिल पर से अखबार लेकर बाहर वाले कमरे मे चला गया।

पाँच

एलोकेशी देखने मे जितनी भोली लगती थी इतनी वह थी नही। उसने जब देखा कि निसन्तान बिन्दो के पास बहुत रुपया है तो वह उसी की ओर झुक गई और रोज रात को अपने पति को फटकारने लगी, 'तुम्हारे कारण ही मेरा सवनाश हुआ। तुम्हारे पास पडी न रह कर अगर मे पहले ही यहाँ आ जाती तो आज रानी होती। भला मेरे हीरे जैसे लाल को छोडकर छोटी बहू उस काले कलूटे लडके ।' फिर लम्बी सास खीचकर कहती, 'पर गरीबो को भगवान देखता है और फिर सो जाती।'

प्रियनाथ भी इसे अपनी ही बेवकूफी समझकर साच विचार करत-करते सो जाता। इसी तरह दिन बीत रहे थे। छोटी वहू की ओर एलोकेशी का प्रेम नदी की बाढ की तरह बढ रहा था।

एक दिन दोपहर को एलोकेशी ने कहा, 'तुम्हारे बाल कैसे काले बादल की तरह है बहू लेकिन तुम जूडा क्यो नही बाँधती? आज जमीदार के घर की औरतें आवेंगी न! लाओ जूडा तो बाध दूँ।

'नहीं बीबीजी। मुझे यह सब अच्छा नही लगता। लडका बडा हो गया है न! देखेगा?'

बीबीजी सुनकर दग रह गई। बोली 'यह क्या कहती हो बहू? लडका बडा हो गया तो क्या वह बेटी जूडा न बाँधे? दुश्मनो के मुँह मे आग, मेरा नरेन्द्र तो उससे भी छ महीना बडा है तो क्या मैं बाल बाधना छोड़'

नहीं बीबी जी ऐसी बात नही। नरेन्द्र बराबर देखता आ -

उमकी वात और है। लेकिन आज लल्ला मुझे जूढा बाँधे देखे तो उसे नई बात लगेगी। पता नही चिल्लाने ही लगे, फिर बडे शरम की बात होगी। छि छि छि।'

तभी अचानक अन्नपूर्णा उधर आ गई। बिन्दो को देखकर ठिठक गई और बोली, 'तेरी आँखें कैसी हो रही हैं बहू। जरा तेरी देह तो देखूँ?'

'रोज रोज देह क्या देखोगी जीजी। मैं कोई बच्ची हूँ क्या, कि मुझ तबियत खराब होना भी समझ म न आएगा?'

'नहीं नही, ऐसी बात नहीं। तू बच्ची नही है री, तू तो बूढी है पर जरा देखूँ ता। भादो कुवार के दिन हैं। यह मौसम ठीक नही।'

बिन्दो बोली, 'कहती हूँ न जीजी कि कुछ नही हुआ।'

'तो तुम जानना। छिपाना मत, नही तो लेने के देने पड सकते हैं।' कहते हुए अन्यपूर्णा चली गई।

तब एलाकेशी ने कहा, 'बडी बहू को कुछ सनक आती है क्या कभी कभी? क्यो?'

बिन्दा को यह प्रश्न अच्छा न लगा। तनिक रुककर बोली, 'भगवान करें ऐसी सनक सबको आवे।'

एलाकेशी समझ गई, चुप रह गई।

तभी अन्नपूर्णा फिर उधर से लौटी। बिन्दा ने पुकारकर कहा, 'अरे जीजी, सुनो सुनो। क्या जूडा बँधवाओगी।'

अन्नपूणा सुनकर सन्न खडी रही। सब कुछ वह समझ कर फिर एलोकेशी से बाली, 'मैंन ता बता दिया न बीबीजी कि इससे कहना सुनना बेकार है बाल हैं सो बाधेगी नही। कपडे गहने है सो भी पहनेगी नही। इतना रूप पाया है पर कभी सँवारेगी नही। यह तो दुनिया से न्यारी है। लडका भी वसा ही है। उसी दिन कह रहा था कि कपडे पहनने से क्या होता है। छोटी माँ के पास इतने सारे तो है पर कहा वे पहनती हैं।

जरा अभिमान से सिर उठाकर बिन्दो ने कहा, 'जीजी बात यह नही है। अगर लडके को दस बीस म एक या बडा बनाना है तो माँ को तो दुनिया स न्यारी बनना ही पडेगा। जीजी अगर भगवान ने जिन्दा रखा तो देख लना तुम। दुनिया भर के लोग हाथ उठाकर कहेंगे कि यह अमूल्य की माँ है।' कहते कहते जान क्या उसकी आखें भर आइ।

अन्नपूर्णा ने प्यार से कहा, तभी तो तेरे लल्ला के बारे मे हम कभी

कुछ नही कहते। भगवान करे तेरी बात पूरी हो। लेकिन मैं ऐसी बातें नही सोचती।'

बिन्दो ने आखें पोछकर कहा, 'लेकिन जीजी, मैं तो सिर्फ इसी एक आशा पर ही जी रही हू।' कहते हुए उसके सारे देह मे रोगटे खडे हो गए। बहुत लज्जित होकर उसने कहा, 'लेकिन जीजी अगर मेरी इस आशा पर कभी चोट लगेगी तो मैं पागल हो जाऊँगी।'

अन्नपूर्णा हतप्रभ हो गई। ऐसा नही कि वह अपनी देवरानी को जानती न हो, उसके मन को न जानती हो पर उसकी आशा की उग्र प्रतिछाया उसने कभी इतनी साफ न देखी थी। आज उसे लगा कि क्यो बिन्दो अमूल्य के लिए सदा इतनी सतर्क रहती है। अपने पुत्र के लिए इस प्रेम को देखकर उसकी माँ का दिल भर आया और अपने आँसू छिपाने को उसने मुँह घुमा लिया।

एलाकेशी बोली, 'जाने दो छोटी बहू, लाओ आज तुम्हारे ।'

बिन्दो बात काटकर बोली, 'हां हा, 'आज जीजी को जूडा कर दो। इस घर मे आजतक नही देखा कि ।' कहती हुई वह उठकर हँसती हुई चली गई।'

पाच छ दिन के बाद की बात है। सवेरे के समय इस घराने का पुराना नाई यादव बाबू की हजामत बनाकर नीचे आ रहा था कि अमूल्य आकर उस के सामने खडा हो गया और बोला, 'कैलाश भइया, क्या तुम मेरे बाल भी नरेन्द्र भइया की तरह बना सकते हो ?'

'कैसे बाल भइया जी ?'

अमूल्य ने अपने बालो को दिखाकर कहा, 'देखो, यहाँ बारह आना, यहाँ छ आना, यहाँ दो आना और यहाँ गरदन पर बिलकुल बारीक ?'

अरे वैसे तो मेरा बाप भी न बना सकेगा।'

'अरे यह कौन कठिन है। बस यहा बारह आना, यहा छ आना।'

'लेकिन छोटी माँ जी की आज्ञा के बिना मैं कैसे छाँट दूँ ?'

'अच्छा रुको मैं पूछ आता हूँ। लेकिन नही तुम अपनी छतरी मुझे द दो नही तो तुम चल दोगे।' कहता हुआ वह नाई की छतरी लेकर भाग गया।'

फिर अपनी छोटी मा के कमरे मे आँधी की तरह घुसकर बोला, 'माँ जरा जल्दी से बाहर तो आना।'

बिन्दो अभी-अभी नहाकर पूजा करने बैठी थी। चिल्ला पडी, 'अरे देख छूना मत, छूना मत, पूजा करती हूँ न!'

'पूजा बाद मे करना, एक बार बाहर आकर हुक्म देकर चली जाना। नही तो वह मेरे बाल नही ठीक करेगा।'

बिन्दो को ताज्जुब हुआ। अमूल्य के साथ बाल कटवाने के लिए सदा ही मारपीट करनी पडती थी। फिर आज वह अपनी ही इच्छा से क्यो छँटवाना चाहता है? वह कुछ समझ न पाई और बाहर निकल आई और तभी नाई बोल उठा, 'बडा कठिन हुआ है माँ जी। बारह आने, छ आने, तीन आने, दो आने और एक आने के बाल छाटने होगे।'

अमूल्य बोल पडा, 'तुम गडबड मत करो। अभी मैं नरेन्द्र भइया को ही बुला लाता हूँ। देख लो।' कहकर वह उसे बुलाने चल पडा।

नरेन्द्र घर पर नही था। निराश वापस आकर अमूल्य ने कहा वह तो नही है पर माँ तुम्ही समझा दो न। यहा बारह आना, यहा छ आना, यहाँ तीन आना, यहा बिलकुल बारीक!'

बिन्दो ने हँसकर चलना चाहा लेकिन मुझे तो अभी पूजा करनी है न!'

तुम बाद मे पूजा करना, नही तो मैं तुम्हे छू दूँगा।'

विवश होकर बिन्दो को रुकना ही पडा। नाई को भी बाल छाँटना पडा। बिन्दो ने इशारा कर दिया। उसने सब एक से बराबर छाट दिए। अमूल्य ने प्रसन्नता से सिर पर हाथ फेरकर कहा, 'अब सब ठीक है।

अमूल्य तो कूदता, उछलता चला गया। बगल मे छतरी दबाकर नाई बोला, पर माँ जी कल मेरा घर मे घुसना सम्भव न होगा।

उसके बाद बिन्दो रसोई घर मे दूध तैयार कर रही थी और मिसरानी थाली परोस रही थी कि पता लगा कि घर भर मे घूम घूम कर लल्ला अपने चाचा का बाल सँवारने वाला ब्रुश खोज रहा है। थोडी देर बाद आकर वह बिन्दो की पीठ पर लगकर रोने लगा। बोला, मा उसने कुछ नही किया, सब खराब कर दिया। कल मैं उसे मार डालूँगा।

बिन्दो यह सब पहले से ही समझती थी। उसे हँसी आ गई तो अमूल्य बहुत नाराज हो गया। चिल्ला पडा, क्या तुम अन्धी हो? क्या आँखो से दिखाई नही देता!'

शोरगुल सुनकर अन्नपूर्णा भी भागी आई। सब देख सुनकर कहा, क्या हो गया? कल कह दूँगी ठीक से बना देगा!

अमूल्य और नाराज हो गया। बोला, अब कैसे कल बारह आना हो यहाँ के तो सभी बाल ही काट दिए हैं।'

अन्नपूर्णा ने सरलता से कहा, अरे तो आठ दस आना तो हो सकता है न !

'क्या खाक होगा ? क्या आठ दस आने का फैशन है ? नरेन्द्र भइया से पूछो न यहां पूरे बारह आने ही चाहिए ।'

फिर उस दिन अमूल्य ने ठीक से खाया पीया भी नही ।

अन्नपूर्णा ने कहा, 'क्योरी तेरे लल्ला को जुल्फी रखने का शौक कब से हो गया है ?'

पहले तो बिन्दो हँसी फिर गम्भीर होकर लम्बी सांस खींचकर बोली, 'जीजी बात तो बहुत छोटी है इसी से हँसी आती है पर डर के मारे छाती भी सूख रही है कि सभी बातें ऐसी तरह बढती हैं ।'

अन्नपूर्णा सब समझ रही थी । उससे भी आगे बोला न गया ।

फिर दुर्गा पूजा आ गई । उसी मुहल्ले मे जमींदार के घर मे काफी आमोद-प्रमोद का प्रबन्ध था । नरेन्द्र तो जैसे दो दिन पहले से ही उसमे डूबा था । और सप्तमी की रात को आकर लल्ला छोटी मा के पीछे गया । बोला, 'छोटी मा मैं भी यात्रा देखने जाऊँगा ।

कब है यात्रा ?'

'नरेन्द्र भइया कहते थे कि रात को तीन बजे के बाद शुरू होगी ।

तो क्या अभी से जाकर सारी रात ओस मे रहेगा । ऐसा कैसे होगा ! कल सवेरे अपने चाचा के साथ चले जाना ।'

अमूल्य रोने लगा, 'नही मा भेज दो । चाचा पता नही जायेंगे या नहीं और जाने कितनी देर में जायें ।'

'अच्छा तो तीन चार बजे जब शुरू होगी तो नौकर के साथ भेज दूँगी । अभी तो सोजा ।

निराश व नाराज होकर अमूल्य दीवाल की ओर घूमकर लेट गया । बिन्दो ने उसे खीचा तो भी कडा बना पडा रहा । फिर शायद सभी लोग सो गये । बाहर की बडी घडी की आवाज से अमूल्य की नीद टूट गई । कान उठाकर वह गिनने लगा । एक—दो—तीन—चार ! हडबडा कर वह उठ बैठा और जोरो से बिन्दो को जगाकर बोला, 'जल्दी उठो छोटी मा चार बज गए । अमूल्य ने सुना, बाहर की बडी घडी में बजता ही जा रहा था, पाँच, छ—सात—आठ—। अमूल्य रो पडा । इतना बज गया ! अब क्या जाऊँगा और बाहर बजता ही जा रहा था ?—नव—दस—ग्यारह—बारह बजाकर

जसे ही घडी रुक गई तब अमूल्य को अपनी बेवकूफी समझ म आई। वह चुप हो गया।

कमरे मे उधर माधव सोया था। हल्ला सुनकर जाग गया फिर पूछा, 'क्या हुआ रे लल्ला ?'

लाज के मारे लल्ला कुछ न बोला।

बिन्दो ने हँसकर कहा 'आज जिस तरह इसने मुझे जगाया है घर म आग लगने पर भी कोई नही जगाता।'

अमूल्य को ऐसे देखकर उसे दया आई वह बोली, 'अच्छा जा चला जा, पर किसी से झगडा मत करना।'

फिर भरो को बुलाकर लालटेन साथ लेकर जाने को कहा।

और दूसरे दिन दस बजे के बाद बहुत खुश होकर लल्ला यात्रा देख कर लौटा और आते ही चाचा को देखकर कहा, 'अरे वाह तुम नही गए ?'

बिन्दो ने पूछा, 'कसा लगा रे ?

'बहुत अच्छा, छोटी मा और चाचा आज शाम को बढिया वाला नाच है। कलकत्ता से आवेगी दो दो नाचने वाली। नरेंद्र भइया तो पहले ही देख चुका है। बताया था कि बिलकुल छोटी मा की तरह है। बहुत अच्छा नाचेंगी बाबूजी से भी कह दिया है।'

'ठीक किया !' माधव हँस पडे।

गुस्सा से बिन्दो का चेहरा लाल हो गया बोली 'आपने उस गुणी भांजे की बात सुनी ? और लल्ला अब तू वहा कतई मत जाना। हरामजादा बद माश ! क्या नरेन्द्र ने बताया हैं कि मेरी तरह हैं वे दोनो ?'

'हाँ हाँ, वह देख आ चुका है।

'अच्छा आने दो उसे। कहा है। नरेन्द्र ?'

माधव बोले क्या पागल हुई हो ? चुप रहो न। भइया ने सब सुन लिया है। अब हल्ला मत करो।

बिन्दो बात पी तो गई पर भीतर उसके आग लगी थी। शाम होते ही आकर अमूल्य अन्नपूर्णा के पीछे पड गया। बोला 'जीजी पूजा की नाच देखने जाऊँगा, जल्दी ही लौट आऊँगा।'

जाकर अपनी मा से न पूछ।'

'नहीं जीजी, अभी ही लौट आऊँगा तुम्ही उनसे कह देना माँ मैं जाऊ ?

"। वह ऐसे ही नाराज रहती है, उसी से पूछ।'

धोती का पल्ला खींचकर अमूल्य रोने लगा। बोला, 'तुम छोटी मा से मत कहना जीजी, मैं नरेन्द्र भइया के साथ जाता हूँ। बस अभी वापस आ जाऊँगा।'

कहकर भाग खडा हुआ।

घण्टे भर बाद बिन्दो ने लल्ला को खोजना शुरू किया। अन्नपूर्णा सुनकर भी चुप रही। लेकिन बाद मे बोलना ही पडा, 'कही नाच हो रहा है न ! वही नरेन्द्र के साथ गया है। अभी ही लौट आएगा। घबरा मत तू।'

'किसने जाने दिया ? क्या तुमने ?'

अन्नपूर्णा कुछ सच या झूठ न कह सकी, बोली, 'अभी-अभी आ जाएगा।'

बिन्दो का चेहरा काला हो गया। वह चली गई। और वापस आकर जब लल्ला ने सुना कि छोटी मा बुला रही है तो वह चुपचाप सीधे जाकर अपने बाप के बिस्तरे पर पड रहा। तब दिए की रोशनी मे, चश्मा लगाये, यादव भागवत का पाठ कर रहे थे। मुँह उठाकर पूछा, 'कौन है रे ? लल्ला ?

लल्ला चुप रहा।

कदम ने आकर कहा, 'चलो छोटी मा बुलाती है !'

अमूल्य अपने पिता से और सट गया और बोला, 'बाबूजी, चलकर तुम्ही पहुँचा दो। चलो न !'

यादव को ताज्जुब हुआ। बोले, 'मैं क्यो पहुँचा दूँ ? क्या बात है कदम ?'

कदम ने सारा किस्सा सुना दिया।

यादव समझ गये कि कलह के लिए काफी मसाला जुटा हुआ है। एक की आज्ञा है। एक ने मना किया है।

अमूल्य को साथ लेकर यादव ने छोटी बहू के कमरे के बाहर जा कर पुकारा, 'बहूरानी, 'इस बार माफ कर दो। कह रहा है कि अब ऐसा कभी न करेगा।'

उसी रात को खाना खाते समय बिन्दो ने कहा, मैं तुम्हारे ऊपर कोई गुस्सा तो कर नही रही हूँ। लेकिन अब मैं यहा नही रह सकती। नही तो लल्ला एकदम बिगड जाएगा बह जाएगा। मैं अगर मना करती तो बात थी पर मैं तभी से यही सोच रही हूँ कि मना कर देने पर भी उसकी ऐसी हिम्मत कैसे पडी। फिर शरारत तो देखो कि मेरे पास भी नही आया तुमसे पूछा और घर आने पर जब जाना कि मैं बुला रही हूँ तो पहुँच गया जेठ जी के पास। आया भी तो उन्हें साथ लेकर। नही नही, जीजी, अभी तक इसमे यह सब आदतें नही थी। और अब चाहे मुझे कलकत्ता मे मकान किराए पर लेकर

रहना पडे पर एक ही लडका है उसे कसे बिगडने दू ? बिगड गया तो जिंदगी भर आंसू बहाना पडेगा।

अन्नपूर्णा रुँवासी होकर बोली, 'जब तुम्ही सब चली जाओगी तो मैं अकेली कसे रहूँगी।'

सो तुम जानो। मैं कह चुकी। क्योंकि यह नरेन्द्र काफी खतरनाक लडका है।'

'क्या नरेन्द्र ने क्या किया ? लेकिन क्या कभी सोचा है कि अगर ये दानो सगे भाई होते तो क्या होता ?'

'तो आज ही उसके हाथ पाँव बँधवाकर जल बिछूटी लगवाकर घर से निकलवा देती। और कुछ भी हो जीजी, तुम इन लोगों का छोड दो।'

अन्नपूर्णा को बुरा लगा। बोली, 'छोटी बहू ? क्या छाडना या न छाडना अपने हाथ म है जो उन्ह यहाँ लाये हैं, उनसे जाकर कह न। मुझे क्यो कहती ह ?'

'तो जेठजी से यह सब कसे कहू ?'

जैसे सभी बातें कहती है, यह भी कह।'

खाने पर स हाथ रोककर बिन्दो ने कहा, 'देखो जीजी, मुझे बच्ची मत समझो। मेरी भी सत्ताइस अट्ठाइस की उमर है। यह घर के रिश्तेदारो की बात मैं कह रही हू। तुम्हारे रहते मैं यह सब भला जठजी से कसे कह सकती हूँ ? वे नाराज होंगे तो ?

तुमसे ता सिफ नाराज होगे पर अगर मैं कहूँ तो शायद जन्म भर मेरा मुँह ही न देखें। हम लोग फिर भी दूसरे ही है और वे दोनो तो भाई बहिन ही हैं न। फिर मैं कोई बच्ची नही, बूढी हो गई हूँ। इस छोटी सी बात पर हगामा उठाऊँ तो लोग पागल ही कहगे ?'

बिन्दो ने कुढकर थाली और खिसका दी। अन्नपूर्णा न कहा, हाथ मत समेट कर बैठो। आखिर इस थाली ने क्या अपराध किया है ?'

'मैं खा चुकी।

अन्नपूर्णा को उससे उलझने की हिम्मत न पडी।

जब बिन्दो सोने गई ता बिस्तर पर अमूल्य नही था। आकर उसन जठानी से पूछा लल्ला कहाँ गया ?

आज शायद मेरे बिस्तरे पर सो गया है। जाकर उठालो।

नही रहने दो।' कहकर मुँह फुलाए चली गई।

फिर आधीरात गए अन्नपूर्णा की आवाज सुनकर बिन्दो जाग गई।

'क्या है जीजी ?'

'अरे, दरवाजा खोलकर अपने लल्ला को सम्हाल। इसकी शैतानी मेरे बस की नही है।'

फिर जैसे ही बिन्दो ने दरवाजा खोला कि अमूल्य को साथ लेकर भीतर घुसते हुये अन्नपूर्णा ने कहा, अरे छोटी बहू, मैंने तो ऐसा लडका आज तक नही देखा। रात को दो बज रहे हैं पर इसने तो पलक भी नही झपाने दी। कभी इसे मच्छर काटते ह, कभी प्यास लगती है कभी गरमी लगती है। पखा कहा तक झलूँ। फिर दिनभर की गृहस्थी मे मैं थक जाती हूँ रात को बिना सोए मैं नही रह सकती।'

बिन्दो ने हँसकर हाथ बढाया ही था लल्ला उसकी गोद म जैसे समा गया और क्षणभर मे छाती पर सिर रखकर सो गया। तभी अपने बिस्तर पर से माधव यश के स्वर मे पुकार उठा, 'कहो भाभी! शौक पूरा हो गया ?

यह मेरा शौक नही था लाला जी। वह तो खुद ही अपनी माँ से डरकर वहा घुसा था और मुझे सबक भी सिखा गया। कितने लज्जा की बात है कि कहता था कि तेरे पास सोने मे शरम लगती है।

सुनकर तीना हँसने लगे। हँसती हुई अन्नपूर्णा भी चली गई। उसे बहुत नीद आ रही थी।

इसके लगभग दस मिनट बाद की बात है। बिन्दो के माता पिता तीर्थ यात्रा पर जा रहे थे। इसीलिए जाने के पहले भेंट करने के लिए लडकी को बुलाने को पालकी भेजी थी। जिठानी की आज्ञा भी मिल गई थी। बिन्दो अमूल्य से छिपकर तीन चार दिनो को नैहर जाने की तैयारी कर रही थी। तभी स्कूल की तैयारी मे बगल मे किताबें दबाये अमूल्य आ गया। थोडी देर पहले वह रास्ते के किनारे पालकी रखी देख आया था। अचानक उसकी नजर जब छोटी माँ के पावो पर पडी तो वह ठिठक गया। बोला, 'छोटी माँ, यह तुमने पाँवो मे महावर क्यो लगाई है ?'

अन्नपूर्णा वही थी। हँस पडी।

बिन्दो ने टालना चाहा, 'आज लगाया जाता है।'

'फिर इतने गहने क्यो पहने है ?'

हँसती हुई अन्नपूर्णा कमरे से बाहर चली गई। बिन्दो को भी हँसी आ

रही थी। अपने को रोककर उसने कहा, 'अभी तो तेरी बहू के आकर पहनने मे बहुत देरी है। तो क्या हम अभी न पहनें ? जा जा, तू स्कूल जा।

अमूल्य कुछ-कुछ समझ रहा था बोला, 'जीजी इतना क्या हँस रही हैं ? तुम भी कही जा रही हो ? मैं तो आज स्कूल न जाऊँगा ?'

'तो क्या तेरी आज्ञा लेकर जाना पडेगा।'

अच्छा तो मैं हूँ।'

और उसके जाते ही अन्नपूर्णा ने आकर कहा, 'मैं नही समझती थी कि वह इतनी आसानी से स्कूल चला जाएगा। लेकिन कितना होशियार है जो पूछता है महावर क्यो लगाई है ? इतने गहने क्या पहने है ? अब भी मैं कहती हूँ कि अपने साथ लिए जा। नही तो स्कूल से आकर तुझे न देखकर वह बडा उपद्रव करेगा।'

'तो क्या जीजी तुम समझती हो कि वह स्कूल गया होगा। कदापि नही। यही कही छिपा बैठा होगा। देखना ठीक मौके पर प्रकट हो जाएगा।'

और बिन्दो की बात ठीक ही निकली। वह सचमुच छिपा हुआ था। अन्नपूर्णा के पाँव छूकर बिन्दो पालकी पर चढने जा रही थी कि जाने कहाँ से अमूल्य आ गया और बिन्दो का पल्ला पकड कर खडा हो गया। दोनो ही देवरानी जेठानी हँसने लगी।

'अब जाते समय मार पीट करोगी क्या ? साथ ही लिए जा ?

'इसे साथ ले जाकर वहाँ मैं एक कदम भी नही हिल सकूँगी। यह तो बडी मुश्किल हुई।

जैसा किया है वैसा भोगो। क्या लल्ला क्या मेरे पास दो दिन भी नही रह सकता ?

लल्ला ने जिद पकडकर कहा, 'नही, नही, मैं तुम्हारे पास नही रहूँगा। मैं जाऊँगा। और वह जाकर पालकी पर बैठ गया।

८

बिन्दो नैहर से लौट आई।

उसके करीब दस दिन बाद, एक दिन दोपहर को अन्नपूर्णा ने उसके कमरे मे आकर पुकारा, 'छोटी बहू।'

उस समय बिन्दो अपने सामने बहुत ढेर से कपडो को फैलाये बैठी थी।

ने पूछा, 'धोबी आया है क्या ?'

इस पर भी बिन्दो न बोली तो घबराकर अन्नपूर्णा ने पूछा।

'तुझे क्या हुआ है र?'

बिन्दो ने अपने हाथ मे लिए हुए सिगरेट के जले हुये टुकडो, को दिखाकर कहा, 'देखो न, लल्ला के कमीज की जेब मे यह निकले हैं।'

अन्नपूर्णा देखकर स्तब्ध रह गई।

एकाएक बिन्दो ने रोकर कहा, 'जीजी मैं तुम्हारे पाँव पडती हूँ। उन लोगो को यहाँ से विदा कर दो। और नही तो हम लोगो को ही कही और भेज दो।'

अन्नपूर्णा भला क्या जवाब देती। वह चुपचाप खडी रही फिर वसे ही चली गई।

तीसरे पहर अमूल्य स्कूल से लौटा और नाश्ता करके फिर खेलने चला गया। बिन्दो ने तब तो उससे कुछ न कहा। तभी भैरो नौकर ने आकर शिकायत की कि बिना कसूर ही नरेन्द्र न उस चाटा मारा है।

बिन्दो जैसे ही खीज गई बोली, 'जाकर जीजी से कहो न।'

तभी माधव कचहरी से लौटे और कपडे बदलते हुए कुछ मजाक के स्वर मे बोले पर तभी फटकार सुनकर चुप हो गये। भविष्य मे बरसने के लिए कितने काले बादल मडरा रह थे यह बात घर मे सिफ अन्नपूर्णा ही जानती थी। घबराहट से जसे वह मन ही मन घबरा रही थी। तभी अकेले मे मौका पाकर बिन्दो का हाथ पकडकर उसने बडे विनीत कण्ठ से कहा, 'चाहे जो भी हो। है तो वह तेरा ही लडका न! इस बार उसे माफ कर दे। और चाहे अकेले मे बुलाकर डाँट फटकार दे।'

बिन्दो बहुत भरी थी। एकाएक बोल उठी, 'यह तो मैं भी जानती हूँ और तू भी जानती है कि वह मेरा लडका नही है तो बेकार बात बढाने से क्या फायदा?'

अन्नपूर्णा ने उसी तरह कहा, 'नही, नही, तू ही उसकी माँ है। मैंने तो तुझे ही दे दिया है!'

हाँ जब छोटा था, खिलाया, पिलाया अब बडा हो गया है! अब अपना लडका तुम्ही ले लो। मैं बाज आई।' कहकर बिन्दो चली गई।

रात को रोनी सूरत बनाए अमूल्य अन्नपूर्णा के पास सोने गया।

अन्नपूर्णा भीतर की बात जानती थी फुसलाकर बोली, 'यहाँ क्यो आया? जा यहाँ से! चला जा। मैं कहती हूँ।'

अमूल्य न मुडकर देखा। यादव भी सो रहे थ। बिना कुछ बोले ही वह वहाँ से चला गया।

सवेरे जब कदम रसोईघर मे जूठे बरतन उठाने गई तो देखा कि लकडी और कण्डो के पास अमूल्य सो रहा था। भागकर वह गई और बिन्दो को उठा लाई। अन्नपूर्णा भी आकर पास ही खडी हो गई। देखते ही तीखी आवाज मैं बिन्दो ने कहा, 'लगता है रात को जिठानी जी न दुत्कार दिया होगा क्योकि इसक रहने से उनकी नीद मे बाधा पडती न !'

लडके को इस तरह देखकर अन्नपूर्णा का दिल रो रहा था। आँखो मे आँसू छलक आए लेकिन बिन्दो की इस प्रकार की भत्सना सुनकर बोली, 'अपनी गलती दूसरे के सिर लगाना ही तो तू जानती है।

बिन्दो जब ललना को उठाने आगे बढी तो देखा कि उसकी देह जल रही थी। बुखार चढा था। बोली, 'क्वार, कार्तिक की रात मे ओस मे रहने से बुखार तो आएगा ही।

अन्नपूर्णा भी व्याकुल हो उठी क्या बुखार आ गया ह ? देखूँ तो।'

बिन्दो ने उसके हाथ को झटका दे दिया 'अब देखन की जरूरत नही है।'

कहकर सात बच्चे को गोद मे उठाकर वह अन्नपूर्णा पर क्रुद्ध विषली नजर फेंकती हुई चली गई।

अमूल्य तो पाच छ दिनो मे ही अच्छा हो गया। लेकिन बिन्दो जिठानी के अपराध को अपने मन स न निकाल सकी। वह उससे अब अच्छी तरह बोलती भी नही।

अन्नपूर्णा सब समझती थी पर चुप ही बनी रही। इस वह अन्याय समझती थी कि सबो के सामने ही बिन्दो न सारा दोष उसी पर लगाया भला वह कैस भूलती। इसी बात को एक दिन जान किस प्रसग म वह एलाकेशी से कह बैठी 'यह तो छोटी बहू के कारण ही उस बुखार आया था। यह तो कहो कि तकदीर अच्छी थी कि बच गया मरा नही।'

और यह बात बिन्दो तक पहुँचा देन मे एलोकेशी न तनिक भी देरी न की। बिन्दो ने सब बहुत गौर से सुना पर कहा कुछ नहीं। एलाकेशी के अलावा भी कोई न जान सका कि यह बात बिन्दो को मालूम है। इस बात से बस एक बात हुई कि बिन्दो ने जिठानी स बोलचाल भी बन्द कर दी।

कई दिन स नए मकान मे घर का सामान पहुँचाया जा रहा था। कब सबेरे नय मकान म जाना होगा। उस समय माधव किसी मुकदमे के काम से

बाहर गय थे और यादव बच्चो को लेकर नए मकान पर थे कि इस पुराने मकान म एक भयङ्कर घटना हो गई। शाम का मास्टर पढाने आये तो उन्ह बुलवाकर बिदो न कहा, 'कि कल से व नए मकान मे पढाने के लिए आवें।'

जा आना कहकर मास्टर जाने लगा तो अचानक जाने क्या सोचकर बिदो पूछ बठी, 'कहिए आपका शिष्य पढता लिखता ठीक है न ?'

पढने मे तो सदा तेज रहा है। हर साल ही तो फस्ट आता है।'

मो तो मालूम है पर आजकल यह चुरुट पीना कैसे सीख गया ?'

'क्या ? चुरुट पीना सीख गया ?' मास्टर को बडा ताज्जुब था पर दूसर ही क्षण जैसे उसे कुछ याद आया तो बोला, 'कोई आश्चय की बात नही लडक देखा दखी सभी बुरी बातें सीख जाते हैं।'

'किसकी देखा देखी सीखा है ?

मास्टर चुप ही रहा।

बिदो न कहा, ता उसके बाप से यह भी बता दीजिएगा।'

मास्टर न सिर हिलाया फिर बोला, हाँ याद आया। अभी अभी पाँच छ दिन ही ता हुए। उस दिन स्कूल के रास्ते पर उस उडिया माली के बाग मे घुसकर उसकी सब बच्चे फल ताडकर पड पौध भी उखाडा और उसे भी खूब मारा पीटा। बडा बखेडा खडा कर दिया था।'

फिर।'

'माली न हैडमास्टर साहब से जाकर शिकायत की काफी शारगुल किया ता उन्होंने लडका पर दस रुपया जुरमाना करके और उसे देकर शान्त किया।'

'क्या लल्ला भी था ? उसे रुपय कहा से मिले ?'

यह तो नही मालूम, पर वह भी था। आपके नरेन्द्र महाशय भी थ और स्कूल के चार पाच शरारती लडके। हैडमास्टर साहब न ही बताया था।'

'क्या रुपय भी जमा हा गए ?'

'जी हा।

'अच्छा आप जाइए। कहकर बिदो गम्भीर मुद्रा म ही बठी रही।

जब मास्टर चला गया ता स्वत ही बाली, 'मुझस छिपाकर रुपये भी दे दिए! इस घर म इतनी हिम्मत किसकी हुई।

एक तो वह मन ही मन दु खी थी फिर जेठानी स बालचाल भी बन्द थी। फिर इस समाचार न ता जसे उसके दिमाग का ही बकार कर दिया।

सीधे वह रसोईघर मे गई। अन्नपूणा तरकारी छौंक रही थी। मुँह उठा

कर उसने देखा कि छोटी बहू के चेहरे पर घनघोर घटा छाई थी। बिन्दा ने सीधा प्रश्न किया 'जीजी क्या इन दिनों तुमने लल्ला को रुपये दिये थे?'

अन्नपूर्णा तो पहले से ही सशकित थी। डर से उसकी जुबान रुक गई। फिर भी सभलकर बोली, 'किसने कहा?'

यह बात नही है बात यह है कि उसने क्या कारण बताकर लिया और तुमने क्या समझकर दिया?'

अन्नपूर्णा चुप ही रही।

बिन्दो ने उबलते हुए कहा, 'तुम नही चाहती कि मैं उस पर कोई कडाई करूँ इसीलिए न दे दिया है? मुझ से छिपाकर! लल्ला और चाहे जो कर पर शायद वह बडा के आगे झूठ न बोलेगा। यह सच है कि नही, कि तुमने जान बूझ कर दिए हैं?'

अन्नपूर्णा ने धीरे से अपराधिन की तरह कहा, हाँ सच है, पर इस बार उसे माफ कर दे बहिन मैं माफी मागती हूँ।'

बिन्दो के कलेजे मे तो आग धधक रही थी न। उसने कहा, 'सिर्फ इस बार क्यो माफ करूँ? आज से सदा के लिए ही माफ कर दूगी। आज के बाद फिर कभी न कहूँगी। बल्कि कोई भी बात न करूँगी। हा मुझसे यह नहीं सहा जाता कि वह थोडा थोडा करके आँखो के सामने ही जहन्नुम मे चला जाय। इससे अच्छा होता कि वह पूरी तरह ही चला जाय। लेकिन तुम्हारी इतनी हिम्मत कैसे पडी?'

आखिरी बात बिन्दा ने जरा कडाई से कही थी। फिर भी अन्नपूर्णा ने कोई जवाब न दिया। मगर बिन्दो जितना ही ज्यादा बोलती जाती थी उतना ही उसका भी गुस्सा भडकता जाता था। बिन्दो ने अन्त मे बहुत बिगड कर कहा, हर बात मे तुम अबोध बनकर कह देती हो कि अबकी बार माफकर दो। लेकिन उसमे उसका इतना दोष नही है जितना तुम्हारा। मैं तुम्हे कदापि माफ नही कर सकती।'

घर के नौकर चाकर भी छिपकर यह वार्तालाप सुन रहे थे।

जब अन्नपूर्णा की सहनशक्ति के बाहर हो गया तो वह चिल्ला पडी, 'तो क्या करोगी? क्या फाँसी लगा दोगी।'

आग मे जैसे घी पड गया। बिन्दो तो बारूद के ढेर मे जैसे आग लग गई हो। एकाएक जल कर बोली,

'तुम्हारी यही ठीक सजा होगी।'

'हा, यही अपराध किया है न कि अपने लड़के को दो रुपये दे दिए ?' •

बात कहां से कहां पहुंच गई। बिंदो जैसे असली बात भूल गई और वह कह बैठी, 'वो भी तुम क्यों दोगी ? या बरबाद करने को रुपये कहां से आए ?

क्या तू रुपये बरबाद नहीं करती ?

मैं बरबाद करती हूँ तो अपने ही रुपये। तुम किनके रुपये फूंकती हो जरा यह तो बताओ ?

अब अन्नपूर्णा अपना क्रोध न रोक सकी। वह गरीब घराने की लड़की थी इसलिए उसने समझाया कि बिंदो का इशारा उसी तरफ है। एकदम से उठ खड़ी हुई और बोली, 'जानती हूँ कि तू बहुत धनी रईस की बेटी है पर इसी बात पर इतना घमंड न कर कि किसी के पास दो रुपये भी न होंगे।

मैं घमण्ड नहीं करती। पर तुम भी सोचकर देखो कि तुम जो एक पैसा भी खर्च करती हो सो किसका है।

अन्नपूर्णा सुनकर चीख उठी, किसका पैसा है ? तेरे मुंह में जो भी आता है तू वह डालती है ! जा दूर चली जा मेरी आंखों के सामने से।'

दूर तो मैं रात बीतते ही चली जाऊँगी। लेकिन यह किसका पैसा खर्च करती हो सो शायद समझ में नहीं आता। किसकी कमाई खाती पहनती हो, क्या यह भी नहीं जानती ?

इतना कह तो गई बिन्दो पर कह चुकने पर उसे ध्यान आया और वह स्तब्ध रह गई।

अन्नपूर्णा का चेहरा भी अपमान से फक था। छोटी बहू के चेहरे को गौर से देखकर उसने एकाएक कहा, 'हां, तेरे पति की कमाई खाती हूँ। मैं तुम्हारी दासी व बांदी हूँ। मेरे पति तेरे ही नौकर चाकर हैं। यही कहना चाहती है न ! लेकिन यह अपने मन की बात तूने इतने दिनों क्यों छिपा रखी ?

अन्नपूर्णा के ओंठ कांप रहे थे। उसने अपने दांतों से ओठ को दबाकर रोकना चाहा फिर कहा, 'छोटी बहू, तब तू कहां थी जब उन्होंने छोटे भाई को पढ़ाने के लिए दो धोती एक साथ खरीदकर भी न पहनी ? तब तू कहां थी जब घर में आग लग जाने पर वृक्ष के नीचे खाना पकाकर उन्होंने इस पैतृक मकान को बनवाया ?

कहते कहते अन्नपूर्णा की आँखें आंसू टपकाने लगीं। अपने आँचल से उन्हें

सुखाकर वह बोली, 'उन्ह अगर तुम लागो के मन का भेद मालूम होता ता व कभी भी इस तरह अफीम के नशे म आखें मूँदकर हुक्का पीते पडे न रहते। वे ऐसे आदमी नही ह। उन्ह पहचानते हैं तर पति या पहचानते हैं स्वग के देवता। आज मेरा बहाना लेकर तून उनका अपमान किया है।

क्षणभर पति के गव स अन्नपूर्णा जैसी फूलती रही फिर बोली 'अच्छा ही किया जो सतक कर दिया। मालूम है। मनी ने आत्महत्या की थी! मैं भी कसम खाती हूँ कि किसी के घर रसोई पानी करके पट पालूँगी पर अब तेरा अन्न न छुऊँगी। तून किया भी क्या—उनका अपमान?'

ठीक तभी यादव आगन म आकर खड हुए और पुकारा 'बडी बहू?

पति की आवाज सुनकर अन्नपूर्णा का आत्माभिमान तूफान से बदलकर भयानक समुद्र की तरह उन्मत्त हो गया। बाहर आकर वह चिल्लाकर बोली, 'छि छि जो आदमी पत्नी और सतान का पट भी नही पाल सकता उसको गले म फासी लगाकर मर जाने के लिए क्या रस्सी का टुकडा भी नही जुटता?

यादव की कुछ समय म न आया। बोल क्या हुआ?

अभी भला क्या हुआ है? छोटी बहू न आज साफ साफ कह दिया कि मैं उसकी दासी हूँ और तुम उनके नौकर हो।

कमर के भीतर खडी बिन्दो न दाता से जीभ दबाकर काना म उँगली डाल ली।

अन्नपूर्णा रो रो कर कह रही थी तुम्हारे जीते जी ही आज मुझे यह बात सुननी पडी है कि मुझे किसी को एक पसा भी दे देने का हक नही ह। आज तुम्हारे सामन मैं यह कसम खाती हूँ कि इन लागो का अन्न खाने के पहले मुझे अपनी सतान का सिर खाना पडेगा!

बिन्दा ने यह प्रतिज्ञा स्पष्ट सुनी। उसन धीरे स कहा 'जीजी, यह क्या किया तुमन?

इतना कहकर वही पर गरदन झुकाकर आज पूरे बारह बरस बाद अचानक बिंदो फिर से मूर्छित होकर गिर पडी।

सात

अन्नपूर्णा और अमूल्य के सिवा नए मकान म सभी आगए थे। बिन्दो की की लडकी नाती-नातिनी मायके स मा बाप नौकर चाकर के आजाने

से घर तो भर गया था। लेकिन बिंदो ही जरा उदास दिखती थी। लेकिन शीघ्र ही उसका मन समझ गया था कि उसे सन्देह न करना चाहिए कि गुस्सा शान्त होते ही अन्नपूर्णा आ जाएगी। बिंदो पाठ पूजा के उपरान्त लोगों को खिलाने पिलाने में लग गई।

बिंदो के पिता ने पूछा, बेटी, 'तेरा लल्ला नहीं दिखता ?'

छोटा सा उत्तर था बिंदो का, 'वह उसी घर में है।'

'शायद तेरी जिठानी नहीं आई !'

'नहीं।

'ठीक भी है ! सभी चले आवें तो उस मकान को कौन सम्हालेगा ? पैतृक मकान बंद भी तो नहीं रखा जा सकता ?

बिंदो चुपचाप अपने काम में फिर व्यस्त हो गई।

यादव राज शाम को नियमपूर्वक एक बार आकर बाहर बैठ जाते और बातचीत करके तथा हाल चाल पूछकर चले जाते थे। पर कभी वह भीतर न जाते। गृह प्रवेश के एक दिन पूर्व, रात में, एक बार भीतर जाकर एलोकेशी का बुलाकर हाल चाल पूछ रहे थे। बिन्दो को पता लगा तो जाकर ओट में छिपकर सब सुनने लगी। पिता से बढ़कर इस जेठ ने उसे बचपन से आज तक अखंड स्नेह व प्यार दिया था। कितने स्नेह से वह पुकारते थे। यादव उसे सदा ही 'बहूरानी' कहकर पुकारते थे। कभी भूलकर भी उन्होंने 'छोटी बहू' नहीं कहा। अपनी जेठानी में झगड़ करके जेठ जी से उसने जिठानी की जाने कितनी ही शिकायतें की हैं और कभी भी उसकी शिकायत को महत्वहीन नहीं समझा गया। आज उनके सामने लज्जा से बिंदो की आवाज ही रुक गई। यादव जब चले गए तो एक सूने कमरे में जाकर बिन्दो अपने मुँह में आँचल ठूँसकर फूट-फूट कर रोने लगी। घर आदमियों से भरा था, कहीं कोई सुन न ले !

दूसरे दिन सवेरे बिंदो ने अपने पति को बुलाकर कहा, देर हो रही है। पुरोहित जी बैठे हैं और अभी तक जेठ जी नहीं आए।

माधव ने प्रश्न किया, 'वे क्यों आवेंगे ?'

बिन्दो को आश्चर्य हुआ, 'वे क्यों आवेंगे ? उनके अलावा यह सब और कौन करेगा ?

माधव बोला, 'मैं या प्रियनाथ जीजाजी ! भइया न आ सकेंगे।

बिंदो ने नाराज होकर कहा, 'न आ सकेंगे ! भला यह कहने से कैसे काम

चलगा ? उनके रहत हुए घर म किसी को और यह सब करन का अधिकार कैसे होगा ? नहो नही यह नहीं हो सकता। उनके सिवा म और किसी को कुछ न करन दूँगी।

तो सब या ही पडा रहन दो। अभी वे घर नही हैं। काम पर गए हैं।'

तो यह सब बडी मालकिन की ही कारस्तानी है। ता फिर शायद व भी न आवें। कहती हुई रोनी सूरत बनाए बिन्दो चली गई। उसके लिए एक ही क्षण म जैसे, यह पूजापाठ, उत्सव खाना पीना सब बकार हो गया। तीन दिना से हर क्षण वह यही साचती थी कि आज जेठ जी आवेंगे जीजी आवेंगी, लल्ला आएगा। उसके अलावा यह बात भला और कौन जानता था कि आज के उत्सव पर ही उसका सब कुछ निभर है। पति की इस बात स जैस सब कुछ मिट गया और उत्सव का यह सब परिश्रम पत्थर की तरह छाती पर भार बन गया था।

तभी एलोकेशी ने आकर कहा छोटी बहू, जरा भण्डार की चाबी देना हलवाई सन्देश लेकर आया है।

'बीबी जी अभी वही रखव, लो फिर बाद म दखा जायगा।'

कहाँ रखवाऊँ ? कौवे बिल्ली मुँह डालेंगे न !

तो फिकवा दो। कहकर चिढ़ा सी बिंदो वहाँ से हट गई।

तभी बुआ जी ने आकर पूछा क्या बिन्दो कितना आटा साना जाए जरा एक बार अन्दाजा बता दो न।

मैं क्या जानूँ। तुम लोग इतनी बडी बूढी हो, क्या तुम्हे अन्दाज नही ?

बुआ जी को यह बुरा लगा। बोली इसकी बात सुनो ! मुझे क्या मालूम कि कितने आदमी इस समय खाएँगे ?

तो उनसे ही जाकर पूछ लो न ! यह सब काम जीजी करती थी। लल्ला के जनेऊ पर तीन दिन तक शहर के सब लोगा ने खाया पिया था पर उन्होन एक बार भी नही पूछा कि छोटी बहू फलाना काम है या कुछ दख जाकर। कहती हुई बिन्दो दूसरे कमरे मे चली गई। तभी कदम न आकर पूछा, जीजी जमाईबाबू पूछत है कि पूजा के कपडे लत्ते ?

उसकी बात पूरी न हो पाई थी कि बिंदो चीख उठी, तुम लोग मुझे ही खा डालो। खालो मुझे या मेरी आखो से दूर हो जाओ।

घबरा कर कदम भाग गई।

थोडी देर बाद माधव आया और कई बार प्रश्न पूछा, 'अरे कहा हो सुनती हा !'

पास आकर खीझी सी विंदो बोली 'मुझसे कुछ नही होता । मैं कुछ नही कर सकती । मैं कुछ नही करूँगी ।

माधव भी आश्चय से उसका मुँह ताकते रहे ।

उसी गुस्से मे बिन्दो ने कहा, 'मुझे क्या करोग ? क्या फासी दोगे ? कुछ न बन तो वही करो ।'

कहती हुई रोती हुई बिन्दो वहा से चली गई । इधर दिन भी चढने लगा था ।

प्रयाजन हीन बिना काम के ही छटपटाती हुई इधर उधर भागती रही बिन्दो और सब पर बिगडती रही । बिना बात ही लोगो की गलतियाँ पकड पकड कर बिगडती रही । किसी ने जल्दबाजी मे अगर रास्त मे कही बरतन रख दिय हा तो वह उसे आँगन मे फेंक देती । किसी की सूखती धोती अगर छू गई तो उसे सिखा देने का इतना ही काफी है । जो भी सामने पडता था डरकर भाग जाता था ।

अन्त मे पुरोहित जी खुद भीतर आए और तनिक रज होकर कहा, 'बडी ही परशानी है । कोई भी इन्तजाम अभी तक पूरा नही हो सका है और इतनी देर भी हो रही है !'

उसी उलझन मे जरा मुँह घुमाकर बिन्दो ने कहा, 'पण्डितजी काम काज के घर म थोडी बहुत देर अबर तो होती ही है ।' कहकर रास्ते मे पडे एक बरतन का पाव मे ही हटाती हुई वह कमरे म जाकर जमीन पर ही निर्जीव सी पड गई । और कोई दस मिनट ही बीते होगे कि उसके कानो मे कोई चिरपरिचित स्वर सुनाई पडा । एकाएक वह उठ खडी हुई और जा बाहर झाककर देखा तो पाया कि अन्नपूर्णा आकर आगन मे खडी हो गई थी । दु ख और अभिमान से मिश्रित रुलाई को उसने आखें, आँचल से सुखाकर रोका और गल म आँचल लपटकर और हाथ जोडकर आकर जिठानी से बोली 'और कितनी दुश्मनी निभाओगी जीजी ? देखो न, ग्यारह बज गए और कोई काम अभी तक नही हुआ । मेरे जहर खाने से ही अगर तुम्हे शान्ति मिले तो फिर घर जाकर एक टोकरी मे वही भेज दो । कहत हुए उसने चाभी का गुच्छा

जिठानी के पावा पर फेंक दिया और वापस अपने कमरे म चली गई। भीतर से दरवाजा ब द कर लिया और जमीन पर लोटकर रोने लगी।

अ नपूर्णा ने चुपचाप चाभी का गुच्छा उठाया, कमरे का दरवाजा खोला और भण्डार घर म चली गई।

तीसरे पहर तक लोगा का आना जाना व खाने पीन की भीड भी समाप्त हो गयी थी। फिर भी जान किस बेचनी के कारण बिन्दो वार वार भीतर बाहर ही आ जा रही थी।

तभी ही भागता हुआ नौकर भैरो आया और चिल्लाया लल्ला वावू तो स्कूल म नही हैं।

सुनत ही बिन्दा की आखा से आग बरसने लगी। चिल्लाकर डाट के स्वर मे वह बोली नालायक है तो। इतनी देर तक भला कोई लडका स्कूल म रहता है! जाकर उस घर म तो देख!

भैरो ने कहा, 'उस घर म भी तो नही है देख लिया है।'

'तो कही नीचो के साथ गुल्ली डण्ड खेल रहा होगा। अब भला उसे किसका डर होगा! इस खेल मे जब एकाद आँख फूटेगी तभी वडी मालकिन का जी ठण्डा होगा। जा भागकर जा जहाँ भी हो पकडकर ले आ।

अ नपूर्णा भण्डार घर की चौखट पर और औरता से वातें कर रही थी। बिन्दो की वात उसने पूरी तरह सुनी।

फिर एक घ टे वाद आकर भैरा ने कहा लल्ला वावू घर म ही है। पर आ नही रह है।'

आता क्या नही? क्या कहा कि मैं बुला रही हूँ?'

कहा था। पर उनका क्या दाप! जसी माँ है वसा ही ता लडका भी होगा।

और काफी रात गए जव अ नपूणा अपन घर जान लगी तो माधव भी उसे पहुँचान जान को तयार हो गए। तभी बिन्दो न आकर पति का सुनाकर वडे ही कडे स्वर म कहा, पहुँचान जान का तयार हा गए पर क्या तुम्ह मालूम है कि उ होंने इस घर का पानी तक नही छुआ है?

माधव ने कहा, यह ता तुम्ह मालूम रहन की वात है। जव तुमम कुछ भी नही सध पा रहा था तो खुद जाकर लिवा लाया था सो अव पहुँचान भी जा रहा हूँ।'

हाँ हाँ, मैं समझती हूँ कि तुम भी उसी पक्ष म हो।'

माधव न कहा चलो न भाभी ! देर मत करो।

अन्नपूर्णा ने कदम बढाया ही था कि बिन्दो ने कडककर कहा वह जो कहावत है सो ठीक ही है कि घर की दुश्मनी ! मुँह म जो भी बात आई सब झूँठी सच्ची कह दी। दाँत पीसकर कसम खाई चार दिन चार रात लडके का मुँह भी न देखने दिया ! भगवान ही कभी इसका न्याय करगे।'

कहकर बिन्दो न किसी तरह मुँह म आचल ठूँसा और रुलाई रोकी और अपन कमरे म जाने के लिए रसोईघर के पास तक जाकर बहोश हो गयी। हल्ला मच गया। घूमकर अन्नपूर्णा न पूछा क्या हुआ ?'

माधव ने देखकर कहा, 'कुछ नही देखने की जरूरत नही चलो।'

इधर देवरानी जेठानी के कलह की चर्चा जरा कम थी लेकिन वह कम कैसे रह सकती थी। दूसरे दिन जब घर की सभी औरतें एक जगह जुटी तो एलोकेशी ने कहा, देवरानी जेठानी का झगडा है यह तो समझ म आता है पर जरा लडके को तो देखो। यह एक बार भी नही आया। छोटी बहू ठीक ही तो कहती है कि जैसी माँ है वैसा ही तो लडका होगा न।' और बहुत लडके देखे हैं, पर बहिन ऐसा दुष्ट लडका कही नही देखा।'

बिन्दो ने एक बार उसकी ओर सूनी निगाहो से देखा फिर शर्म और घृणा से आखें झुका ली। ऐलोकेशी ने एक तीर और मारा, 'छोटी बहू तुम्हें लडका ही तो चाहिए न, हमार नरेन्द्र को ले लो, उसे मैं तुम्हें दिये देती हूँ। मार भी डालो तो वह लडका मुह से एक शब्द भी नही कहेगा। कोई ऐसी वैसी औलाद मैंने कोख म नही रखी।'

बिन्दो चुपचाप बैठी रही बोली नही। बिन्दो की माँ की उमर बीत रही है। वह जमीदार के घर की बेटी है, और जमीदार की बहू भी। अनुभव की वह पक्की है। उन्होंने ही हँसकर जवाब दिया, 'तुम लोग कैसी बातें करती हो ? अमूल्य उसके हाडमास म बस गया है इस तरह तुम लोग उसे सताओ मत ? और झगडा तो अभी दो दिन से हुआ है। इनसे क्या अपना लडका पराया हो जायगा ?'

बिन्दो की आँखें छलछला आइ और उसने वैसे ही मा की ओर देखा।

उसी दिन शाम को बिन्दो ने कदम को बुलाकर कहा, अच्छा कदम, तू ही बता, तू तो वहाँ मौजूद थी न ? मेरा भला क्या कसूर था जो वह इतनी बडी कसम खा बैठी ?'

एकाएक कदम इस विषय का सुनकर घबरा सी गई कि क्या बिंदो ने उसे इसकी आलोचना करने को बुलाया है अत बहुत सकुचाकर वह सिमट सी गई और चुप ही रही। बिन्दो न फिर कहा 'नही नही बताओ, हजार हो फिर भी तुम लोग मुझसे उमर म बडी हो। मुझे तुम्हारी दो बातें सहनी ही चाहिए लेकिन बताओ न क्या मुझसे कोई कसूर हुआ था ?

कदम को गदन हिलाकर कहना ही पडा, नही जीजी कसूर की भला कौन सी बात है ?

बिन्दो बोली 'तो फिर उस घर म जाओ न ! जाकर दो चार बातें बहुत कडी कडी सुना आओ। जब कसूर नही तो मुझे डर किस बात का ?'

कदम न बहुत हिम्मत बटोरकर कहा डर की कोई बात नही जीजी, पर अब बखेडा बढाने की जरूरत ही क्या है ? जो होना था सो होगया।'

'नही नही, कदम तू समझती नही सच्ची बात कह देना हमेशा ठीक रहता है नही तो वह समझेंगे कि सब दोष हमारा ही है उनका कुछ भी नहीं है। निकाल दूगी दूर कर दूगी क्या ये सब उन्होने नही कहा था ? लेकिन मैंने कभी इन बातो पर ध्यान नही दिया। फिर उन्होंने छिपाकर रुपये क्या दिए मुझे बताया क्यो नही ?

कदम ने जान छुडाने के लिए कहा तो फिर कल जाऊँगी आज तो बहुत शाम हो गई है।'

शाम कहा से हुई है ? कदम तू अब मेरी बात बहुत काटने लग गई है। अरे जाडे के दिन है अँधेरा जल्दी होता है। न हो किसी को साथ लिवा कर जा अरे ओ भैरो जरा हवुआ को भेज द कदम के साथ जावेगा।

भैरा न कहा, हबुआ तो बाबूजी की बत्ती साफ कर रहा है।

बिन्दो ने डाँटा 'फिर तून जवाब दिया ?

भैरा तो डाँट सुनते ही भाग गया और कदम को भेजकर बिन्दो इस उस कमरे म घूमती हुई रसोई घर म चली गई जहाँ मिसरानी अकेली थी। एक ओर बैठकर बिन्दो न कहा, अच्छा मिसरानी जी तुम्ही पच बना बताओ सच मुच किसका कसूर ज्यादा था ?

मिसरानी ने आश्चय से पूछा कैसा कसूर बहूजी ?

उस दिन की बात ! क्या कहा था मैंन ? मैंने तो सिफ यही पूछा था कि जीजी ललला को इस बीच म कितने रुपये द दिए हैं ? कौन भला नही कहेगा

कि लडका के हाथ मे रुपये पैसे नही देना चाहिए। और फिर जब मैंने पूछ ही लिया तो यही तो कहने से काम चल जाता कि रो धो रहा था इसी से द दिया। झगडे की कोई बात न थी। इतनी बात ही क्या बढती ? फिर इस पर कसम खाने की बात कहा पैदा होती है ! जहा चार बतन होते है वहा खटपट होती ही है। फिर हम लोग तो एक है फिर भी इतनी बडी कसम क्यो ? घर मे सिफ एक ही लडका है, उसी की कसम ! मैं भी बताए देती हूँ मिसरानी मैं तो इस जन्म मे उसका मुँह नही देखूगी।'

दुश्मन की ओर आँखें उठा लूगी पर उनकी ओर नही।

मिसरानी आदत से ही कम बोलने वाली थी। उसकी समझ मे न आया कि वह क्या कहे इसलिए वह चुप ही रही। बिन्दो की दोनो आखो मे आसू छलछला आए। फिर भी झटपट आखें पोछकर उसने कहा 'ठीक है मिसरानी जी गुस्से मे कौन कसम नही खा बैठता। लेकिन क्या इससे पानी तक का छूना बन्द करता है कोई ? देखो न लडके तक को नही आने दिया, इसे क्या बडप्पन का काम कहेंगे ? हजार माना कि मैं छोटी हूँ, मुझे समझ भी कम है। मानला कि उनके ही पेट की लडकी रहती तो फिर वह क्या करती ? ठीक ही है मैं भी अब कभी उनका नाम मुह पर नही लाऊँगी तुम लोग भी देख लेना।'

इस पर भी मिसरानी चुप रही। बिदो फिर बोली, 'और क्या वही कसम खाना जानती है ! मैं भी जानती हूँ। अगर कल मैं उस घर मे जाकर कहूँ कि कटोरा भर जहर न भिजवाओ तो तुम्हारी वही कसम रही—तब क्या हो ! मैं अभी तो दो चार दिन चुप रहूँगी। देखूगी फिर इसके बाद जाकर के या तो वही कसम दे आऊगी नही तो आप ही जहर का प्याला पीकर कहूँगी कि जीजी ने भेजा था। फिर देखूगी कि लोग उनके नाम पर थूकेंगे या नही फिर रखना कि उनकी अकल कसे ठिकाने आती है !

यह सब सुनकर मिसरानी डर गई धीरे से बोली, 'नही, बहू ऐसा मत सोचो। लडाई झगडा हमेशा नही रहता ! न तो वही तुम्हारे बगैर रह सकती है न लल्ला ही तुम्हारे बिना रह सकता है ! हम लोगो को यही ताज्जुब है कि इतने दिनो से ही वह वहाँ तुम्हारे बिना कम रह रहा है !'

'यही तो कहती हूँ कि उसे जरूर ही डरा धमकाकर वहाँ बद कर रखा होगा। जो लडका कि एक रात भी मेरे बिना न सो सकता था वह भला

पाँच दिन और चार रात कस रहा होगा ! इसी से तो उस औरत का मुँह देखने का जी ही नही करता । मैंने कहा न कि दुश्मन की ओर देखा जा सकता है पर उसकी तरफ नहा ।'

तभी मिसरानी न अपनी कलाई बढाकर उस पर एक काला दाग दिखाते हुए कहा देखो न बहू अभी तक यह दाग साबुत है । उस दिन रात का जब तुम बेहोश हो गई थी तब की बात मालूम तुम्हें नही । लल्ला तुम्हारी छाती पर पड गया और काश कि तुम उसका रोना देखती ! वह ता मरना जीना जानता भी न था । कहन लगा छोटी माँ मर गई । फिर न तो मुन्ने भी तुम पर पानी छोडने दे न हवा करने दे, मैंने उसे उठाना चाहा तो मुझे भी दात काट लिया । बडी बहू ने पकडा तो उन्हें भी काटा, नोचा, आँचल फाड डाला । लोग फिर बीमार को क्या दखते उसी के झझट म पड गए । चार पाच आद मियो ने उसे सम्हाला ।

बिंदो इस तरह एकटक देखती हुई यह सब सुन रही थी जैसे मिसरानी क मुह के एक एक शब्द वह पचा रही हो । फिर एक लम्बी सास खीचकर उठी और अपन कमरे म जाकर दरवाजा बन्द करके लेट रही ।

चार दिन और बीते । बिंदो के पिता माता, बूआ आदि की वापसी के एक दिन पहल मूर्छा से छुटकारा पाकर बिंदो खाट पर लेटी थी । कदम पखा झल रही थी । और कोई नही था । बिंदो न इशारे से उसे और पास बुलाया और धीरे से पूछा 'कदम, क्या जीजी आई है क्या री ?

नही तो ! हम लोग घर मे इतन लोग हैं तब उन्हें क्या कष्ट दिया जाय !'

थोडी देर की चुप्पी के बाद बिंदो ने फिर कहा 'यही तो तुम लागा की गलती है जब अक्ल नही है तो सब जगह अपनी मत लगाया करो । इसी तरह तुम लोग किसी दिन हम मार डालोगी । पूजा के दिन भी तो तुम लाग सब घर म भरी थी ! लेकिन जब तक वह नही आई भला कुछ हो सका था ! कहाँ तुम लोग कहाँ वह ! उनके मुकाबल म रत्ती भर भी तुम लागा म अक्ल नही है !'

तभी बिन्दो की माँ ने आकर कहा 'जमाई बाबू की तो राय है बिन्दो कि तू भी कुछ दिना के लिए हमारे साथ चली चल !'

क्या मरा जाना न जाना सब उन्ही की राय से है ! उनकी राय स क्या होता है ? जब तक मुझे अपने दुश्मन स हुक्म न मिले तब तक कसे जाऊँगी ?'

माँ बात को समझ गइ', बोली, 'क्या तू अपनी जेठानी की बात कह रही है? उनके हुक्म की अब तुझे जरूरत नही है। जब तुम लोग अलग हो तो अब इन्ही की राय काफी है।'

'नही ऐसा नही हो सकता! जब तक जिन्दा हैं, तब तक चाहे जहा भी रह, सब कुछ वही हैं। और चाहे जा करूँ पर उनकी राय के बिना घर छोड़ कर नही जा सकती। जेठजी गुस्सा होंगे न!

और उसी समय पास आती ऐलाकेशी न यह बाते सुन ली और बोली, 'इसम क्या परेशानी है! तुम जाओ। मैं कहती हू न!'

बिन्दो ने कोई उत्तर न दिया तब उसकी मा न कहा, ठीक तो है आदमी भेजकर पुछवा ही न ले!'

बिन्दो को बडा विस्मय हुआ। बोली, आदमी भेजना तो और भी बुरा होगा मा! मैं तो उस समझती हूँ न! मुँह से तो फौरन कहगी कि चली जा लेकिन मन ही मन नाराज होगी। और शायद बाद म चार छ झूठी सच्ची मिलाकर जेठ जी से कहगी। सो माँ, तुम लाग जाओ। मेरा जाना सम्भव न हो सकेगा।'

और जब मकान सूना हो गया तो जस घर उसे खान दौडने लगा। नीचे के एक कमरे मे एलाकेशी रहती है और ऊपर के एक कमरे मे बिंदो बाकी सारे कलम साँय-साँय करत थे। उदास मन घूमती हुई जाकर बिन्दो ऊपर के तिमजल के एक कमरे मे चली गई। सुदूर भविष्य के गभ मे छिपी किसी अज्ञाता पुत्र-वधू के लिए उसन यह कमरा बनवाया था। यहा आकर वह किसी तरह भी अपन आसू न रा सकी। नीचे उतर रही थी कि रास्त मे पति से भेंट हा गई। तत्काल ही बिन्दो बोल उठी, 'क्यो जी, अब कैसे होगा?'

माधव न समय कर पूछ बैठे, 'क्या?

बिन्दो न लम्बी सास खीचकर कहा, कुछ नही, कुछ नहीं, तुम अपने रास्त जाओ।

दूसरे ही दिन सवेरे की बात है। माधव बाहर वाले कमरे म अकेले बैठे काम कर रहे थे कि एकाएक भीतर आकर बिन्दो ने अपनी रुलाई दबात हुए कहा, 'जानते हो? जेठ जी नौकरी करन लग हैं।'

माधव न सिर गडाए हुए ही कहा, जानता हूँ।'

तो क्या यह उनकी नौकरी करने की उमर है?'

माधव ने कागजों में ही निगाह गड़ाए हुए कहा, 'आदमी की उमर और नौकरी से भला क्या संबंध ? नौकरी तो अपने अभाव के लिए करता है कोई।'

'तो उन्हें क्या अभाव है ? क्या कमी है ? हम लोग क्या पराए हैं ? लल्लू तो हमारी देवरानी जेठानी की है पर तुम लाला तो भाई ही हो।'

'हाँ सौतेले भाई हैं कुटुम्बी !'

सुनकर बिन्दा सुन्न रह गई फिर बोली, 'तो क्या तुम भी अपने जीते जी उन्हें नौकरी करने दोगे ?'

अब माधव ने सिर उठाकर बिन्दा को ताका, फिर बहुत ही शान्त स्वर में बोले, 'क्या नहीं करने दूँगा। इस दुनियाँ में सभी अपनी-अपनी अलग-अलग किस्मत लेकर आते हैं। फिर जैसी तकदीर होती है वैसा ही भोगते हैं। क्या मैं इसका उदाहरण नहीं हूँ ? कब माता पिता का देहान्त हुआ, नहीं मालूम। भाभी से ही सुनता था कि हम लोग बहुत गरीब थे। लेकिन कष्ट व दुख की आँच तक मुझे नहीं लगी कभी। जो कहीं से सब मिलता रहा सफेद उजले कपड़े, स्कूल का खर्च, किताबों के पैसे, मेस का खरचा, सब जाने कहाँ से पूरा होता था। फिर वकील होकर कमाई भी अच्छी की फिर तुम भी जाने कहाँ से इतना सारा धन लेकर आ गई। सब दिन बदल गये। कितना अच्छा और पक्का मकान भी बन गया। लेकिन भैया को देखो न ! हमेशा चुपचाप हाड़ तोड़ परिश्रम ही करते रहे। फटे पुराने पैबन्द वाले कपड़े पहनते रहे। जाड़े में भी सूती के अलावा कभी गरम कपड़ा उन्हें नसीब नहीं हुआ। एक वक्त मुट्ठी भर खाकर सिर्फ हम लोगों के लिए ही सभी बातें तो अब याद भी नहीं है। और याद करने की जरूरत भी समझ में नहीं आती। हाँ कुछ दिन थोड़ा सा आराम कर सके थे कि ईश्वर ने सब कुछ मय सूदब्याज के वसूलना शुरू कर दिया है।'

इतना कहकर माधव चुप होकर कोई कागज खोजने लग गए।

बिन्दो हतप्रभ थी। पति की ओर से उसके लिए कितना बड़ा तिरस्कार अतीत दिनों की इस सहज कहानी में छिपा हुआ है। बिन्दो का एक एक रोम इस बात का अनुभव कर रहा था। फिर भी वह सिर गाड़े खड़ी रही।

कागज खोजते हुए माधव अपने आप बोलने लगे, 'और नौकरी भी कैसी राधापुर की कचहरी तक रोज जाने आने में कम से कम पाँच कोस का चक्कर सवेरे चार बजे ही जाकर दिनभर बिना अन्न व पानी के काम करना और

गत को घर आकर दो कौर भोजन ! और इतनी मेहनत की तनग्वाह भी सिफ बारह रुपये महीने !

बिन्दो काप गई क्या कहा दिन भर बिना अन्न पानी के। और सिफ बारह रुपय महीने की तनख्वाह !'

हा सिफ बारह रुपये। उमर भी तो ढल चुकी है, ऊपर से अफीम के नशे की लत। छटाक भर दूध भी ता कभी नही मिला। देखता हूँ कि भगवान तो इतन दिना बाद भइया की वेदना का पुरस्कार दे रहे है।

बिन्दो की आखो से आसू गिरने लगे। फिर ता उसने वह भी किया जा उसने कभी नही किया था। एकाएक झुककर पति का पाव पकड लिया और राकर कहने लगी, 'तुम्हारे पाव छूती हूँ। कुछ तो उपाय करा। वे कमजोर आदमी हैं। इस तरह तो दो दिन भी न ।'

माधव ने किसी तरह अपने आसू रोके और कहा, हम भला क्या कर सकते है ? भाभी ने तो हमारा एक भी अन्न न छूने की कसम खाई है। लेकिन बिना कुछ किए तो उनकी गृहस्थी भी नही चल सकती। यही सोचता हूँ।'

बिन्दो वसे ही रोनी हुई बोली, 'मैं कुछ नही जानती। तुम मेरे देवता हा और वे तुम से भी बडे हैं। छि छि जो बात मन म लाई भी नही जा सकती, वही बात मुँह ।' बिन्दो का आगे गला रुक गया।

'अच्छी बात है कम से-कम भाभी के पास तो जाओ। शायद इसस उन का क्राध कुछ कम हो सके। तुम्हे वही करना चाहिए जिससे व प्रसन्न हो। मेरे पाँव पकडकर हमेशा बैठे रहने से भी कुछ बात न बनेगी।

बिन्दो उसी क्षण पाँव छोडकर उठ खडी हुई। बाली, पाँव पडने की तो मेरी आदत ही नही है। अब मैं समझी कि उस दिन रात का उन्होंने क्या पानी भी यहाँ नहीं पिया। लेकिन तुम सब जानते समझते हुए भी दुश्मन की तरह चुप क्या रह ? मेरा कसूर बढना गया और तुमने बात तक नही बताई ?'

माधव अपने कागजा मे ही उलझने की कोशिश करता रहा। बोला, यह चुप रहन की विद्या भी मैंने भइया से ही सीखी है। भगवान करे, ऐसी ही चुप्पी म एक दिन इस दुनिया से विदा हो जाऊँ ?'

बिन्दो ने आग बात करना उचित न समझा। चुपचाप उस स्थान से उठकर वह कमरे म आई और भीतर से साकल चढा लिया।

माधव उठने को हुये कि तभी बिन्दो पुन आई। उसके नेत्र रक्तिम हा

रहे थ। उसकी दशा देख माधव का हृदय द्रवित हो उठा, बोले 'तुम जाओ एक बार उनके पास। तुम उनके हृदय को नही जानती। एक बार उनके सामने घडी भर हो जाओ बस, सबकुछ ठीक हो जायगा।'

बिंदो ने करुण होकर कहा 'तुम्ही चले जाओ न। मैं लल्ला की सौगन्ध लेकर कहती हूँ ।'

माधव ने बिन्दो के कहने का आशय ताड लिया, शब्दों में स्पष्टता लाते हुए कहा, 'हजार सौगन्ध खाने पर भी मैं भैया से कुछ नही कह सकता। मुझ में इतना साहस नही है कि व जब तक मुझसे कुछ पूछें न तब तक मैं स्वय उनसे कुछ कहूँ।

बिंदो वहाँ से हटी नही।

माधव बोला तुम नही जा सकती?

बिन्दो ने छूटते ही कहा 'नही।' और फिर वह तुरन्त उठकर चली गई।

आठ

मकान के सामने से ही स्कूल का रास्ता है पहले तो कई दिन लल्ला इसी रास्ते से छाते की ओट करके जाया करता था। लेकिन इधर दो दिनो से वह लाल रंग का छाता अब नही दिखलाई पडता। उसकी इन्तजारी में बिन्दो की आखे थक गई थी फिर भी वह अटारी पर आकर ओट में बैठकर सडक की ओर ही टकटकी लगाए बैठी रहती थी। सवेरे नौ दस बजे के आसपास जाने कितने लडके तरह तरह की छतरिया ताने उस रास्ते से निकलते और शाम को छुट्टी होने पर भी उसी रास्ते लौटते मगर बिदो को मन चाही छतरी न दीखी, न वह चाल ही दिखी। शाम को आँखो के आसू पोछते हुए वह नीचे आ गई और एकान्त मे नरेन्द्र को बुलाकर पूछा क्यो नरेन्द्र स्कूल जाने का रास्ता तो यही है न? फिर वह इधर क्या नही जाता?'

नरेन्द्र ने कोई जवाब नही दिया।

बिंदो बोली 'ठीक ही तो है तुम दोनो भाई साथ ही साथ आया जाया करो। यह ठीक भी है।

नरेन्द्र अमूल्य को प्यार तो करता था लेकिन उसके प्यार करने का अपना तरीका था। बहुत धीरे से बोला, 'मामी वह तो शरम के मारे इस रास्ते से नही आता आगे से ही मुड जाता है।'

विंदो ने हँसकर कहा, 'उसे शरम क्यो लगती है ? तू उससे कह दे इधर से ही आया कर।'

नरेन्द्र ने स्वीकृति देते हुए कहा, 'वह इधर से नही आयेगा मामी। जानती हो क्या ?

विंदो ने उत्सुकता प्रकट करते हुए कहा क्यो ?'

नरेन्द्र ने अचकचाते हुए कहा 'तुम नाराज तो न होगी ?'

नही ।'

किसी से कहोगी तो नही ?'

नही।

मेरी मा से भी ?

'विन्दा ने उद्विग्न होकर कहा, 'नही नही, तू बता न मैं किसी से कुछ न कहूँगी।

नरेन्द्र ने अस्फुट शब्दो मे कहा 'हेड मास्टर ने उसके कान ऐंठ दिये थे।'

उसके इस कथन से विंदो के बदन म आग सी लग गई तमककर बोली 'क्या ऐंठे ? बदन पर हाथ लगाने को मैंने मना कर दिया था न ?

नरेन्द्र बोला, उसका क्या कुसूर वह तो नया ठहरा। हबुआ साला ही बदमाश है। उसने मा से आकर कह दिया था और माँ ने मास्टर से कह देने को कहा था। हेड मास्टर ने बस फौरन कान ऐंठ दिये। जानती हो कैसे, मामी ? ऐसे। कानो को पकडते हुए नरेन्द्र ने कहा।

विंदो ने बीच म हस्तक्षेप करते हुए कहा, 'हबुआ ने क्या कहा थ ?'

नरेन्द्र बोला, मुझे क्या मालूम, मामी। टिफिन के समय हबुआ मेरा खाना ले जाता है तो वह दौडा आता है और पूछता है क्या जलपान है जरा मैं भी तो देखू नरेन भया ?' मा ने मुझसे कहा था, 'अमूल्य नजर लगा देता है।'

लल्ला के लिए कोई खाना ले जाता है ?'

नरेन्द्र ने रुँधे स्वर मे कहा, नही, मामी। वे लोग निर्धन है जेब मे भुने हुए चने ले आता है। पेड के नीचे नजर बचाकर खा लेता है।'

विन्दा की आँखो के सामने दुनिया घूमती सी नजर आने लगी। वह जहाँ की तहाँ बैठी रही।

कुछ क्षणो बाद बोली, 'नरेन्द्र तू जा अब।'

रात्रि म काफी कहने-सुनने के बाद विंदो खाने बैठी लेकिन उससे खाया

न गया। अन्त में तबियत ठीक न होने का बहाना कर उसने खाना नहीं खाया। दूसरे दिन भी आलसी सी पड़ी रही। किसी से उसने बात भी नहीं की। कोई युक्ति नहीं सूझी उसे। वह आशंकित हो उठी। उसे लगा कि कहीं बात बढ़ न जाय। तीसरे पहर भोजन के वक्त वह पति के साथ बैठी, पर उसकी नजर कहीं और थी। किसी भाँति वह अपने को एकाग्र नहीं कर पा रही थी।

बत्ती जल रही थी। अधखुली आँखों से माधव चुपचाप कुछ पढ़ रहे थे। बिंदो पलंग पर आकर बैठ गई। माधव ने सिर उठाया और कुछ पूछा, 'क्या है ?'

बिंदो सिर झुकाकर पति के पाँव का नाखून काटने लगी।

पत्नी के मन की बात का अनुभव कर माधव ने करुण स्वर में कहा 'मैं तुम्हारे मन की बात समझता हूँ बिंदु मगर मेरे पास रोने से तो समस्या हल नहीं होगी। उन्हें ही मनाओ।

बिंदो वास्तव में रुँआसी हो उठी थी बोली 'तुम्हीं जाओ।'

'मैं जाऊँ क्या कह रही हो ? भैया मेरी सुनेंगे ?'

'कह तो रही हूँ। कसूर मेरा है कान पकड़ती हूँ। तुम उनसे बातें तो करो।

'न मुझसे न होगा।' कहने के साथ ही माधव ने करवट ली और सोने का उपक्रम करने लगे।

बिंदो काफी देर तक आस लगाये बैठी रही। मगर कोई उत्तर न पा वह चुपचाप उठकर चली गई। पति के इस व्यवहार से उसका हृदय विक्षुब्ध हो उठा। उसे ऐसा लगा जैसे किसी ने मनों पत्थरों का बोझ उसकी छाती पर रख दिया हो। उसे ऐसा अनुभव हुआ कि सभी ने उसे ठुकरा दिया है।

दूसरे दिन सुबह यादव ने छोटी बहू को जाने की अनुमति हेतु एक पत्र लिख भेजा। उस पत्र में बिंदो के पिता के बीमार होने की बात लिखी हुई थी। साथ ही यह भी निर्देश था कि वह जल्दी रवाना हो जाय। नेत्रों में आँसू लिए बिंदो गाड़ी पर सवार हुई। मिसरानी ने गाड़ी के पास पहुँचकर कहा, 'पिताजी के अच्छा होते जल्दी आ जाना बहू जी।'

गाड़ी से उतरकर बिंदो ने मिसरानी के पाँव छुये। मिसरानी सकुचा गई। बिंदो का यह स्वरूप किसी ने कभी नहीं देखा था। अपने को संयमित करते हुए उसने कहा, 'कुछ भी हो मिसरानी जी तुम ब्राह्मणी हो, मुझसे उमर में भी बड़ी हो आशीर्वाद दो कि अब मेरा लौटना न हो। यह मेरी अंतिम यात्रा हो।

प्रत्युत्तर मे वह ब्राह्मणी कुछ कह न सकी । बिन्दा के मलिन एव कृशकाय चेहरे की ओर देखकर वह रो दी ।'

एलावेशी भी वहाँ मौजूद थी । वह भी बोल पड़ी कैसी बातें कर रही हो छोटी बहू ? क्या किसी के माँ-बाप बीमार नही पड़ते ?

बिन्दा चुप रही, मुँह फेरकर उसने आचल मे आँखें पोछ ली । कुछ क्षणो तक चुप रहने के उपरान्त बोली प्रणाम करती हूँ बीबी जी—अच्छा चलू अब ।

बीबी ने कातर होकर कहा, जाओ बहन । मैं तो हूँ ही यहा सबकुछ देख लूंगी ।'

बिन्दो ने फिर कुछ न कहा । कोचवान ने गाडी हाँक दी ।

अन्नपूर्णा ने जब मिसरानी के मुह से यह बातें सुनी तो चुप हो रही ।

इससे पहले लल्ला को छोडकर बिन्दा कभी अकेली मायके नही गई थी । महीने भर से अधिक हो गया था । उसने एक बार भी उसे नही देखा था । उसकी व्यथा को अन्नपूर्णा ने समझा ।

रात मे पिता के पास पडा लल्ला कुछ कह रहा था ।

दिये के उजाले मे कथरी सीती हुई अन्नपूर्णा ने निश्वास ली कि सहसा उसके मुख से निकल पडा, 'राम राम । जाते समय उसने यह क्या कहा कि यह जाना उसका आखिरी जाना है । मा दुर्गा कुशल करे कि वह सकुशल वापस लौट आये ।

पत्नी के मुख से ऐसी बातें सुनकर यादव बोल उठे तुमने अच्छा नही किया बडी बहू, मेरी बहूरानी को परखने की तुमने चेष्टा ही नही की । तुममे से कोई भी उसे पहिचान नही पाया ।'

अन्नपूर्णा ने अपने को सयमित करते हुये कहा वह भी तो एक बार जीजी कहकर पास नही फटकी । अपने लडके को तो वह बलपूर्वक ले जा सकती थी, कौन उसे रोक सकता था ? उस दिन उतनी मेहनत करके घर जा रही थी कि न जाने कितनी कडी बातें सुना डाली ।

यादव ने बीच मे बाधा देते हुए कहा बहूरानी के मन की बातें मैं ही समझता हूँ । यदि तुम माफ नही कर सकती तो बडी ही क्या हुइ ! जैसी तुम हो वैसा माधव है । मालूम पडता है तुम दोनो ने साजिश करके मेरी बहूरानी के प्राण ले लिये ।

अनपूर्णा के नेत्रों से टप टप आँसू गिरने लगे ।

लल्ला ने पूछा, 'बाबू जी क्या मा नही आयेगी ?

आखें पोछती हुई अनपूर्णा बोली, 'छोटी मा के पास जायेगा तू ?'

लल्ला ने अस्वीकृति देते हुए कहा, नही ।'

क्या, छोटी मा तेरे नाना के पास गई हैं । तू भी कल चला जा ।

लल्ला खामोश ही रहा ।

उसे मौन देख यादव ने पूछा जायगा रे लल्ला ?'

तकिये मे मुँह छिपाते हुए लल्ला ने पूर्ववत कहा 'नही ।

कुछ रात रहे यादव काम पर जाने की तयारी करने लगते थे। पाच छ दिन की बात है एक दिन शेष रात्रि मे तयार होकर तमाखू पी रहे थे ।

अनपूर्णा ने तभी बीच मे बाधा देते हुए कहा, 'काफी देर हो रही है। सबेरा होने को है ।

यादव ने व्यग्र होकर हुक्का रख दिया और बोले 'आज मन बहुत भारी सा है बडी बहू । रात को मुझे ऐसा लगा जसे बहूरानी दरवाजे की आट मे खडी हुई है ।

उसके बाद वे उठे और 'दुर्गा दुर्गा' कहकर चल दिये ।

सवेरे अनपूर्णा बडे अनमने मन से रसोई घर का काम कर रही थी । तभी नए घर के नौकर ने आकर खबर दी कि बाबू कल रात को ही फरासडागा चले गये है शायद छोटी बहू की तबियत कुछ ज्यादा बिगड गई है ।'

अपने पति की प्रात काल की बात याद करके अनपूर्णा की छाती भय से काप गइ । उसने फिर भी पूछा क्या बीमारी है रे ?

इतना तो नहीं सुना पर सुना है कि बार बार बेहोश हो जाती है । और कोई बहुत बडी बीमारी हो गई है ।

और शाम को घर आने पर यादव ने जो यह खबर सुनी तो वह रो पडे । बोले कितनी साध से मैं यह सोने की मूर्ति घर मे लाया था बडी बहू ! तुमने उसका मूल्य न समझ उसे पानी मे बहा दिया है । मैं तो तत्काल ही जाऊँगा ।

दुख ग्लानि और पश्चाताप के कारण अनपूर्णा की छाती फटने लगी । शायद छोटी बहू को वे अमूल्य से भी ज्यादा प्यार करती थी । अपनी गीली आँखें पोछकर ज्बरदस्ती पति के परो को धोकर उन्हे सन्ध्या के लिए बठाकर वे आकर अँधेरे बरामदे मे बठ गई । थोडी ही देर बाद माधव की आवाज

आई अन्नपूर्णा किसी आशका से कापती हुई, जी जान स अपनी छाती थाम कर दोना कानो म उँगली डालकर और जी कडा करके बैठी रही ।

रसोईघर म अँधेरा देखकर माधव इधर वाले कमरे मे आया और अँधेरे मे ही अन्नपूर्णा को पहचानकर बडे सूखे स्वर म बोला शायद सुन लिया होगा भाभी ।'

अन्नपूर्णा हा' या 'न भी न कह सकी । न सिर ही उठा सकी ।

माधव ने फिर कहा अमूल्य का एक बार जाना बहुत जरूरी है भाभी । शायद उसका आखिरी समय आ गया है।

आधी गिरकर अन्नपूर्णा दहाड मारकर रोने लगी । यादव दूसरे कमरे से पागल की तरह दौडते हुए और चिल्लाकर बोले, 'ऐसा नही हो सकता माधव ! मैं कहता हूँ न कि ऐसा नही हो सकता ! अपने जान और अनजान मे भी मैंने किसी को कभी कोई दुख नही दिया । अब फिर मुझे इस उम्र मे भगवान यह दुख क्या देंगे !

माधव चुप खडे रहे ।

यादव बोले 'मुझे सब बातें साफ-साफ बता । मैं खुद जाकर बहूरानी को वापस ले आऊँगा । तू मत घबडा माधव ! क्या गाडी है तेरे साथ ?'

माधव बोले, मैं तो बिल्कुल ही नही घबराया भइया ? पर आप तो खुद ही ।

'कुछ भी नही । अरे, बडी बहू ओ । अरे अमूल्य ।'

माधव ने टोका, 'अरे भइया, क्या इतनी रात गये ?

नही, नही, अब देरी ठीक नही । तू मत घबरा माधव । गाडी तो बुलवा, नही, तो मैं पैदल ही चला जाऊँगा ।'

कुछ कहे बिना ही माधव गाडी लेने चला गया । गाडी आते ही चारो जन उसी पर फौरन सवार हो गए ।

यादव ने पूछा, कैसे क्या हुआ ?'

'मैं तो था भी नही । ठीक से नही जानता । सुना कि चार पाच दिन हुए बडे जोरा का बुखार आया । बार-बार बेहोशी हो जाती थी तब से आज तक कोई एक गिलास पानी या दूध या दवा भी नही पिला सका । ठीक से पता नही कि क्या हुआ ! पर अब आशा तो बिल्कुल भी नही है ।'

यादव जोरो से चीख उठे, 'खूब कहा, हजार बार आशा है । मेरी बहू

अभी जिन्दा है और रहेगी। माधव जान ले। भगवान इस आखिरी उमर मे मुझसे झूठ न बुलवायेंगे। मैं तो आजतक कभी भी झूठ नही बोला।'

भावावश मे माधव ने झुककर बडे भाई के पाँव छूकर हाथ माथे म लगाया और चुपचाप उठे रहे।

नौ

जान कितने दिना से बिना खाना पानी के ही बिन्दो अपने को घुलाती आ रही थी यह किसी को मालूम न था। मायके पहुँचते ही वह बुखार म पड गई। दूसरे दिन तीन चार वार बेहोशी हुई। और आखिरी बार की बेहोशी तो बहुत ही लम्बी थी। किसी तरह मिटना ही नही चाहती। बहुत प्रयत्न के बाद बहुत देरी से जब उसे होश भी आया तो उसकी नाडी बिल्कुल ही बैठ सी गई थी। खबर पाते ही भागते हुए माधव आए। बिन्दो ने पति के पावा की धूल माथे पर लगाई पर दात पिचका कर पड रही। सकडा प्रयत्न करने पर भी एक बूँद पानी या दूध भी उसने न पिया।

माधव ने निराश होकर कहा या आत्महत्या क्या करना चाहती हो?'

बिन्दो की आँखो से आसू बह चले। काफी देर बाद उसने धीरे धीरे कहना शुरू किया मेरा तो सवस्व लल्ला है। सिफ दो हजार रुपये नरेन्द्र को देना और उसे भी पढाना। वह मेरे लल्ला को बहुत प्यार करता है।'

माधव ने ओठो को दातो के जोर से दबाकर अपनी रुलाई रोकी।

बिन्दो ने इशारा करके माधव को अपने और पास बुलाया और कहा, देखो उसके सिवा और कोई मुझे आग न दे।'

माधव ने इस आघात को भी सह लिया और धीरे से बिन्दो के कान के पास मुँह लेजाकर कहा, किसी को देखना चाहती हो?

बिन्दो ने पहले तो सिर हिलाया फिर कहा नही रहने दो।'

बिन्दो की माँ ने एक बार फिर दवा पिलाने की कोशिश की। लेकिन बिन्दो ने फिर पहले की तरह ही दाँत पीस लिया।

एकाएक माधव उठ खडे हुए और बोले, 'यह नही होगा बिन्दो! तुम हम लोगो की बात ही नही सुनती। लेकिन तुम जिसकी बात कभी नही टाल सकती उसे ही लिवाने जा रहा हूँ। सिफ मेरी इतनी सी बात मानना कि लौटने पर तुम्हे देख पाऊँ।

वाहर आकर माधव ने आँखों के आँसू सुखाए। उस रात तो बिन्दो शान्त होकर सो गई। और तब सवेरा ही हुआ था। सूरज भी निकल ही रहा था कि माधव कमरे में आए और ज्यों ही दीपक बुझाकर उन्होंने खिड़कियाँ खोलीं कि बिन्दो की आंख भी खुल गई और सामने ही प्रभात के नव प्रकाश में उसने पति का श्री मुख देखा और तनिक मुस्कान के साथ पूछा कब आए ?

अभी अभी, सीधा ही चला आ रहा हूँ। भइया तो जैसे पागल हो गए हैं। बहुत रो धो रहे हैं।

बिन्दो धीरे से बोली 'यह मैं समझती हूँ। क्या उनके चरणों की धूलि लाए हो ?'

वे खुद आये हैं। बाहर बैठे तमाखू पी रहे हैं। भाभी भी आई हैं न ! हाथ पाव धो रही हैं। लल्ला को तो गाड़ी में ही नींद लग गई थी। ऊपर के कमरे में उसे सुला दिया है। क्या जगा लाऊँ ?'

बिन्दो सुनकर स्थिर हो गई, फिर बोली 'नहीं रहने दो।'

फिर करवट बदलकर दूसरी ओर मुँह करके पड़ रही।

अन्नपूर्णा जब कमरे में आई और बिन्दो के सिरहाने बैठकर ज्योंही उसके माथे पर हाथ फेरा कि वह चौंक गई। अन्नपूर्णा रोने लगी और रुदन का वेग कम होने पर अपने को जरा सम्हालकर बोली, 'क्यों री छोटी ? दवाई क्या नहीं खाती ? क्या मरना चाहती है इसीलिए यह सब कुछ करती है ?

बिन्दो कुछ न बोली।

अन्नपूर्णा ने बड़े स्नेह से उसके कान के पास मुँह लेजाकर धीरे से कहा 'क्या समझती नहीं ! तेरी दशा देखकर मेरी छाती फटी जा रही है।'

बिन्दो को जवाब देना ही पड़ा, 'सब कुछ समझती हूँ जीजी !

तो इधर मुँह घुमा। तेरे जेठजी खुद तुझे घर लिवा जाने के लिए आये हैं और तेरा लल्ला तो रोते रोते थक कर सो गया। मेरी बात तो सुन इधर मुँह घुमा।'

इस पर भी बिन्दो ने मुँह नहीं घुमाया। सिर हिलाकर बोली नहीं जीजी, पहले ।'

तभी यादव आकर दरवाजे पर खड़े हो गये थे और उन्हें देखते ही अन्नपूर्णा ने बिन्दो के माथे पर आंचल खींच दिया। यादव ने क्षणभर उदास मन, सिर झुकाये खड़े रहकर अपने अशेष स्नेह की इस प्रतिमा छोटी बहू को निहारा

जो चादर मे लिपटी पडी थी फिर अपने आसू रोकते हुए भरोये गले से बोले, 'बहूरानी घर चलो न ! मैं तुम्हे लिवाने आया हूँ।'

यादव के रूखे सूखे व कमजोर चेहरे को देखकर वहा मौजूद हर आदमी की आँखें भर आयी। थोडी देर चुप रहकर यादव ने फिर कहना शुरू किया और एक दिन जब तुम बहुत छोटी सी थी बेटी, तब मैं आकर अपने घर की लक्ष्मी को लिवा ले गया था। दुबारा भी लिवाने के लिए ही आना होगा, यह कभी भी न सोचा था। हा बेटी, सुनो जब आ ही गया हूँ तब या तो तुम्हे अपने ही साथ लिवाकर लौटूँगा नही तो फिर उस घर की तरफ कभी मुँह भी न करूँगा। बेटी, तुम जानती तो हो कि मैं कभी झूठ नही बोलता।'

इतना कहकर अपनी गीली आखें सुखाते हुए यादव कमरे से बाहर चले गए। तभी अचानक बिन्दो ने करवट बदली और मुँह इस ओर घुमाकर कहा, 'जीजी ! लाओ न, क्या खाने को देती हो ? और हा, लल्ला को लाकर मेरे पास लिटा दो और तुम सब लोग बाहर जाओ और आराम करो। अब किसी बात का, किसी तरह का भी डर नही है। अब मैं मर नही सकती। मरूँगी भी नही।

काशीनाथ

एक

चार बजे रात से ही नहा धोकर, पूजापाठ कर चोटी बाधकर काशीनाथ जब पण्डित धनञ्जय भट्टाचार्य की पाठशाला के बरामदे में बैठकर दर्शनशास्त्र के सूत्र एवम भाष्य रटने लगता तो उसे बाहरी दुनिया का ख्याल ही न रहता। उन्नत ललाट और दीर्घ आकृति का काशीनाथ उपाध्याय दर्शनशास्त्र की गहराई में डूबकर सबकुछ भूल सा जाता। लोग उसके बारे मे तरह तरह की अटकल बाजियाँ करते। कोई कहता वह पिता के समान विद्वान होगा, कोई कहता कहीं पिता के समान पढ़ते पढ़ते पागल न हो जाय। ऐसा सोचने वाला में उसके मामा भी थे। कभी कभी वे बाधा देते हुए कह भी बैठते कि बेटा तुम गरीब लडके हो अधिक पढ लिखकर क्या करोगे? जितना पढ लिख चुके हो उतना ही काफी है तुम्हारे लिए। इतना अधिक पढ कर क्या तुम भी स्वर्गीय बन्द्योपाध्याय की तरह घर के एक कोने मे पडे सिर हिलाओगे क्या? थोडी बहुत जो उम्मीद है, वह भी जाती रहेगी।

माता की यह सीख काशीनाथ इस कान से सुनता और उस कान से उडा देता।

पागल हो जाने के भय से मामा उसे फटकारते। घर का काम धधा न हो पाने के कारण मामी भी बिगडती और ममेरे भाई उसकी खिल्ली उडाया करते। परन्तु काशीनाथ इन सब बातो को सहज ही सह लेता, मानो कुछ हुआ ही न हो।

परिणाम कुछ भी न निकला। वह पूर्ववत ही सबकुछ करता रहा। शाम को मौज से मैदान मे घूमता, नदी किनारे पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर अस्पताल मे डूबते हुए सूर्य की ललाई देखता और कभी गाँव के जमीदार के घर जाकर शिव मन्दिर मे खडा अधमुँदे नेत्रो से शिव की आरती का आनन्द लेता। कभी-कभी मामा के चण्डी मण्डप मे चला जाता और एक कोने मे कम्बल बिछाकर चुपचाप एकान्त मे बैठ जाता।

ऐसा लगता मानो इसे कोई काम नही, उद्देश्य नही, कामना नही। बारह साल की उम्र में ही उसके पिता का *स्वर्गवास हो गया था।* ये छ वर्ष उसने मामा के यहाँ ही काट दिये हैं। वह क्या करता है बाद मे क्या करेगा, पहले

क्या किया है और अब क्या करना जरूरी है, इसकी उसे कोई चिंता नहीं। उसे लगता मानो उसे यूं ही दिन गुजारने है। हमेशा मामा के घर दोनों वक्त सूखी रोटी और डाट फटकार पड़ती हैं। न कहीं जाना है उसे और न कुछ करना ही है। वह नौकर आया जब उसी का है और उसी का रहेगा। उस पर न कोई दखल जमाने आयगा न उसे वहां से हटा ही सकेगा। मुहल्ले वाले समझाते, काशीनाथ, कुछ करो धरो, इस तरह निठल्ले बैठने से कैसे काम चलेगा? कुछ न कुछ तो करना ही चाहिये। काशीनाथ प्राय खामोश ही रहता, मन ही मन सोचता कि वह क्या कर रहा है और उसे क्या करना चाहिये? दिन किसी प्रकार बीत रहे थे।

दो

प्रियनाथ मुखोपाध्याय गांव के जमीदार थे। अति कुलीन तथा धनवान थे। कुल मर्यादा की रक्षा के लिये इतने बड़े आदमी होने पर भी जब वे अपनी बेटी के लिए कोई सर्वगुण सम्पन्न वर खोजने में असमर्थ रहे तो उन्हें बेहद झुंझलाहट हुई। पत्नी से कभी जिक्र करते तो कहती मेरे एकमात्र कन्या है, कुलीनता लेकर मुझे चाटना है क्या?

उनके गुरुदेव उसी गांव में रहते थे। उनसे पूछा तो वे बोले, 'हरि हरि! कहीं ऐसा भी सम्भव है? धन की कमी नहीं है तुम्हारे पास किसी गरीब कुलीन सन्तान को कन्यादान करके जमाई और लड़की को अपने ही घर रखो। कितना अच्छा होगा यह। इतने बड़े वंश और कुल की मर्यादा को घटाना उचित नहीं। प्रियनाथ बाबू ने घर लौटकर अपनी पत्नी से यह बात कही। उसने भी स्वीकृति देते हुए कहा ठीक ही तो है मैं भी यही चाहती हूँ कि जब तक जिऊँ कमला मेरे ही पास रहे।

हुआ भी ऐसा ही। दामाद को घर जमाई बनाने की प्रेरणा लिए हुए एक दिन प्रियनाथ बाबू पण्डित मधुसूदन मुखोपाध्याय के घर पहुँचे। मुखोपाध्याय जी उस समय यजमान के घर पूजा पाठ करने जा रहे थे। प्रियनाथ बाबू को आया देख के असमंजस में पड़ गए। इतने बड़े जमीदार को कहां बिठायें क्या करें कुछ समझ में नहीं आ रहा था। प्रियनाथ बाबू उनकी उलझन ताड़ गये और हँसकर बोले, आपसे कुछ बातें करनी हैं। चलिए भीतर चलें?

हां, हां चलिए किन्तु ।

[illegible] है अभी भेजो।

दोनों व्यक्ति कमरे की ओर बढ़ चले। [illegible]

'आपका मतलब ?'

'मधुसूदन को दफ्तर में [illegible]।'

'[illegible]'

'कुछ देर है [illegible] कोई जरूरी काम है ?'

'हाँ, एक जरूरी काम है।'

मधुसूदन की समझ में नहीं आ रहा था कि [illegible] इतने बड़े जमींदार का क्या काम हो सकता है। घबराते से बोले, 'कोई कसूर हुआ है उनसे क्या ?'

'कसूर क्या होगा ?'

'तब ?'

प्रिय बाबू हँसते हुए बोले, 'मैं उसे अपना जमाई बनाने का निश्चय किया है। इस नाते आप मेरे समधी हुए।' कहने के साथ ही वे ठहाका मारकर हँस पड़े।

जिस बात को सोचकर उन्हें हँसी आ रही थी, मधुसूदन को उसका ज्ञान हो जाता तो शायद वे चुप हो रहते। विस्मय से वे विस्फारित नेत्रों से उनकी ओर देखने लगे और कुछ क्षणों बाद बोले, 'काशीनाथ का ?'

'हाँ।'

'किसलिए ?'

'ढूँढ़ने पर भी मुझे उस जैसा सुशील लड़का नहीं मिला। आपको कोई आपत्ति है क्या ?'

'नहीं तो, यह तो सौभाग्य है, किन्तु वह तो पागल है।'

'पागल ! क्या ? मैंने तो ऐसा कभी नहीं सुना।'

'उसके पिता पागल थे।'

काशीनाथ के पिता से प्रियबाबू भली भाँति परिचित थे। उन्हें यह भी मालूम था कि लोग उन्हें पागल समझते थे। [illegible] वे बोले, 'उसका नाम क्या है ?'

'काशीनाथ बन्द्योपाध्याय।'

'आप उसे बुला दीजिए। मैं उससे मिलना चाहता हूँ।'

मधुसूदन ने अपने छोटे लडके से उसे बुलवा भेजा। पाठशाला जाकर उसने आवाज लगाई काशी भैया।' उसने सिर ऊपर उठाया और पूछा, 'क्या बात है ?'

पिताजी बुला रहे है ?'

किसलिए ?'

'यह तो नही मालूम। गाँव के जमीदार बाबू आये हुए हैं, उन्होंने आपको बुलवा भेजा है।'

पोथी बन्द करके काशीनाथ उठा और प्रिय बाबू के पास पहुचा। उन्होंने उसे नीचे से ऊपर तक भली भाँति देखा और पूछा, 'कहाँ थे तुम, काशीनाथ ?'

भट्टाचार्य की पाठशाला मे।'

व्याकरण पढी है तुमने ?'

'सिर हिलाकर काशीनाथ बोला जी हा, पढी है।

साहित्य पढा है ?

थोडा सा पढा है ?'

अब क्या पढ रहे हो ?'

'सांख्य दर्शन।'

प्रिय बाबू ने आश्वस्त होकर कहा, अच्छा, जाओ, जाकर पढो।'

काशीनाथ चला गया। उसकी समझ मे कुछ नही आया कि उसे क्यो बुलाया गया था और क्या जाने को कह दिया गया। पाठशाला पहुँचकर वह पुन पोथी खोलकर बैठ गया। उसके चले जाने पर प्रियनाथ ने मधुसूदन से कहा, 'आप पागल वाली बात क्या कह रहे थे ?'

मधुसूदन जी ने कहा, 'जी नही ठीक पागल तो नही है किन्तु कुछ अजीब सा है। इसलिए कुछ लोग पागल कहते हैं।

वह कैसे ?

प्राय पोथी मे खोया रहता है या फिर इधर उधर निरुद्देश्य घूमा करता है। कुछ अजीब सा स्वभाव है उसका।'

'और कुछ करता है ?

हा, कभी कभी अँधेरे मे घण्टा अकेला कमरे के कोने मे गुमसुम-सा बैठा रहता है।'

हँसते हुए प्रिय बाबू बोले, 'और कुछ ?

हँसी की गूढता को भापते हुए मधुसूदन बोले, नही, और तो कुछ भी नही है।

'जाइये भीतर जाकर पूछ आइये। यदि सबकी राय हो तो इसी महीन म व्याह हो जाय।'

अन्दर आकर मधुसूदन ने अपनी स्त्री स सब कुछ बतलाया। सुनते ही माना वह आकाश से जमीन पर आ रही। कौतूहल कम हान पर वह बोली 'काशी के साथ प्रिय बाबू की कन्या का विवाह! कही तुम पागल तो नही हो गये हो ?'

'क्यो, इसमे पागल होने की क्या बात है ?'

'और नही ता क्या ?

'काशीनाथ कितने कुलीन घर का लडका है इसे मत भूलो।'

पण्डित जी न ठण्डी मास लेते हुए कहा अपन हरी के माथ क्या यह रिश्ता नही हा सकता ?'

हालाकि दोनो जानते थे कि ऐसा हाना सम्भव नही फिर भी मधुसूदन ने दीघ निश्वास लेते हुए कहा, 'तुम्हारी क्या राय है ?

पण्डितानी ने दुखित होकर कहा, 'मेरी क्या राय तुम जसा उचित समझो।'

बाहर आकर पण्डिन ने चेहरे पर अस्वाभाविक हँसी लाते हुए कहा, 'पण्डितानी बहुत प्रसन्न हैं। हो भी क्यो न आखिर काशी की माँ के स्थान पर है न। दा वष की उम्र मे ही उसकी माँ उसे अकेला छोड गई थी तब से उस ने ही उसे पाला पोसा है बहनाई के देहान्त के बाद स वह यही रह रहा है।'

गदन हिलाते हुए प्रिय बाबू बोले, मैं सबकुछ जानता हूँ। न हो तो आज ही पक्का कर डालिये।'

'पक्का क्या करना है ? जब भी आप उचित समझे आशीर्वाद दे आऊँगा।'

'ऐसी बात नही है। मैं कुलीनता की मर्यादा के विषय मे पूछ रहा था।'

'इस विषय पर क्या कहूँ ? जैसा आप चाहेंगे। वसा ही होगा, फिर भी आपके भावी जमाई की मामी से भी पूछ लेना ठीक होगा।'

ठीक ही तो है। मैं भी वही सोच रहा था।'

काशीनाथ की मामी की राय लेकर हरि बाबू की इच्छानुसार यह तै हुआ कि समधिन जी एक हजार रुपये नकद लिये बिना यह रिश्ता नही तय करेंगी। हुआ भी ऐसा ही। प्रियनाथ बाबू ने शत स्वीकार कर ली।

तीन

काशनाथी ने जब देखा कि वह स्थाई रूप से घर जमाई हो गया है पहले की बात नहीं रह गयी है तब से उसका मानसिक सुख जाता रहा। वह कहीं स्वच्छन्दता से आ जा नहीं सकता था अपनी इच्छानुसार कुछ कर नहीं सकता था माना उसका अपना अस्तित्व ही नहीं रह गया था। कहीं जाना चाहता भी है तो ससुर की अनुमति नहीं मिलती अथवा सास की झुँझलाहट। बिचारा काशीनाथ मन मारकर रह जाता। उसे विस्मय हो रहा था उसके ऊपर इतना कठोर अनुशासन क्यों है? इस नियन्त्रण से किसी का क्या हित सिद्ध होगा? कुछ समझ नहीं पा रहा था वह। किसी तरह वह अपने को समझा लेता। किन्तु उसका हृदय उसे कुरेदता कि उसे कोई सुख नहीं, चैन नहीं, शान्ति नहीं। पहले वह स्वच्छन्दतापूर्वक घूमा करता था, अब सोने के पिंजरे में कैद है। इस बात को वह भली भांति समझ गया। पहले वह विशाल समुद्र में तैरता था अब कंटीली झाड़ी में कैद है। समुद्र में वह सुख से तैरता था सो बात नहीं थी वहाँ भी उसे तूफान व तरङ्गों से खेलना पड़ता था लेकिन यह निमन्त्रण सा घर तो और भी कष्टदायी हो गया था। कभी कभी उसे ऐसा लगता कि उसे गरम पानी के कड़ाहे में डाल दिया गया है। सब ने मन्त्रणा कर उसकी देह को खरीद लिया है, उसका स्वयं का कुछ भी न रहा। सिर पर वह चोटी नहीं, कण्ठ में तुलसी माला नहीं, नंगे पैर नहीं, उघरा बदन नहीं वह पाठशाला नहीं, नदी किनारे वह पीपल का वृक्ष नहीं, चण्डी मण्डप का वह एकान्त कोना नहीं, कुछ भी नहीं रह गया।

उसे लगा जैसे उसका नया जन्म हुआ हो और पूर्व जन्म की चीजें उसने झाड़ पोंछकर फेंक दी हैं। शरीर और मन आपस में लड़कर थक गये हैं। शाम होते ही उसका मन नदी किनारे उस पीपल वृक्ष अथवा किसानों में भटकने लगा होता तो उसकी देह बहुमूल्य पोशाक पहने उग्घी पर घूमती होती। मन जब अंगोछा पहन नदी में डुबकियां लेता तो शरीर चौकी पर बैठा नौकरों द्वारा साबुन-तेल से धुलता पुछता रहता। इस प्रकार एक ही काशीनाथ का दोहरा व्यक्तित्व हो गया था। उसका कोई भी कार्य सत्य न होता न ही पूरा होता।

दिन बीतते गये। बारह महीने का अरसा ससुराल में गुजर गया। पहले के कुछ महीने अच्छे बीते नयेपन के मोह में पीछे मुड़कर देखने की जरूरत ही नहीं पड़ी और अब वह सूखने लगा। उसकी दशा को और किसी ने समझा हो

अथवा नही, लेकिन कमला ावश्य ताड गई, उसकी आँखो न उसे विवश कर दिया। एक दिन उसन काशीनाथ से कहा, 'तुम दिनो दिन सूखत क्या जा रह हो ?'

कौन कहता है ?

'मेरी आखे कहती है।'

'गलत कहती है।

कमला ने यथावत् कहा, 'बात क्या है, कुछ बताओगे भी ?'

कुछ भी तो नही, क्या बताऊँ ?'

कुछ तो।'

'कुछ भी नही।'

जरूर कुछ हुआ है। मैं समझती हूँ सब कुछ।'

काशीनाथ ने मुख फेरते हुए कहा 'क्यो परेशान कर रही हो मुझे ? मै चला जाऊँगा यहा स।

ज्योही वह उठकर चलन को हुआ कि कमला ने उसका हाथ पकड लिया और अधीर होकर बोली, 'मत जाओ, अब से कुछ न कहा करूँगी ?

क्षणभर को काशीनाथ बैठ गया पर कुछ दर बाद उठकर चल दिया। कमला न उसे रोका नही। पति के अचानक बिन कह चले जाने पर तकिये मे मुँह छिपाकर वह सुबक पडी।

बाहर आकर काशीनाथ आश्वस्त हुआ। फाटक से निकलकर वह सडक पर आया। काफी दूर निकल जान पर उसने पीछे मुडकर देखा कि पीछे पीछे दरवान चला आ रहा है। काशीनाथ झल्ला उठा। करीब आने पर उसने कहा, 'तू कहाँ चला आ रहा है ?'

उसन प्रणाम करते हुए कहा, सरकार के साथ।'

मेर साथ कोई जरूरत नही तू लौट जा।'

शाम को अकेले ही घूमेगे क्या सरकार ?

कोई उत्तर न देकर काशीनाथ आग बढ चला। दरबान की कुछ भी समझ म नही आ रहा था, कुछ निश्चित नही कर पा रहा था वह। अन्त म उसन त किया कि वापस लौट चलना चाहिये। काशीनाथ न उधर ध्यान नही दिया, सीधे मामा के घर पहुँचा। भीतर पहुँचकर सूने मन से बरामदे म आकर बैठ गया। कुछ समय के बाद जब हरि बाबू बाहर घूमन को निकले तो उन्होन

उसे देख लिया। अँधेरा होने के कारण वे उसे पहचान नही पाये। करीब आकर पूछा 'कौन है ?'

काशीनाथ ने दबे स्वर मे कहा 'मैं हूँ।'

हरि बाबू को विस्मय हुआ, तुरन्त पूछ बैठे 'ऐ ? कुँवर साहब यहा।

काशीनाथ खामोश ही रहा। हरिबाबू ने हल्ला मचाते हुए चिल्लाना शुरू किया 'माँ, देखो तो जमीदार साहब के कुँवर जी आये है, तुम लोगो ने बैठने का आसन तक नही दिया।

हरी की मा दौडी दौडी आई और बोली 'अहो भाग्य, दुखिया मामी की सुध आई तो बेटा।

काशीनाथ पहले की तरह ही खामोश था ? मामी ने अपनी बडी लडकी विन्दुबासिनी को आवाज लगाई 'बिन्दु ओ, बिन्दु, जल्दी आ तेरे भैया आये हुए हैं बैठने को कुछ ला तब तक मैं पूजा पाठ कर लूँ।

विन्दुबासिनी मधुसूदन भट्टाचार्य की छोटी लडकी थी। गृहस्थ घर की बहू होने के कारण मायके कम ही आ पाती थी। माह भर हुआ है उसे आये हुए पर काशीनाथ को उसने नही देखा था। काशी को वह बेहद प्यार करती है अत भैया का नाम सुनते ही दौड पडी। करीब आकर देखा तो कोई दिख लाई नही पडा। बरामदे के अँधेरे मे कोई बैठा हुआ था। इसके पहले उसने काशी भैया को इस स्थिति मे नही देखा था।

काशी भैया जब बडे आदमी हो गये थे बडे घर के जमाई होने के कारण वे 'बाबू' बन गये थे, यह सोचकर उसे हँसी आ गई लेकिन जब पास आकर अँधेरे मे उसका कुम्हलाया मुख देखा तो उसकी हँसी गायब हो गई। कभी उसने काशीनाथ का मुर्झाया चेहरा नही देखा था इसके पहले घर भर मे एक वही थी जो काशी भैया को कुछ कुछ पहचान सकी थी। करीब आकर उसने स्नेह से काशीनाथ की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा 'यहाँ क्यो बैठे हो, काशी भैया ! आओ भीतर चलकर बैठो। काशीनाथ चुपचाप उठकर भीतर आया और खाट पर बैठ गया।

बिन्दु ने उलाहना देते हुए कहा, 'कितने दिन हो गये मुझे आये भैया, लेकिन तुम एक दिन भी मुझे देखने नही आये ?

'नही आ सका, बहन।

'क्यो ऐसी भी क्या बात थी ?'

काशीनाथ ने इधर उधर टालते हुए कहा, 'वे लोग आने ही नही देते।'

'क्या नही आन देते !'

अनमन मन से काशीनाथ ने कहा, 'यू ही, ऐसे ही।'

बिन्दु न दुखित होकर पूछा 'तुम जहा जाना चाहत हो, नही जा पाते।

'नही मुझे जान नही दिया जाता इससे मेरे ससुर का अपमान होता है।'

विन्दु ताड गई कि इन बातो से भैया का कष्ट हा रहा है इसलिए बातचीत का सिलसिला बदलत हुए कहा, 'भैया, तुमने वहू ता दिखाई ही नही ?'

काशीनाथ चुप ही रहा।

बिन्दु न पुन दुहराया 'कैसी है बहू ?

'अच्छी है !'

'तो किसी दिन जाकर देख आएँ ?

काशीनाथ ने बिन्दु की ओर मुस्कराकर कहा, देख आना।

उसी समय बाहर गाडी की आहट सुनाई दी। बिन्दु बाली, 'मालूम पडता है, तुम्हारी गाडी आ गई है।'

'हा, लगता है।' जात समय उसने बिन्दु से पूछा, 'कब तक आओगी'

'कहा ?'

'बहू देखन ?'

बिन्दु ने मुस्कराते हुए कहा, जिस दिन फुसत हो आकर ले जाना।'

'कब आऊँ ?

'जरूर आना।'

दूसरे दिन काशीनाथ स्वय गाडी लेकर आया। ज्यो ही बिन्दु चलन को हुई हरि बाबू आ पहुँचे। आते समय उन्होने दरवाजे पर खडी गाडी देखकर अनुमान लगा लिया था। भीतर पहुँचकर उन्होने मा स पूछा, बिन्दु कहा जा रही है, मा ?'

मा न सहज ही कह दिया, 'बहू दखने जा रही है।'

किसकी बहू ? जमीदारार की लडकी को ?'

माँ चुप हो गई, कुछ बोली नही।

हरि बाबू ने गम्भीर मुद्रा बनाते हुए कहा, 'यदि बिन्दु वहाँ गई तो मैं आजीवन उसका मुँह नही देखूँगा।

माँ ने विस्मित होकर पूछा, 'क्या ? भाई की बहू देखने म बुराई क्या है ?'

बुराई भलाई के समझ म नही पडना। केवल इतना ही जानता हूँ कि विंदु अगर मेरी बात नहो मानती तो इस घर म न आवे, बस।'

हरि भैया का स्वभाव बिंदु से छिपा न था। उसने चुपचाप सब कपडे लत्ते उतार दिए। काशीनाथ चुपचाप खडा सबकुछ देखता रहा। दुखी मन लिए चुपचाप गाडी म बैठ गया।

'शाम को कमला ने उससे पूछा, ननद जी नही आई क्या ?'

काशीनाथ ने बुझे मन से कहा आने नही दिया उन लोगो ने।

क्यो ?

न मालूम क्या शायद शर्म लगती है यहाँ भेजने म।'

कमला के हृदय म यह बात भेद गई।

चार

कमला प्रिय बाबू की इकलौती संतान है। इसके पहले उन्होंने दो विवाह किए थे पर उनसे कोई संतान नही हुई। दोनो स्त्रियो के मर जाने पर उन्होंने वृद्धावस्था म यह तीसरा विवाह किया था जिसके फलस्वरूप इन्हे कन्या रत्न के रूप म कमला मिली। निसंतान होने पर पुत्र कन्या म कोई भेद नही रह जाता। इसीलिए उसका लाड प्यार अधिक बढ गया था। किसी की मजाल नही थी कि उसकी कोई बात काटे अथवा उसकी मरजी के खिलाफ कोई काम करे। कमला धनवती रूपवती गुणवती व विद्यावती सभी कुछ थी। इतना होते हुए भी वह एक आदमी को वश मे नही कर पा रही थी और वह अन्य कोई नही, उसका पति था। कमला ने अनेक उपाय किये, क्रोधित होकर दुखित होकर तथा मान अभिमान व सेवा करके देखा मगर पति को वह काबू म नही कर पायी। उसके पास तक नही पहुँच पाई। करीब होते हुए भी उसके पति का हृदय कितना विशाल था, इसका निर्णय न कर पाई वह। नित्य दोनो समय वह भगवान से प्रार्थना करती, भगवान, उनका मन मुझे दो। कभी कभी तो उसे ऐसा लगता कि शायद उनके पास मन ही नही इसी लिए वह वंचित है। काशीनाथ उसके लिए एक जटिल पहेली बन गया था। ज्यो ज्यो दिन बीतते गए जटिलता और भी बढती गई। कभी कभी वह सोचती कि पति का इतना अतुल स्नेह शायद ही किसी स्त्री ने पाया हो लेकिन साथ ही उसे यह सोचा पर भी विवश हो जाना पडता कि इतनी भीषण उपेक्षा

भी शायद किसी के भाग्य मे न होगी । दिन किसी प्रकार कटते रहे । कटने नही थे तो काशीनाथ के । न तो पोथियों म उसका मन रमता न चुपचाप उठने म ही आनन्द आता और न ही हँसी मजाक कम अच्छी लगता । उसका हृष्ट पुष्ट शरीर मलिन एव क्षीण होने लगा और रग काला पडने लगा । पति की गिरती दशा देख कमला की चिंता बढ गई । यद्यपि उसने प्रतिज्ञा की थी कि वह भविष्य मे पति स कुछ भी न पूछेगी लेकिन वह भी भग हो गई । एक दिन पति के चरणो पर सिर रखकर वह सिसकने लगी । काशीनाथ ने उसे उठाने की कोशिश की पर उठा न पाया ।

क्यो रो रही है बात क्या है ?

कमला कुछ बोली नही । काफी रोते रहने के बाद वह पुन पैरो पर सिर रखकर बोली, तुम मुझे जान से मार डालो लेकिन इस तरह थोडा थोडा कर के मन जलाओ ।'

काशीनाथ को विस्मय हुआ । वह बोला बात क्या है ? कुछ बताओगी भी क्या किया है मैंने तुम्हारे साथ ?'

तुम जानते नही क्या ?'

नही तो, मुझे तो कुछ भी नही मालूम ।

और जो बाकी रह गया है पूरा कर लो, थोडी सी जगह तो रहने दो अपने चरणो म । मैं कुछ नही माँगती ।

काशीनाथ ने सहारे से कमला को उठाया और दुलार म पूछा, क्या बात है, साफ बताओ न ?

'कैसे होते जा रहे हो तुम दिन पर दिन ?'

क्या, मेरा शरीर बहुत दुबला हो गया है ?

आखो को आँचल से ढके कमला रो रही थी । उसी दशा म उसने कहा, हाँ काफी दुबले हो गये है ।'

मैं समझ रहा हूँ, पर करूँ क्या ? तुम्ही बताओ इसमे मेरा क्या कसूर ?

कमला ने कातर होकर कहा तो दवा क्यो नही खाते ?'

काशीनाथ ने हँसकर कहा 'दवा से आराम न होगा ।'

क्या ?'

यह तो नही जानता ।'

दवा से आराम न होगा तो किस चीज से होगा ? आखिर चाहते क्या हो मेरी तक्दीर बिल्कुल जला डालना चाहते हो ?

संस्कृत पाठशाला में पढ़े हुए भोला भाला काशीनाथ प्रीति की रीति से अनभिज्ञ प्रणय सम्भाषण से कोरा, स्वाभाविक स्नेह से ओत प्रोत होकर कमला का हाथ पकड़कर आँसू पोंछता हुआ बोला 'यहाँ मुझे सुख नहीं मिल पा रहा है इसलिए शायद ऐसा हुआ जा रहा हूँ।

तो यहाँ रहते ही क्यों हो ?

करूँ क्या कहाँ जाऊँ ?

यहाँ के सिवाय और कहीं जगह नहीं है क्या ? जहाँ सुख मिले वहीं जाकर रहो।

'वैसा नहीं हो सकता।

क्यों नहीं हो सकता ?

यहाँ न रहूँगा तो ससुर जी को बुरा लगेगा।

अच्छा तो नहीं लगेगा किंतु और चारा ही क्या है तुम्हारे पिता ने मेरी गरीबी पर

कमला ने काशीनाथ के मुँह पर हाथ रखकर आगे बोलना रोक दिया और बोली राम राम ऐसी बातें नहीं कहते। मुझसे साफ साफ कहो, मैं जल्दी ही कोई युक्ति निकालूँगी।

काशीनाथ ने आश्वस्त होकर कहा सभी बातें तो खोलकर नहीं कही जा सकतीं। कुछ देर चुप रहने के पश्चात् वह पुनः बोला, 'यह सब देख-सुनकर ऐसा लगता है कि मेरा तुम्हारा ब्याह होना ही नहीं चाहिये था ?

क्यों ?

तुम्हीं सोचो मुझे पाकर तुम एक दिन के लिए भी सुखी हो सकीं ? मैं प्रीति की रीति नहीं जानता ! प्यार करना नहीं जानता सच पूछा जाय तो कुछ भी नहीं जानता। इस छोटी सी उम्र में न जाने तुम्हारी कितनी साधें कितनी कामनायें होंगी, क्या एक भी पूरी हुई ? मैं तुम्हारा पति न होकर केवल छाया मात्र हूँ।

कमला की आँखों से आँसू गिरने लगे। वह कुछ समझ नहीं पा रही थी। उसके मन की बात हृदय के भीतर ही रह गई। बाहर निकलने को वह छटपटा रही थी लेकिन उसे ऐसा लगा मानो वह जबरदस्ती बन्द कर दी गई हो

किसी वायुहीन कमरे मे लाखा कोशिश के बावजूद वह कुछ कह नही पा रही थी। अन्त म बहुत यत्न करने के बाद वह कुछ खुली। काँपते हुए उसने पूछा—

नुने देख नही सकते क्या ?

यह मैं फिर कभी बताऊँगा ?'

आखिर बतलाते क्यो नही, मुझसे शादी करके तुम सुखी नही हो क्या ?'

क्या कहूँ, शायद नही हो पाया।'

'और किसी से सुखी होते क्या ?'

'यह तो नही बतला सकता।

कमला को लगा कि उसका सारा शरीर जला ही जा रहा है। तभी नौकरानी ने आकर कहा 'जीजी मा जी को बहुत तेज बुखार आगया है तुम्हे बुलवाया है।'

आखें पोछती हुई कमला बाहर निकल पडी।

पाँच

कमला की मा का ज्वर नही उतरा। पन्द्रह दिनो तक झेलती हुई अन्त म सबको रोता हुआ छोडकर वे इस दुनिया से चली गइ। पत्नी से जुदा होने पर प्रिय बाबू को गहरा सदमा पहुँचा। इस बुढापे म उन्होने सोच लिया कि वे भी अब ज्यादा दिनो के मेहमान नही हैं। कमला के सर पर ही सारी गृहस्थी का बोझ आ पडा। अपने सुख दुख के अलावा भी दुनिया म आदमी को बहुत करना पडता है। प्रिय बाबू की देख रेख भी उसे ही करनी पडती थी। और काशीनाथ ? उसकी बात ही जुदा थी। अवसर पाकर वह पुस्तको का गठटर लेकर कमरा बन्द कर पढने जुट गया। पुस्तको से जी ऊबने पर बाहर घूमने निकल पडता। कभी कभी तो दो दो, तीन-तीन दिन तक घर ही न लौटता। किसी को उसके बारे मे कुछ पता ही न लगता। उसकी यह हालत देखकर कमला निराश हो गई। युवती होते हुए भी वह अभी बालिका ही थी। पति प्रेम एव स्वामिभक्ति को वह ठीक से समझ ही नही पाई थी। सीखती भी कैसे पति की ओर से बाधा पड गई थी जो। इसमे उसका क्या कसूर ? जो कुछ सीख पाई थी उस भी धीरे धीरे भूलने लगी। उसके हृदय पर थोडी बहुत सोने की लकीरें पडी हुई थी, वे चमक न पायी थी बाहर की सुन्दरता भीतर प्रविष्ट न हो पायी थी कि स्वत विलीन होने लगी।

मन ही मन कमला सोचने लगी कि जब मेल ही नही हो पाया तो झगडा किस बात का । सिर हिलाकर उसने अपनी मौन स्वीकृति * दी ।

'लडाई न हुई तो क्या बात है कि तू उसे अच्छी नही लगती । आखिर समझ भी तो ?'

कमला का जी चाहा कि कह दे ऐसी ही बात है किंतु वह कह न पाई । पति की वह नही भाती, यह कहने को उसका दिल तयार नही हुआ । वह खामोश हो रही । प्रियबाबू ने रूखी हँसी-हँसते हुए कहा, तुझे अच्छा नही लगता वह क्या ? कमला का हृदय आशका से भर उठा, सामने कापकर अपने हृदय को टटोलना चाहा किंतु असफल रही । उसे ऐसा लगा कि उसके सगीत की गति रुक गयी है कभी कभी यदाकदा दो चार लोग आते हैं और चले जाते है कभी असावधानी से अनजाने कोई ध्वनि होती है, मन के सूने कोने मे कभी कोई दूर से झाक जाता है, बस । *कमला ने अपनी रोती आँखो को आँचल से* ढक लिया । प्रियबाबू ने विनीत होकर कहा, 'बेटी, र ।मत ।'

'बाबूजी, हम लोग एक दूसरे से काफी दूर है ।'

प्रियबाबू ने कमला को अपने वक्ष से लगा लिया । स्वरो से विनम्रता लाते हुए कहा छि बेटी ऐसा नही सोचते । तू जिसकी बेटी है वह तेरी सब कुछ थी । अब भी रात की नीरवता मे वह मेरे कदमो के पास आकर बैठती है तुम लोगो के भय से दिन मे नही आती । शाम हो रही है कही उसने तेरी बातें सुन ली तो उसे पीडा पहुँचेगी ।'

शाम बीत चुकी थी । कमरे म अँधेरा बढता जा रहा था । कमल ने चौंकते हुऐ दृष्टि दौडाई कि कही कोई कमरे मे आया तो नही, पर वहाँ कोई था नही, उसे तसल्ली हुई । कमरे के बाहर आने पर उसके पाव काँप रहे थे, शरीर काफी कमजोर सा लगता था माना किसी ने आधा खून निकाल दिया हो । घर के काम काज निबटाकर वह काशीनाथ के कमरे मे पहुँची । दिया जल रहा था । जमीन पर आसन बिछाय काशीनाथ पोथी खोले बैठा था । काशीनाथ ने जब नेत्र ऊपर उठाय तो देखा कमला थी । आश्चय से उसने पूछा, तुम कब आइ ?

'हाँ आ गई हूँ ।'

बठो ।' कहकर काशीनाथ फिर पढने म जुट गया । कमला चुपचाप बैठी पति को निहारती रही । उसे उसका पढना बुरा लगा । उसने पोथी बन्द कर दी । काशीनाथ को ताज्जुब हुआ । वह बोला, 'क्यो बन्द कर दी ?

'कुछ बातें करो न रोज ही तो पढने रहते हो, एक दिन न पढाग ता कुछ बिगड जायेगा ?'

तो इमीलिए पोथी बन्द कर दी थी तुमने ?'

इमीलिए नही तुम नाराज होगे कुछ कहोगे-सुनोगे इसीलिए।'

काशीनाथ न मुस्कराकर कहा 'नाराज क्या हाऊँगा कमला कभी तुमसे कुछ कहा है ? तुम बोलती नही करीब नही आती फिर पढू न तो दिन कसे कटे ? फिर जरा हँसते ए कहा दो दिना स बुखार म पडा हुआ हूँ कुछ खाया पीया नही पर तुमन तो झाँक तक नही नगाई।

'कमला का जी भर आया। उसन देखा पति का चेहरा बिल्कुल मुरझा गया है। सर पर हाथ रखकर दखा जल रहा था। रोती हुई बोली 'मर सारे दोपो को भुलाते हुए तुम एक बार मुझे क्षमा कर दो और अपना सारा भार मुझे स्वय ढोन दो।

मैं दे तो सकता कन तुम उस सम्भाल भी पाओगी ?'

क्यो नही ?'

दखूगा।

'मुझे अपना लो न !'

वह तो काफी दिना स अपना चुका हूँ। तुमने मुझे समझन का चेष्टा नहीं की शायद आगे भी ठीक स पहचान न पाओ।'

दिए के उजाले म कमला ने पति को जी भरकर दखा। उसे ऐसा लगा कि चेहरे के भीतर कोई चिनगारी राख के बीच दबी हुई है माम म ढका मधु दबा पडा है। पल भर के लिए वह अपन को भूल गई। जोश म आकर वह कह बठी, मुझे पहचानने का मौका क्यो नही दिया, इतने दिना तक ? क्यो छिपा रखा तुमन अपन को ? क्या मिला मुझे सताकर तुम्हे ! आत्म विभोर होकर वह पति के गले म लिपट गई। काशीनाथ की आँखो म आँसू गिरने लग।

छ

दूसरे दिन प्रिय बाबू न काशीनाथ को बुलवाकर कहा टटा अब म थोड ही दिना का महमान हूँ जान कब चल बसूं मेर आग पीछे कोई नहा। जो जमीन जायदाद छोड जाऊँगा, सब तुम्हारी है। दिन थोडे ही रह गय है मरे

क्या ?

कमला मुँह लटकाये बैठी रही।

प्रिय बाबू अनुभवी व्यक्ति थे उन्होंने जमाना देखा था। कमला के मन की बात भाँपते हुए उन्हें देर न लगी। एक एक कर सारी बातें उनके हृदय में बैठने लगी। तह तक पहुँचकर उन्हें बेचैनी हुई। तकिए का सहारा लेकर उन्होंने आखें मीच ली और सिर रखकर लेट गये।

काफी देर तक चुप रहने के बाद वे बोले तुम मेरी इकलौती सन्तान हो इसलिए तुम्हारा जी नहीं दुखाना चाहता। सारी सम्पत्ति मैं तुम्हारे ही नाम कर सकता हूँ लेकिन यह तुम्हारे हित में न होगा। मैं आशीर्वाद देता हूँ कि तुम सुखी रहो लेकिन इस बात का भरोसा कम ही है। अपनी इस लम्बी जिन्दगी में मैंने बहुत कुछ देखा सुना समझा है तीन-तीन ब्याह कर चुका हूँ। इसलिए कहता हूँ कि ऐसा मन लेकर कोई भी औरत कभी सुखी नहीं हो सकती। कुछ देर चुप रहने के बाद वे पुनः बोले 'देखने सुनने में ठीक लगेगा तुम्हें भी खुशी होगी यही सोचकर मैंने दोनों के नाम आधा-आधा लिख दिया था क्योंकि मैं जानता था कि तुम और वह अलग नहीं हो। छोड़, यह तो बता कि तेरे मन में यह बात आई कैसे ?

कमला रुँआसी होकर बोली सम्पत्ति का स्वामी बन जाने पर कोई मेरी तरफ मुड़कर भी नहीं देखेगा।

'और न मिलने पर ?'

मेरे वश में रहेंगे।

प्रियबाबू बोले मैं काशीनाथ को पहचानता हूँ तुम नहीं जानती उसे। वह ठीक अपने बाप का जैसा है। अगर वह तुम्हें देख नहीं सकता तो सम्पत्ति पाने पर भी न देख पायेगा। ऐसी स्थिति में कोई फर्क नहीं पड़ता। और सुन बिटिया इस तरह पति को काबू में नहीं रखा जा सकता। ताकत से जंगल के शेर को वश में किया जा सकता है लेकिन जबदस्ती एक फूल के साथ नहीं की जा सकती।

कुछ देर चुप रहने के बाद वे फिर बोले 'भगवान करे तुम कामयाब हो, पर जो तुमने सोचा है वह ठीक नहीं है। अगर वह स्वयं तुम्हें अपना न सका, तो तुम्हारे पास शेष बचेगा ही क्या ? जो रह जायगा उसके लिए क्या आधी सम्पत्ति पर्याप्त नहीं है ? एक बात और है पति की देह मन, आत्मा पार्थिव

अपार्थिव सभी कुछ दिया जाता है—और जिसे सब कुछ दे दिया जाता है उसे क्या आधा भी नही दिया जा सकता ? कमला, ऐसा मत सोच बेटी यदि कभी उसे मालूम हो गया तो उसका दिल क्या कहेगा, वह काफी दुखी हो उठेगा।

कमला कुछ बोली नही, प्रियबाबू भी चुप हो गये। आधे घण्टे तक दोनो मौन रहे। अँधेरा घिरता आ रहा था, नौकरानी कमरे मे बत्ती रखकर चली गई। कमला भी आखें पोछकर कमरे के बाहर आई गृहस्थी के कामो म जुट गई।

दूसरे दिन प्रियबाबू ने वकील को बुलवाकर कहा, मैं वसीयतनामा बदलवाना चाहता हूँ।'

वकील ने पूछा, 'क्या बदलवाना चाहते है ?'

'दामाद को च्युत कर मैं अपनी सारी सम्पत्ति लडकी के नाम कर देने की सोच रहा हूँ।'

'किसलिए ?'

इस प्रश्न की आवश्यकता नही। जैसा कहता हूँ वैसा कीजिए।'

सात

प्रियबाबू का श्राद्ध कर्म सम्पन्न होने पर जब काशीनाथ ने वसीयत देखी तो उसे तनिक भी दुख या आश्चर्य नही हुआ। ससार मे जो कुछ रोज होता है और जो कुछ होना चाहिये वही हुआ। इसमे दुखित या चकित होने की बात नही थी। फिर भी एक दिन दीवान साहब ने काशीनाथ से अकेले मे कहा 'कुवर साहब यह तो बहुत बुरा हुआ। मैंने स्वप्न मे भी नही सोचा था कि बाबू साहब ऐसी वसीयत कर जायेंगे। पहले उन्होंने जो वसीयत की थी उसमे आपको और लडकी को बराबर का हिस्सा दिया था। उन्होने उसे बदल डाला, किसकी सलाह से उन्होने ऐसा किया, कुछ समझ म ही नही आता।

काशीनाथ ने मुस्कराते हुए कहा, 'इसमे समझने की क्या बात है ?' जिसकी सम्पत्ति थी उसे मिली, उसमे मेरा क्या आपका क्या ?'

दीवान जी कुछ अचकचाकर बोले, फिर भी फिर भी।

फिर भी की तो कोई गुजाइश ही नही। सच म देखा जाय तो इस सम्पत्ति पर मेरा कोई अधिकार ही नही है। आश्चर्य की बात तो तब थी जब वे मुझे आधा दे जाते। और फिर इसमे फर्क ही क्या पडता है मुझे आधी देते, उसे पूरी दे गये-दोनो एक सी बात है। अन्तर ही क्या है इसमे ?

दीवान साहब और भी हताश हो गये। रूखी बात बनाते हुये बोले, नहीं नहीं अन्तर कुछ भी नहीं पडता। मैं तो बाबू जी के लिए कह रहा था। उनके मन की बात को मैं अच्छी तरह से समझता था, इसीलिए कह रहा था।'

'उन्होंने अपना फर्ज पूरा किया। जरा सोचिये तो औरत के लिये पति के सिवाय कोई गति नहीं मगर पति के लिए तो और भी आधार हो सकता है। मैं गरीब हूँ यकायक इतनी बडी सम्पत्ति पा जाने का परिणाम बुरा भी तो हो सकता है। शायद यही सोचकर उन्होंने वसीयत बदलवा दी हो।'

बूढा दीवान काशीनाथ को सदा से निरा मूर्ख समझता आ रहा था। आज अचानक उसके मुँह से ऐसी बुद्धिमानी की बात सुनकर उसका हृदय उन्हें धन्यवाद देने को हुआ। बुजुर्ग दीवान काशीनाथ के प्रति काफी उदार हो उठे और कमला उससे उतनी ही दूर होती गई। दिन मे सैंकडो बार वह स्वयं से पूछती 'कैसे व्यक्ति है ये। वह कुछ समझ न पाती और स्वयं में उलझ कर उसका मन कहता कुछ समझ में नहीं आया।'

हजारो कोशिशो के बावजूद वह कुछ निर्णय नहीं कर पा रही थी कि यह दो हाथ पर वाला आदमी आखिर किस चीज से बना है? उसके शरीर में मन है भी या उसे कहीं गिरवी रख दिया है? इतना तो वह भी समझती है कि दुनिया जो कुछ भी करती है वही उसका पति भी करता है। खाता है, सोता है जमींदारी की देखभाल करता है। सभी विषयो में उसकी दिलचस्पी भी है और उदासीनता भी। यह तो वह नहीं समझ पायी आज तक कि उसके पति को क्या अच्छा लगता है या किस वस्तु से उसे अत्यधिक प्रेम है। कमला जब कभी बीमार होती है तो काशीनाथ सारी रात आखो में ही काट देता है। उसके चेहरे पर इतना विषाद हृदय में स्नेह और प्रेम बढ जाता है कि घरो तोडकर बाहर निकल पडता है और जब वह अच्छी हो जाती है हिलने डोलने लगती है अथवा सामने पड जाती है तो वह बनरान लगता है अपनी धुन में रम जाता है। कई बार कमला ने रूठकर दो-दो दिन बोलना बन्द कर दिया पर कोई नतीजा नहीं निकला। काशीनाथ करीब आया और चला गया उसने न मनाया न बातें ही की। और अब कमला जब बोलने लगती तो वह भी पहले की ही भांति प्रसन्नता से बोलने लगता। वह कभी पूछता भी न कि वह दो दिनों तक बोली क्यो नहीं या नाराज क्यो थी? काफी सोच विचार के बाद कमला ने अन्त में यह फैसला किया कि वह भी

अपने उदासीन पति को जताकर रहगी कि यदि वह उसकी उपेक्षा करता ह ता वह भी उसकी परवाह नही करती । और न इतना प्यार ही करती कि कोई उसे पैरो तल कुचले और वह किसी के चरणा म लिपटी रह। पति से भेंट हो जाने पर मुह फेरकर एक आर चल देती, मानो वह यह जतलाना चाहती हो कि तुम पर अहसान करके मैंन तुम्ह अपना पति बनाया ह इसका मतलब यह नही कि तुम्हारे कदमो मे ही मेरे प्राण उनझे हुये ह इसीलिए भेंट होते ही तुमस मीठी बातें करूँगी। लेकिन मरे काम के समय सामन आजाओगे तो मैं भी तुम्हारी ओर देखूगी नही ।

जब किसी नौकर अथवा नौकरानी का वह फटकारती और सयाग से काशीनाथ के मुँह से कुछ निकल पडता तो कमला उसे सुनी अनसुनी कर देती और पहले की भाति फटकार चालू रखती जसे वह कह रही हो कि नौकर मेर हैं, नौकरानिया मेरी ह मकान मेरा है जो मेरे जी मे आयेगा करूँगी, तुम बीच मे दखल देन वाल कौन हो ?'

इन बातो से तृप्ति तो हो नही सकती ? इस प्रकार कही वासना की पूर्ति हो सकती है ? हाँ, यदि तृप्ति हो सकती ता काशीनाथ को डिगा सकती। काई कुछ भी करे वह अपने प्रशान्त एव गम्भीर चेहरे से साफ साफ समझा दता है कि म अपने आप मे निश्चित हूँ—सुमेरु पवत की भाँति तुम उस तिल मात्र डिगा नही सकती। जितना चाहो, सर पर उठा लो आधी तूफान बन पेड पौधा को तहस नहस करो किंतु मुझे मेरे पथ से डिगा नही सकती।

क्या कमला प्रेम नही करती है, पर उसमे गम्भीरता नही है। मानो लक्ष्मण रखा खीचकर कहना चाहती है कि इसके बाहर मत जाओ। और यदि जाओगे तो मुझसे सहा न जायगा। सम्भवतया मैं तुमसे तब भी प्रेम करूँगी पर तुम्हार मान की रक्षा नही करूँगी।

एक दिन बुढिया नौकरानी के सामने अपना दुखडा रोते हुए वह बोली, 'बाबूजी मुझे एक जानवर के हाथ सौप गय है।'

'कसे बटी ?'

कसे बताऊँ ? तुम सबो न मरे हाथ पाँव बाधकर मुझे कुये म क्यो नही डाल दिया ?

'कैसी बातें करती हो बेटी ?

ठीक ही तो कहती हूँ ? तुम लोग जिस काम को इतनी आसानी से कर गई क्या उसे मैं एक बार मुह से भी नही कह सकती ?

नही नही ऐसी बात नही है। वे बहुत अच्छे है लेकिन कुछ सनक जरूर है। बाप म भी थोडा-थोडा था इसीलिए तो कवर जी भी—'

तू चुप रह ! पागल की बात मुँह मे मत निकाल। बाप के पागल होने पर क्या बेटा का भी वैसा होना जरूरी है। वे पागल कतई नही हैं महज मुझ सताने के लिए ऐसा कर रहे हैं।

पति पागल है इस बात को स्वीकार करते हुये कमला के हृदय पर आघात लगा।

आज तीन दिन से काशीनाथ का पता नही था। दो दिनो तक तो कमला ने उसकी कोई खोज खबर न ली लेकिन तीसरे दिन उसने घबराकर दरवान से कहला भेजा— बाबूजी का दो दिनो से कोई पता नही तुम लोगो ने कोई खोज खबर नही ली आखिर किसलिए हो तुम लोग ?

दरवान सोचने लगा यह भी खूब रही। कौन कहाँ आया गया, यह भी भला कोई खबर रखने की बात है। बाद म खजाची से मालूम हुआ कि कुवर जी तीन हजार रुपये लेकर कही बाहर गए हुए हैं। किधर गये है कब तक लौटेंगे यह किसी को नही कह गये है।

कमला सिर पर हाथ धर कुछ सोचती रही फिर अपने पिता के वकील को बुलाकर बोली, मुझे जमीदारी सम्भालने के लिये एक योग्य आदमी की तलाश है जो सब काम सम्भाल सके, तनख्वाह जो कुछ भी हो मैं दूगी।

आठ

दिन भर वर्षा म भीगकर काशीनाथ कीचड पार करता हुआ शाम को कलकत्ता की एक सकरी गली के एक मजिले मकान म पहुँचा। उसके पास दो शीशी दवा एक डिब्बा बिस्कुट तथा चद्दर म अनार आदि कुछ फल बँधे हुए थे।

मकान के एक कमरे मे खाट पर एक रोगी पडा हुआ था। सिरहाने एक औरत उसके माथ पर हाथ फेर रही थी। काशीनाथ के पहुँचते ही वह बोली काशी भैया इतने पानी म भीगते क्या आये ? रास्ते म कही रुक गये होते ?

कैसे रुकता बहन ? पानी मे भीगने से उतना नुकसान नही हुआ जितना कही रुक जाने से होता ?

बिन्दु न विचार किया, बात ठीक ही थी इसीलिए वह चुप हो रही।

पिछले कई साला से बिन्दु जो कुछ भोगती आ रही थी उस वही जानती थी। हम लोगो न उसे मायके म ही देखा था उसके बाद नही। अब उसके बारे मे जान लेना चाहिये। जिस दिन कमला को देखन की तयारी करके भी जा नही पायी थी उसी के दूसरे दिन अपन ससुर गोपाल बाबू की गहरी बीमारी की सूचना पाकर वह ससुराल चली आई थी। उसने ससुराल पहुँच कर देखा उसके ससुर सचमुच ही बहुत बीमार थ। काफी दवा दारु की गई लेकिन गोपाल बाबू को बचाया न जा सका। बीमारी काफी बढ जान पर गोपाल बाबू बाल 'छोटी बहू को जरा बुला दो एक बार देखूगा उस।

छाटी बहू और कोई नही बिन्दुवासिनी ही थी। मरने के दो एक दिन पहले गोपाल बाबू न बिन्दु स कहा था 'बेटी यह लो चाभी। बक्स मे जो कुछ भी है तुम्हारा है।'

बिन्दु ने हाथ फलाकर उसे ले लिया। दूसरो की बहुओ ने यह समझा कि बुड्ढा मरत समय सबकुछ छोटी बहू को ही दे गया है। एक बात और थी। बीमारी की हालत मे ही गोपाल बाबू न अपने चारो लडको को बुलाकर समझाया था, देखो तुम भाइयो म जरा भी मेल नही है और तुम्हारी मा भी तुम लोगो के बीच नही है, इसलिए मेरे मरन के बाद तुम लोग एक गृहस्थी म मत रहना। इसके पहले कि तुम लोग आपस मे झगडा फसाद करो ता जो कुछ भी मेल मुरौवत बाकी है वह भी जाती रहगी। अच्छा यही होगा कि तुम लाग उसी को ले देकर अलग हो जाओ। जो कुछ म दिय जा रहा हूँ उसके अलावा थोडा बहुत कमात रहने से तुम लोगो का आसानी से गुजारा हो जायेगा।

पिता के मरने के बाद चारो भाई अलग हो गये। बिन्दु ने जब एक दिन बक्स खोला तो उसे उसमे एक 'रामायण' तथा एक महाभारत' के सिवाय और कुछ नही मिला। निराश होने पर भी उसने स्वर्गीय ससुर का वह दान सिर माथे लगा लिया। अस्पष्ट शब्दो मे उसन कहा कि यह उसके ससुर का स्नह दान है यही हमारे लिए सबसे बडा रतन है।

बिन्दु के कुछ दिन तो मज म बीते, उसके बाद मुसीबतो का ताँता शुरू हुआ। उसके पति योगेश बाबू अचानक बीमार पड गये। अपन शरीर की चिन्ता न करते हुए उसने तन-मन से पति की सेवा टहल की। जमीन रेहन रखकर इलाज का प्रबन्ध कराया लेकिन कुछ फायदा नही हुआ। गाँव मे कुछ

पडोसियो न राय दी कि कलकत्ते म इलाज कराना चाहिए। बिन्दु अपने सारे जेवर बेचकर पति को कलकत्ते लिवा ले गई। यहा भी उसका काफी इलाज कराया और जो थोडी सी जमीन बाकी बची थी, वह भी रेहन रखदी गइ। मगर मज बढता ही गया। रुपया के अभाव म समुचित इलाज न हो पाया, बाधा पड गई। बिन्दु न अपने बडे जेठ का अपनी मुश्किलें बतात हुए पत्र लिखा पर कोई परिणाम न निकला, उन्हाने पत्र का कोई उत्तर नही दिया। फिर उसन दोना छोटे जेठा को लिखा, पर उन्हान भी अपने बडे भाई का अनुकरण किया, चुप्पी लगा गय। बिन्दु न समय लिया कि अब या तो उपवास करन पडेंगे या जहर खाकर मरना पडेगा।

पत्नी का चेहरा दखकर ही योगेश बाबू ताड गये। एक दिन बडे प्यार स उसे अपने पास बिठाकर स्नेह से उसका हाथ पकडते हुए बोले, 'बिन्दु मुझे गाव ले चलो, मरना ही ह तो वहीं क्या न मरें ? यहा मरने पर ता उठान वाला भी काई नही है।'

बिन्दु ने सोचा शायद वक्त करीब आ गया है काइ अन्य उपाय भी नही है अब पति को गाव ले चलने का भी कोई उपाय नहीं। पति को ऐसी हालत म छोडकर वह मर भी तो नही सकती थी। मरना ही है तो फिर शरम लाज की क्या बात ? बहुत सोच विचार के बाद उसन लोक लाज को तिलाजलि दन हुए काशीनाथ को चिट्ठी भेजते हुए उसे सबकुछ बता दिया। बाद की घटना से तो आप सभी परिचित है।

आते समय काशीनाथ अपन साथ काफी रुपया लेता आया था उसन शहर के मशहूर डाक्टरा से राय ली। सभी ने कहा कि आबहवा बदले बिना आराम नही होगा। काशीनाथ सबको लेकर वैद्यनाथ पहुँचा। वहाँ दो महीन रहकर उसने देखा तो सबन यही समझा कि योगशबाबू खतरे से बाहर हो गय है। फिर भी वहाँ से लौटन म अभी काफी देर थी इसलिए उन्हे वही छोडकर काशीनाथ घर वापस लौट आया।

कमला से सुबह भेंट होन पर उसन पूछा, कब आये ?

रात को सक्षिप्त उत्तर दिया काशीनाथ न।

कमला चली गई अपन काम स। काशीनाथ बाहर आया और कचहरी म पहुँचा। काफी दिना बाद अचानक कुवर साहब का देखकर तमाम कर्मचारी अदब मे उठ खडे हुए। केवल एक साहबी पोशाकधारी युवक अपन काम म

व्यस्त कुरसी पर बैठा रहा। एक आगन्तुक को देखकर उसके कर्मचारियों ने उसे जो मान दिया, नये बाबू कुछ समझ नहीं पाये। काशीनाथ ने अपने हाथ से एक आराम कुर्सी खींची और बैठ गए। यह नया मैनेजर था विजय किशोर दास। कलकत्ते में बी० ए० पास किया है और बहुत ही पटु आदमी है, इसी लिये वकील विनोद बाबू ने उसे मैनेजर के पद पर नियुक्त किया है। नये मैनेजर ने काफी देर बाद काशीनाथ से पूछा 'आप किसी काम से आये हैं?'

'नहीं, काम तो कुछ भी नहीं है सिर्फ कामकाज देखने आया हूँ।'

दीवान ने बीच में हस्तक्षेप करते हुए कहा 'आप हमारे जमाई साहब हैं।'

विजयबाबू ने कुर्सी से उठते हुये प्रेम-सम्भाषण शुरू कर दिया। तभी एक नौकर ने आकर विजयबाबू से कहा 'आपको मालकिन बुला रही है।'

विजयबाबू के चले जाने पर काशीनाथ ने विस्मित होकर दीवान साहब से पूछा 'कौन साहब हैं ये?'

'नये मैनेजर।'

'किसने नियुक्त किया है?'

'बिटिया रानी ने।'

'किसलिए?'

'शायद कामकाज में बाधा पड़ रही थी इसीलिए।'

'अभी कहाँ गये हैं?'

'अन्दर कोठी में।'

काशीनाथ ने आगे कुछ पूछना उचित नहीं समझा। चुपचाप उठकर भीतर चला आया। कमरे में पहुँचकर उसने देखा कि परदे के सामने विजयबाबू खड़े हैं और पर्दे के पीछे कोई मृदु स्वर में बातें कर रहा है किसकी बात हो रही है यह समझते काशीनाथ को देर न लगी। लेकिन बिना कुछ कहे सुने और देखे वह आगे बढ़ गया।

दोपहर को कमला से उसकी फिर मुलाकात हुई। कमला ने गम्भीर होकर पूछा, 'तबियत तो ठीक है?' काशीनाथ ने हामी भरते हुये गर्दन हिला कर जवाब दिया, 'हाँ ठीक है।'

कमला फिर कुछ बोली नहीं चुपचाप चली गई। उसे गपशप करने का अब अवकाश ही कहाँ हजारों काम पड़े हैं विशेषकर जमींदारी का बोझ सर पर आ पड़ने पर उसे अब सर उठाने की फुरसत नहीं। एक दिन सबेरे काशी

नाथ ने नय मनेजर साहब को बुलवा भेजा। नौकर के माफत मनेजर न कहला भेजा, अभी फुमत नहीं ह, काम खत्म हान पर आ जाऊँगा।' उसके इस जवाब को सुनकर काशीनाथ स्वय कचहरी पहुँचे और एकात मे बुलाकर उनस कहा, आपको फुमत नही थी इसलिए खुद ही चला आया। मुझे पाच मौ रुपय आज ही चाहिय फुमत मिलन ही भिजवाने की व्यवस्था कीजियगा।'

किसलिय चाहिय ?

यह जानन की आवश्यकता नही।

मानता हूँ जरूरत नहीं लकिन मालकिन की आज्ञा के बिना कस द सकता हूँ ?

काशीनाथ ने सोचा कि बात का रुख कुछ और ही हो गया है। वह बाला, मेरा कहना ही काफी हागा। दूसरी आज्ञा की जरूरत नही समझता मैं ?

विजयबाबू न शब्दा म दृढता लान हुय कहा, 'जरूरत है। जिस तिस का रुपय दने की मनाही है।

काशीनाथ चला आया। कमला स उसन कहा, तुम नये आदमी को अलग कर दा।

किसको ?

अपन नय मनजर को ?

क्या उसका क्या कसूर है।'

मर साथ उसका व्यवहार अच्छा नही है।

क्या किया ह उसन ?

मैंन उस अपन पास बुलवाया था पर खुद न आकर उसन नौकर से कहला भेजा था, मुझे छुट्टी नही जब फुमत हागी तब आऊँगा।

कमला न हँसत हुये कहा 'हो सकता है उमे फुसत न रही हो। एसी स्थिति म कस मिलने आता ?

काशीनाथ न पत्नी की आर देखत हुय कहा माना कि काम म व्यस्त होन के कारण नही आ सका लकिन अब मैंन खुद जाकर रुपये मागे तो उसने यह क्या कहा कि मालकिन की आज्ञा के बिना नहीं दे सकता।

कमला न पूयवत मुस्करात हुय कहा, 'कितन रुपय मांग थे ?

'यही पांच मौ।

'नही दिय ?

नही । क्या तुमन मना कर दिया है ?'

'हाँ, इस तरह रुपये बरबाद करना मैं पसन्द नही करती ।

काशीनाथ, को पापाण का काशीनाथ होते हुए भी, मर्मान्तक पीडा पहुँची । इस प्रकार का व्यवहार उसके साथ पहले कभी नही हुआ था । अत्यन्त दुखी होकर उसने कहा, मुझे रुपये देना क्या उडा देना है ?

'कुछ भी हो, बरबाद करने का नाम ही उडा देना है ।'

'आवश्यकता पडने पर खर्च करने का नाम बरबाद करना नही ।

'आखिर जरूरत क्या है ?'

'किसी का देना है ।'

'देना तो है पर मिलेगे कहाँ से ? तुम्हारे पास हो तो दे दो—मैं मना नही करती ।'

काशीनाथ सन्न रह गया । य शब्द तीर की भाँति उसके कानो मे चुभने लगे । बाहर आकर उसने अपनी घडी, अँगूठी बेच दी और रुपये बैद्यनाथ रवाना कर दिए और साथ ही एक चिट्ठी लिख दी—अब मुझसे कुछ मागना मत, बहन । मेरे पास अब कुछ भी नही है ।'

उस दिन के बाद स काशीनाथ भीतर नही गया, कमला ने कुछ पूछा भी नही । इसी प्रकार कई दिन बीत गए । एक दिन नौकर ने आकर उससे कहा, आपसे एक ब्राह्मण मिलना चाहते हैं ।'

दूसरे ही क्षण काशीनाथ न ताज्जुब के साथ देखा, एक बुड्ढा ब्राह्मण हाथ म जनेऊ लिए उसके सामने खडा है और कुछ देर चुप रहने के बाद बोला, आप महान व्यक्ति हैं, ब्राह्मण का सवस्व मत छीनिये ।'

काशीनाथ ने डरते डरते पूछा 'क्या बात है ?'

ब्राह्मण बोला, भगवान का दिया आपके पास सबकुछ है, पर मेरे पास उस छोटी सी जमीन के सिवा कुछ भी नही है, उसे आप मुझसे मत छुडवाइये, कहने के साथ ही वह रोने लगा ।

व्यग्र होकर काशीनाथ ने उस ब्राह्मण का हाथ पकडकर अपने पास बिठाते हुए कहा, 'पूरा किस्सा साफ-साफ बतलाओ ।' ब्राह्मण ने गिडगिडाते हुए कहा, आप धर्मात्मा हैं, कसम खाकर कहिये कि क्षेत्रपाल वाली भूमि मेरी नही है ?'

किसने कहा है कि आपकी नही है ?

तो आखिर आपके नये मनेजर विजय बाबू ने मेरे विरुद्ध मुकदमा क्या दायर किया ह ?

मुकदमा ! मुझे ता कुछ भी नही मालूम ?

सम्मन दिखलाता हुआ बूढा ब्राह्मण वोला जब मुकदमा दायर किया ही गया है तो मैं भी लडूँगा और आपका अपना साथी बनवाऊँगा। मै गरीब सही आपके साथ लडना मुझे शोभा नही देता फिर भी भिखारी होन पर भी बिना उज्र के मैं अपनी जमीन छोडन का तैयार नही।

ब्राह्मण को क्रुद्ध होकर जात देख काशीनाथ न हाथ पकडकर उस बिठलाते हुए कहा मै आपकी भलाई के लिए हर सम्भव काशिश करूँगा, फिर आपकी आग जस मरजी हा कीजियगा।'

ब्राह्मण के चले जान पर काशीनाथ न विजय बाबू का बुलवाकर कहा, वह जमीन ता अपनी नही है ! आखिर उस ब्राह्मण का क्या सताया जा रहा है ?

मालिक का आदेश है।

काशीनाथ क्रुद्ध हाकर बाला मालिक न किसी दूसर की वस्तु हडप लेना सिखलाया है क्या ?

वह हमी लोगा की है।

मैं नही मानता वह हमारी नही।'

कुछ देर के लिए विजय बाबू चुप हा गय फिर बाल 'मुझे क्या, मै ता नौकर हूँ जसी आज्ञा मिलगी, वैसा ही तो करूँगा।'

कमला स इस विषय पर बात करन म काशीनाथ का शम लग रही थी, फिर भी उसन दृढतापूवक कहा, यह जमीन अपनी नही है ब्राह्मण का ब्रह्म स्वत्व मत छीना।

'छीन रही हूँ किसन कहा आपस ?'

किसी न भी कहा हो वह जमीन तुम्हारी अपनी नही है। विजय बाबू से कह दो कि वे झूठा मुकदमा उस निर्दोष पर न चलाय।'

कमला न अप्रसन्न होकर कहा यह विजय बाबू का दृष्टिकोण है। व अपन काम का अच्छा तरह समझत है। मैं समझती हूँ तुम्ह उनके कामा म हस्तक्षेप नही करना चाहिए।'

कई दिन बाद मुकदम की पेशी हुई। कचहरी के कटघर म खडे हाकर

काशीनाथ ने कहा, 'मैं अपने मृत ससुर प्रियनाथ बाबू के समय स ही जमीदारी की दखभाल करता आ रहा हूँ। उसके बाद भी काफी दिनो तक मैंने जमीदारी का कामकाज सम्भाला है। मुझे अच्छी तरह स मालूम है कि यह जमीन कमला देवी की नही है।'

मुकदमा हारकर मुह लटकाये विजय बाबू घर लौट आये। विपक्षी भी काशीनाथ को आशीर्वाद दता हुआ घर चला गया।

नौ

परदे के सामन खडे विजय बाबू ने मुकदमे की बातें विस्तार से बतलाते हुए उसमे अपनी आर से टीका टिप्पणी करते हुए बतलाया, सिफ कुँवर साहब के कारण हम लोग मुकदमा हार गये। इस बात को सुनकर परदे के भीतर का कमन दस गना होकर फूलने लगा। काफी देर बाद कमला न भीतर मे ही कहा आप अन्दर आइये कुछ जरूरी बातें करनी है। आदेश पाकर विजय बाबू अन्दर दाखिल हुए। काफी दर तक दोनो म धीमे धीमे बातें होती रही। कुछ देर बाद विजय बाबू उठकर बाहर आय।

आज काफी दिनो बाद भोजन के समय कमला काशीनाथ के करीब आकर बैठ गई। उसकी पहले जैसी उग्र आकृति नही थी, बल्कि वह पूण शान्त तथा गम्भीर थी। कुछ क्षणा की चुप्पी तोडते हुए कमला ने कहा, घर के भेदी विभीषण के कारण सोने की लङ्का भस्म हो गयी थी, इसे जानत हो न ? खाना खात हुए काशीनाथ न कहा हा जानता हूँ।'

कमला ने ताना देत हुए कहा 'जानोगे क्या नही वह भी तो दूसरो के अन्न पर ही पला था।'

काशीनाथ कुछ बोला नही।

कुछ देर तक चुप रहने के बाद कमला फिर बोली, 'इसी से सोचती हूँ कि जा हमशा दूसरा की रोटिया पर इतना बडा हुआ है, अब भी जिसे दूसरो की रोटियाँ खाए बिना लाघने की स्थिति आ सकती है उसे सच बोलने की आकाँक्षा क्यो है और इतना बडा गुमान किस बूते पर है ?'

काशीनाथ बिना प्रतिवाद के एक के बाद दूसरा ग्रास मुह मे खाता रहा।

ताना देती हुई कमला बाली कसाई भी जिसका खाता है उसकी गदन पर छुरा चलान म हिचकता है।

कमला ।'

जो अपनी स्त्री के अन्न पर जीवित है उसके लिए इतना तेज शोभा नही देता । दिन व-दिन जसा तुम्हार व्यवहार होता जा रहा है, उस बात पर यदि आँखो का लिहाज न होता ।'

काशीनाथ ने हँसकर कहा, 'तो शायद घर से बाहर निकाल देती । यही कहना चाहती हो न !

हा ऐसा ही करती ।

आधी खायी थाली को एक आर हटाते हुए काशीनाथ ने कमला की आर गौर से देखते हुए कहा, 'कमला मैं तुम पर कभी गुस्सा नही हुआ था, कभी तुम्ह कडी बात नही कही, लेकिन आज मुझे जो कुछ भी कह रही हा शायद किसी ने मुझसे न कहा होगा । आज से मैं तुम्हारी रोटी नही खाऊँगा । शायद मेरे ऐसा करन से तुम्ह सुख पहुँच सके ।' कहने के साथ ही काशीनाथ उठ खडा हुआ । कमला भी गव से उठ खडी हुई और कहने लगी 'अगर सत्यवादी हो ता अपनी प्रतिज्ञा मत भूलना ।

नही भूलूगा, लेकिन तुमने जो बातें कही हैं एक दिन वे ही तुम्हारी दुश्मन बन जायेंगी । मैंने तो अपनी ओर से तुम्हे माफ कर दिया, लेकिन क्या भगवान तुम्ह माफ करेगा ?'

कमला और भी भुन उठी और बोली, तुम्हारे श्राप से मेरा कुछ भी नही बनता विगडता ।

एसा ही हा । भगवान जानता है मैंने तुम्ह श्राप नही दिया है, बल्कि आशीर्वाद दता हूँ कि तुम सुमति रखती हुई खुश रहो ।

वाहर आकर काशीनाथ ने व्याकरण, साहित्य दशन स्मृति, एक-एक कर सभी कुछ फाडकर फेंक दिया । नौकरो को अपना सबकुछ बाँट दिया ।

कमला जाग रही थी लेकिन चुपचाप पडी रही । किवाड खुले थे उन्हें ढकेलता हुआ काशीनाथ भीतर पहुँचा । कमरे मे पहुँचकर उसने देखा कमला आँखें मीचे हुए पलग पर पडी है । करीब बठकर उसके माथ पर हाथ फरते हुइ उसा फिर पुकारा कमला ! लेकिन कोई उत्तर नही । अन्त म उसने चुपचाप बाहर निकलते हुए कहा, जाते समय तुम्ह आशीर्वाद दिए जाता हूँ ।

काशीनाथ के चले जाने पर कमला बिस्तर पर से उठी और खिडकी पर आ बठी । सुबह होते देख वह बिस्तर पर पुन आकर लेट गई । नीद खुलने

पर उसन देखा दिन काफी चढ आया है और घर म शोरगुल शुरू हो गया है। अभी वह जाग भी नही पाई थी कि तभी एक नौकरानी दौडी-दौडी आई और कहन लगी, 'बडा अनथ हुआ जीजी, किसी न कुँवर जी का खून कर डाला।'

भरी कडाही खौलता तेल पडने पर जिस तरह कोई छटपटा उठना है, कमला भी उसी तरह छटपटाती हुई उतरकर आई और बोली, 'क्या कहा, खून कर डाला ?'

नौकरानी बोली, 'हाँ, बिल्कुल।'

वस्त्रहीन दशा में जब कमला बाहर वाले कमरे में पहुँची तो देखा काशी नाथ का चेतनाहीन निर्जीव शरीर खून स लथपथ सोफे पर पडा हुआ है, तमाम शरीर पर धूल और खून जम गई थी। नाक, मुह और कान से निकलता हुआ खून जहा की तहाँ सूख गया था। कमला यकायक चीख उठी और बेहोश होकर गिर पडी।

गाँव भर मे तेजी से खबर फैल गई कि जमीदार के जमाई अँधेरी रात में कहा अकेले जा रहे थे कि तभी किसी न उनका खून कर डाला।

दा दिन बाद होश वापस लौटने पर पुलिस के दरो।ा ने पूछा, 'बाबू किसन आपकी यह दशा बना दी है ?'

काशीनाथ ने ऊपर की ओर सकेत करते हुए कहा, 'उन्होंने।'

वृद्ध नायब भी वही खडे थे, उनकी आँखो से आँसू गिरने लगे। दरोगा ने फिर पूछा 'क्या आप पहचान नही सके उन लोगो को ?'

काशीनाथ न टूटे शब्दो मे कहा 'पहचानता हूँ।'

दरोगा ने पुन बेचैनी से पूछा, कौन थे वे लोग ?'

काशीनाथ ने सहमते हुए कहा 'मैं गलत कह गया। उन लोगो को नही पहचानता।'

दरोगा ने और भी जानने की कोशिश की। दो चार बार पूछा भी किन्तु परिणाम कुछ भी नही निकला। काशीनाथ ने आगे कुछ बतलाया ही नही। दूसरे दिन उसने नायब को बुलाकर कहा 'बैद्यनाथ मे मेरी बहन बिन्दुवासिनी है मै उसे देखना चाहता हूँ एक बार, आप किसी को भेजकर बुलवाइये उस।'

तीन दिन बाद बिन्दुवासिनी और योगेश बाबू आ गए। बिन्दु जरा कडे हृदय की औरत थी कमला की तरह नही इसलिए काशीनाथ की दशा देखकर

न तो चिल्लाई औ' न वेहोश ही हुई। आखा के आँसू पोंटकर केवल भर्राये कण्ठ से वोली काशी भैया, किसन तुम्हारी यह दशा वना दी ?

मैं क्या जानू ?

किमी पर शक होता है ?

'इसे न पूछा वहन।'

वि'दु खामोशी स काशीनाथ के चेहरे की ओर देखती रही।

सभी न सोच लिया था कि इतनी गम्भीर चोट खाकर काशीनाथ का वचना असम्भव है। मौत भी धीरे धीरे नजदीक आन लगी। काफी रात बीन वुखार के वेग मे तडपता हुआ वह चिल्लाया, कमला यह काम तुमने ना नही कराया ?'

विन्दु न काशीनाथ क करीव मुह ले जाकर पूछा, यह क्या कह रहे हा भया ?'

काशीनाथ न वि'दु या कमला समझकर उसके गले म वाहु डालत हुए कहा, मैं मरकर भी सुखी नही हा सकता कमला तुम एक वार केवल यह कह दा कि यह काम तुम्हारे द्वारा नही हुआ।

दस

होश म वेहोशी, नीद स घिरी अवस्था, कमला के दो-तीन दिन यू ही बीत गये। डाक्टरो को उसके वार म आशका हो उठी थी। इसी कारण लाग उसे सावधानी से घेरे हुए वैठे थे। लगातार दो दिन की अनवरत कोशिश आ' सेवा टहल के वाद जव उस होश आया तो उसे विठाया गया।

आखें खोलने पर कमला न देखा कि एक अपरिचिता उसका सिर अपनी गाद म लिए वठी है वह विल्कुल अपरिचित थी उसके लिए। उसन उससे पूछा, 'तुम कौन हो ?

उस अपरिचिता न कहा, मैं बिन्दु हूँ तुम्हारे पति की वहन।'

काफी दर तक कमला खामोश सी उसके चेहरे की ओर देखती रहा उसके वाद इशारे स कमरे म वठ हुए लागा को वाहर चले जाने को कहा फिर धीरे स वाली, मैं कव स २ स तरह वहोश पडी हूँ ननद जी ?

बिन्दु बोली, परसो सुबह तुम बेहोश होकर गिर पडी थी भाभी, तव स तुम्ह होश नही आया।'

'परसो। चौंककर कमला वोली, उसके वाद चुपचाप सिर झुकाय वठी

रही। उसके शरीर म कोई हरकत न पाकर उसने घबराकर उसका दाहिना हाथ अपने हाथ मे लेते हुए पुकारा भाभी।'

कमला मुह नीचा किये बैठी रही कुछ उत्तर नही दिया उसने। फिर बोली, 'डरो मत ननद जी, अब नही बेहोश हाऊँगी ?'

बिन्दु ताड गई कि वह अन्दर ही अन्दर अपने को होश म रखने की भर पूर कोशिश कर रही है। इसीलिए वह धीरज रखकर खामोश बठी रही। इस प्रकार कुछ देर और बीतने पर कमला उससे बातें करने लगी। बोली 'मुझे लकर तुम दो दिनो से यू ही बैठी हो ननद जी आखिर किसलिए तुम मेरी इतनी सेवा कर रही हो ? मैं स्वय किसी की इतनी सेवा नही कर सकती।

बिन्दु ने उसकी बातो को ठीक से समझा नही बोली क्यो सेवा न करूँ क्या, भाभी तुम कोई पराई हो गया ? हम लोगो की जान पहचान नही थी फिर भी भैया की भाति तुम भी तो मेरी अपनी हो। उनकी तरह तुम्हारी सेवा करना भी तो मेरा फज है। भाभी, तुम नही जानती लेकिन जब से यहाँ आई हूँ तबसे मेरे ये दिन कसे बीते ह इसे तो भगवान ही जानता है। एक बार भैया के कमरे म एक बार तुम्हारे—जब भैया के पास होती तो तुम्हारे लिए जी छटपटाता और जब तुम्हारे पास होती तो भैया के लिए। ऐसी थी स्थिति। आज शाम से भैया की तबियत कुछ सम्भली है उन्ह आराम म सोते देख तुम्हारे पास कुछ देर के लिए चन से बैठ सकी हूँ। इस मुसीबत से भैया बच जायेंगे, किसी को इस बात की उम्मीद थोडे ही थी भाभी।

कमला तुरन्त पूछ बैठी, क्या बच गये है ?

बिन्दु ने गरदन हिलाते हुए कहा, हा, बचते क्यो न ?' डाक्टर ने बताया है अब खतरे की कोई बात नही, बुखार काफी उतर गया है।'

कमला का चेहरा अचानक पल भर को चमका फिर मुर्दे की भाति मुरझा गया। सिर से पैर तक उसका सारा शरीर काप उठा, और दूसरे ही क्षण वह मूर्छित होकर बिन्दु की गोद म लुढक पडी।

बिन्दु ने कोई शोर नही किया न ही किसी को बुलाया, बल्कि उसका सर गोद मे रखकर पखा झलती रही। इस स्त्री मे कितना स्वाभाविक धैय था इसकी परीक्षा तो उसके पति की बीमारी म ही हो गई थी। मृत्यु उसके पति के सिरहाने आकर बैठ गई थी फिर भी वह उसे हिला न पाई। आखिर वह कमला के लिए क्यो विचलित होती ! कुछ देर बाद होश मे आने पर कमला

ने देखा कि वह वहा है। इसके बाद पुन विन्दु की गोद म औंधी पडकर अपनी छाती मसोसकर रोने लगी।

वह करुण क्रन्दन इतना गाढा और गहरा था कि विन्दु की गोद म ही सूखकर जम गया उसकी एक हल्की सी तरङ्ग भी किसी के कानो म नही पहुँची। बाहर सन्नाटा रात का अँधियारा गहरा होन लगा था और भीतर मद्धिम प्रकाश से आलोकित कमरे म बैठी तरुणिया म स एक अपने घायल हृदय की सपूण ज्वाला को दूसरे की गम्भीर शान्त गोद म उडेल रही थी।

अन्त म शान्त होकर कमला ने पति के विषय म अनक बातें पूछी, लेकिन उसने स्वय जाकर उस देख आने की इच्छा क्या नही प्रकट की, काफी सोचने के बाद भी विन्दु कुछ निश्चय नही कर पाई। उसन एक बार यह भी समझने की चेष्टा की कि शायद बडे लोगो के यहाँ एसी ही शिक्षा एव सस्कार होते होंगे। सेवा शुश्रूषा का भार नौकरो पर छोडकर बाहर म ही खबर लेते रहने का नियम होगा शायद। अचानक कमला ने पूछा 'अच्छा यह तो बताओ ननद जी तुम्हारे भैया ने चेतना लौटन पर मेरे बारे म कुछ पूछा नही ?

हा पूछा था सक्षिप्त उत्तर दकर विन्दु चुप रह गई। कमला ताड गई लेकिन कोई प्रश्न न करके वह व्याकुल नजरो स विन्दु के मुख की ओर निहारती रही।

कुछ देर चुप रहने के बाद विन्दु बोली होश म आने पर भैया न मुझे तुम जानकर गले म बाह डाल दी और चिल्लाकर पूछा था मैं मरकर भी सुखी नही हो सकता कमला तुम एक बार केवल यह कह दो कि यह काम तुम्हारे द्वारा नही हुआ।

कमला न सास रोके हुए कहा फिर क्या कहा ?

विन्दु ने कहा, मैं नही जानती भाभी, किस काम के लिए पूछ रहे थे व।

मुझे मालूम है ननद जी व क्या जानना चाहते है।' यह कहती हुई कमला एकदम सीधी बैठ गई।

बिन्दु ने कमला का हाथ पकडते हुए कहा 'तुम भैया के कमरे म मत जाओ भाभी।

क्यों किसलिए न जाऊँ ?

डाक्टर ने मना किया है तुम्हार जान स नुकसान हो सकता है।'

मेरा नुक्सान मुझसे अधिक डाक्टर नही समझ पायेगा ननद जी म जरूर जाऊँगी। नीद खुल जाने पर अगर वे कुछ जानना चाहें तो मुझे ही ता जवाव देना पडेगा।' कहने के साथ ही उसने भावावेश मे बिन्दु का हाथ पकड लिया और करुण स्वर मे बोली, 'मैं जीवन भर सिर नही उठा सकती। मुझे एक बार उनके पास जाने दो।'

उसके बाद कमला मन ही मन सोचने लगी, भगवान यदि तुमने मेरी सुहाग चूडियो को बचा लिया है तो अब सच झूठ का फैसला करके फिर म उन्हे मत छीन लेना प्रभु। दण्ड अभी खत्म हो कहाँ हुआ वह ज्या का त्यो है। सिर्फ इतना करो नाथ कि मैं तुम्हारा सारा कठोर दण्ड हँसती हुई अपने सिर माथे ले लूँ, केवल मेरा यह छोटा सा रास्ता मत बन्द कर देना।

पति के कमरे मे घुसते ही कमला उद्विग्न हो उठी। उपवास कमजोर शरीर दो दिनो की कमजोरी न सम्भाल पाने के कारण पति के चरणो पर गिर पडी।

काशीनाथ अभी जाग रहा था। उसे लगा कि कोई उसके पैरो के करीब बिस्तर पर आ गिरा है, लेकिन गर्दन उठाकर देखने की शक्ति नही थी उसमे, अत उसने लेटे ही लेटे पूछा, 'कौन है बिन्दु ?'

बिन्दु बोली, 'नही भैया, भाभी है।

कमला, तुम किसलिये यहा आई हो ?

सिरहाने बैठी बिन्दु ने मुस्कराते हुए कहा, 'अपने को सम्भाल नही पाई बिचारी, अत चक्कर खाकर गिर पडी भैया।'

काशीनाथ यह सुनकर चुप हो गया। बिन्दु ने पुन खामोशी तोडते हुए कहा मैंने आज रात इन्हे कमरे म आने को मना किया था। मैं जानती थी कि दो दिनो की बेहोशी के बाद जिसे होश आया हो वह अपने को काबू म नही कर सकती।'

पति के दोनो पैरो के बीच मुँह छिपाये कमला, निश्चेत सी पडी रही उसके लगातार गिरते समय आँसुओ के स्पर्श को काशीनाथ स्वय अपने ठण्डे पाँवो म महसूस कर रहा था। उसने धीमी आवाज म कहा 'यहा न आना ही अच्छा था इसके लिए, बहन।'

कमला से आँखें मिलते पर उसके नेत्र भर आए, आँसुओ को पोछते हुए उसने कहा 'अच्छा तो था भया, लेकिन वैसा अच्छा कोई कर पाये तब

न। तुम किसी तरह जल्दी अच्छे हो जाओ यह वे य दिन किस तरह से बीत हैं इसे मैं जानती हूँ या ईश्वर जानता है। शायद वह खुद भी नहीं जानती।

भगवान का नाम सुनकर काशीनाथ ने नेत्र मूँद लिए और उसे ऐसा लगा कि ससार के समस्त नर नारियों के अन्तर्यामी प्रभु चिरकाल से उसके हृदय पर अधिष्ठित हैं। क्षणभर के लिए वह प्रभु के चरणों में उस प्रश्न का रखकर उत्तर की प्रतीक्षा करता रहा। कुछ देर बाद उसने आँखें खोलीं और बोला मेरे प्राणों को अब कोई खतरा नहीं मिला आओ उठा।'

बिन्दु बोली भैया तुम मुझसे जो कुछ पूछ रहे थे भाभी उसी का उत्तर देने आई है।

काशीनाथ के शुष्क होंठों पर मुस्कराहट की रेखा दौड़ गई उसने सहज भाव से वह डाला 'अब किसी को कुछ भी नहीं कहना पड़ेगा बिन्दु इनकी दो दिन की बेहोशी ही मे जवाब मिल गया है। यह कहने के साथ ही बाँये हाथ पर जोर देकर वह उठ बैठा। हाथ से कमला की ठुड्डी को तकिए से ऊपर उठाने की कोशिश करता हुआ बोला कमला !'

कमला निरुत्तर रही, उसने भी जोर से पैरों में मुँह छिपा लिया। उसकी आँखों से आँसुओं की अविरल धारा बहती रही।

बिंदु ने घबराते हुए कहा, तुम उठो मत भैया डाक्टर मना कर गए हैं और अगर—

काशीनाथ ने मुस्कराते हुए कहा डाक्टर कुछ भी कहे बहन लेकिन अब डरने की कोई जरूरत नहीं। इस आसन्न संकट से तुम लोगों ने मुझे बचा लिया।

कुछ क्षणों के बाद काशीनाथ कमला के बिखरे हुए बालों को अपनी उंगलियों में उलझा रहा कि तभी थक कर लेट गया।

बोझ

एक

विवाह

सागरपुर मे खूब धूमधाम है। नगाडो और नौवत की धूम से गाव म जमे गरमी आ गई है। हफ्ते भर से यहा जो ऊधम हो रहा है उससे आसपास के चार पाच कोस के सभी गावो के लोग परिचित है। इस राजसूय यज्ञ मे ढाल नगाडा का मेला नौवतवाला का प्रदर्शन और कासे के वाजे वाला का एसा समा बँधा था कि गाववालो ने इसके पहले ऐसा जशन कभी न देखा था। मनुष्य के आनन्द कोलाहल म तरह तरह के वाजे वालो ने जो वृद्धि कर दी है, और इससे जो हगामा पैदा हो गया है उससे गाव का पशु-समाज बहुत नाराज है, खास कर गाय और बछडे। ढोल नगाडा के भयानक शोर स उनकी मम पीडा की सीमा नही रह गई। इस प्रकार के भयकर समारोह का बहुत छोटा सा कारण था—चौदह साल के एक नावालिग लडके का विवाह! सागर पुर के दानी मानी जमीदार श्रीमान हरदेव मित्र के इकलौत बेटे के विवाह के लिए ही यह धमधाम है। हरदेव मित्र काफी वडे आदमी ह। उनकी आय भी पच्चीस छब्वीस हजार रुपय सालना की है। बेटे का नाम है श्रीमान सत्येन्द्र कुमार मित्र और वह हेयर साहब के स्कूल मे मट्रिक क्लास मे पढ रहा है। इतनी कम उम्र म ही विवाह हो रहा है। इसका एकमात्र कारण है कि बेटे सत्येन्द्र मित्र की मा की हार्दिक इच्छा है कि वे अपने एकमात्र बेटे की वहू का मुह जितनी जल्दी हो सके देखलें।

और वदमान जिले के अन्तगत दिलजानपुर के जमीदार श्रीयुत् कामाख्या चरण चौधरी की बेटी, सरला के साथ श्रीमान् सत्येन्द्र मित्र का विवाह हो गया।

छोटी सी सुन्दर, गोरी गारी वहू थी। सत्येन्द्र वहुत ही प्रसन्न है।

सुन्दर, छोटी सी दस साल की गुडिया जैसी वहू का मुँह देखकर सत्येन्द्र की मा की चिर अभिलाषा पूरी हुई वह वहुत प्रसन्न हुइ। और ब्याह के दूसर साल ही हरदेव वावू बहू को विदा कराकर लिवा लाए। इतनी जल्दी का कारण था, सत्येन्द्र की मा की इच्छा थी कि बहू मायके न रहे। वे कभी कभी कहती थी— ब्याह के बाद वहू को मायके म नही ससुराल मे रहना चाहिये। उनकी राय को बुरा भी नही कहा जा सकता।

सत्येंद्र की पढाई की सुविधा के लिए हरदेव बाबू सपत्नीक कलकत्ता म ही रहत थे। परला का भी कलकत्ता आन पडा। कम उमर की बहू थी सरला अत वह बिना शरमाए अपने ससुर हरदेव बाबू से बोलती भी थी। यह नहीं सत्येन्द्र की उपस्थिति म भी वह सास से बातचीत करती थी। सास ससुर को इसम आनन्द ही मिलता। दुख की बात भी क्या थी ?

थोडे दिनो के बाद कामाख्या बाबू सरला को बुला ले गए। एक दो महीना बीतन पर एक दिन बहुत गुस्सा होकर सत्येन्द्र ने कहा—'किताबो पर कितनी गद जम गई है। दवात की स्याही भी सूख गई है। घर म कोई भी ऐसा नहीं कि इनकी चिन्ता करे, देखे भाल।'

बात माँ की समझ मे आ गई। उसने यह बात हरदेव बाबू के कानो तक पहुँचा दी और उन्होने हँसकर कार्यवाही की कि बहू को विदा कर लान क लिए आदमी भेज दिया। समधी के नाम एक चिठ्ठी भी दी। लिखा था—यहा घर मे बडा झझट, एक उपद्रव खडा हो गया है। बहू के आए बगर यह शायद शान्त न होगा। इसलिए फौरन ही बहू को बिदा कर दीजिएगा।

सरला को आना ही पडा। सत्येन्द्र की दख रेख व छोटे मोटे काम वही किया करती थी। किताबो को झाड पोछकर ठीक-ठीक स रखती, कालेज जान के कपडे ठीक रखती। वह बहुत सतक रहती कि कही जल्दी म कमीज की दो बाहो म दो तरह के बटन न लग जाएँ खाने म देर न हो जाय, दोनो पाव के जूते न बदल जाएँ। इन सब बातो की फिक्र सरला ही करती। सरला के न रहन पर यह सभी गडबडिया हा जाती थी। अत सरला ही यह सब अपन ऊपर लादे रहती क्योकि किसी और के किये काम सत्येन्द्र को भाते भी न थे।

दो
सरला का देहान्त

सरला की बडी बहन है सुशीला। उसके बच्चे का अन्नप्राशन है। इसी लिए कामाख्या बाबू अपने नाती के अन्नप्राशन के उत्सव के लिए सरला को विदा करान कलकत्ते आए हैं।

सुशीला ने सरला व सत्येन्द्र के नाम निमत्रण के साथ विशेष अनुरोध कर के बुलाने का पत्र भी भेजा था। सरला इधर तीन साल स अपनी मायके गई भी नही थी। सत्येन्द्र भी जान को राजी हो गया और बहुत प्रसन्नतापूर्वक कामाख्या बाबू बेटी दामाद के साथ वापस हुए।

सरला की माँ इतने दिनो बाद बेटी व दामाद को देखकर बहुत ही खुश हुई। सुशीला ने भी आकर प्रसन्नता के कारण दाना को बहुत सी बातें कर प्रसन्न कर दिया।

अन्नप्राशन का शुभ काय बिना किसी बाधा के बीत जाने पर सत्येन्द्र न घर वापस आना चाहा। सास न इस प्रस्ताव का किसी तरह न माना और कहा, इतने दिनो बाद तो आना हुआ है। कुछ दिन और ठहर लो तब जाना।'

सरला ने भी रोका, सत्येन्द्र दो चार दिनो के लिए और ठहर गया। फिर दो चार दिन भी गुजर गए। फिर भी सरला ने जाने की अनुमति न दी। लकिन बिना जाए काम भी कैसे चलता। पढाई लिखाई का काफी नुकसान होगा। इम्तहान भी पास ही है। चलते समय सरला ने प्रश्न किया, मुझे लिवाने कब आओगे ?'

जब भी आना चाहो ।'

तो दस बारह दिन बाद ही लिवा ले चलना।'

सुनकर सत्येन्द्र की खुशी का ठिकाना न रहा। सरला से उसन इतनी आशा न की थी। सरला बहुत रोई। रोते रोत पति को बिदा करते समय कहा, 'दखो मेरे बारे मे चिन्ता मत करना। और हाँ, रात को बहुत देर तक जगकर पढकर बीमार मत हो जाना।'

रात को दस बजे से अधिक देर तक न पढ़ने की सरला ने अपन सिर की कसम दिलाई। और न जाने कैसा सूना सूना सा मन लेकर सत्येन्द्र कलकत्ता आया।

सत्येन्द्र एक किताब खोले बठा था। लेकिन मन मे कोई दूसरा ही द्वन्द मचा था। सत्येन्द्र ने गिना तो पता लगा कि दिन भर छब्बीस लाइनें पढी हैं उसने, दुखी होकर सोचा कि ऐसे तो फेल हाना निश्चित है। फिर दुख का स्थान क्रोध ने ले लिया। उसे रह रहकर सरला पर ही क्रोध आ रहा था। उसी के कारण यह सब है। कलकत्ता आए पाच दिन हुए फिर पढाई शुरू न हुई। पहले तो जब वह रहती थी तो उसकी मौजूदगी के कारण नही पढ सकता था। क्योंकि दस बजते ही वह बत्ती बुझा देती थी। सोचा था कि वह नहीं रहेगी तो अच्छी तरह पढाई होगी लेकिन यह तो उल्टा ही हुआ। सोचा, कल ही लिवाने चला जाऊँगा। इसमे शम की क्या बात है। शम के लिए क्या फेल ही हो जाऊँ ?

सत्येंद्र उसे बुलाने का कोई न कोई बहाना साच रहा था। साचता था कि कैसे वहा जाय। लज्जा की वात थी। उसे ताज्जुब था कि उस इतना प्रेम कस हो गया दो दिनो म ही

इसी समय नौकर न एक तार लाकर दिया। सत्येन्द्र का महान आश्चय हुआ। उसे सोचने का समय ही न था कि तार कहाँ से आया। जल्दी से लिफाफा खोला और पढत ही हृदय काप गया। उसका सिर एकाएक चक्कर खान लगा। सरला बीमार ह।

लेकिन उसी दिन हरदेव बाबू सत्येन्द्र के साथ दिलजानपुर के लिए रवाना हो गए।

कामख्या बाबू मकान के बाहर ही मिल। उन्हे दखत ही हरदेव बाबू न पूछा— मेरी बहू की कसी तबियत है अब ?

हरदेव बाबू न भीतर जाकर देखा। एक दिन म ही सरला की यह दशा कि देखकर पहचाना भी नही जाता। उसे विसूचिका रोग हो गया था। आँखें जस गढ्ढे म धस गई थी। कमल की तरह खिल रहने वाले चेहर पर जसे स्याही पुत गई हा। अनुभवी हरदेव बाबू का समझते देर न लगी कि हालत अच्छी न थी। दुखी हो आखें पाछत हुए पुकारा, 'बेटी सरला !'

सरला ने आवाज सुनत ही फौरन आँखें खाल दी। अभी उसे पूरी तरह चेतना थी।

'कैसा जी है बेटी ?

अच्छी ता हूँ।'

दोना ही एक दूसरे की वात समझ गए। जस उनम आपसी समझौता हा। जब सब लोग वहा से हट गए तो सत्येन्द्र सरला के पास जाकर बैठा। घबडाहट और कष्ट के कारण उससे बोला न जाता था। सूने हुए गले की भरभराई आवाज स उसन पुकारा— सरला !'

गला चाह सूखा हा या स्वर बैठा हा। इसस भला क्या अन्तर ! आखिर है ता वही चिरपरिचित आवाज, वही प्यार की पुकार-सरला ! क्या इस आवाज की पहचान मे भी गलती हो सकती है सरला ने आखे खोली और देखा। पहल ही हरदेव बाबू को देखकर उस विश्वस हा गया था कि सत्येन्द्र भी जरूर आया होगा। सत्येन्द्र का दखते ही जस वह सबकुछ भूल गई। उसकी पति म छेडछाड व मजाक करन की बहुत आदत थी। उसन तत्काल ही हँसकर पूछा, क्या लिवाने आए हो ?

सत्येन्द्र का गला रुँध गया था। किसी तरह अब तक वह आँसुओ को रोके हुए था। सरला की दशा देखकर उसका धैर्य का बाँध टूट सा गया। जो कि सत्येन्द्र जानता था कि इस समय रोना नही चाहिए लेकिन बेचारी आखो को इतना ज्ञान कहाँ? एक के बाद एक बूद के बाद बूद आसू टपकने लगे। वे आज सरला के अगो मे समा जाना चाहते थे? उन्हे क्या पहले ऐसा योग मिला है? नही, कभी नही मिला। सत्येन्द्र या सरला के लिए क्या वे इस मौके को छोड दें? और इसके पहले सरला ने भी कभी पति को रोते न देखा था। वह भी धधककर रो पडी। बहुत देर बाद आँखें पोछकर बोली—छि छि रोते हो? मरदो को क्या रोना चाहिये?

यह क्या? सरला तो ठीक ही समझी। चाहे भीतर की आग से जलकर वे सूखकर काँटा हो जाएँ पर एक भी बूँद बाहर न टपके। आँसू तो औरतो के हिस्से मे है न। पुरुषो को उसे छूने का अधिकार नही है। मन के कष्ट से चाहे तिल तिल जल जाओ पर रोने का अधिकार नही। रोओगे तो औरत हो जाओगे। यह व्यवस्था क्या तुम्ही लोगो के लिए है? सरला ने सत्येन्द्र का एक हाथ अपने हाथ मे लेकर उसे दबाते हुए कहा, क्या तुम दूसरा जन्म होने की बात मानते हो?

रोकर सत्येन्द्र ने जवाब दिया 'पहले की तो नही जानता लेकिन आज से पूरी तरह मानूगा।'

सुनकर सरला के चेहरे पर हँसी की एक रेखा खिच गई।

दवा का समय हो गया था। हरिदेव बाबू कामाख्या बाबू व डाक्टर साहब, तीनो एक साथ कमरे मे आए। डाक्टर ने नाडी की जाच करके कहा, 'आशा तो बहुत कम है। आगे भगवान की मरजी।

और भगवान की मरजी से ही दूसरे दिन सबेरे ही सात बजे के लगभग सरला का देहान्त हो गया।

विवश सत्येन्द्र उसी शाम पिता के साथ कलकत्ता लौट गया।

तीन

दूसरा विवाह

क्या से क्या हो गया! कहा तो राज शय्या पर सोकर इन्द्र के सुख का थोडा थोडा अनुभव होना शुरू हुआ था कि अचानक किसी ने झिझकारे कर

स पढाई करके वह अच्छी तरह इम्तहान की तयारी कर सकता ह। शहर क तमाम शार शराब म पढाई नही होती, सत्येन्द्र भी अब जैसे पहले स बदल गया। उसका चेहरा देखकर लगता था जस जमाने स उसे खाने को ही नही मिला है। या जैसे किसी लम्बी बीमारी स वह अभी उठा हो। क्षीणकाय, निबल दुबल।

अक्सर दोपहर को कमरे का दरवाजा बद करके सत्येन्द्र दीवार पर टगी तस्वीरें झाडा पाछा करता, अपनी बिखरी किताबे सजाता, हारमोनियम का ढक्कन उतारकर साफ करता। सरला की साफ सुथरी किताबो का भी झाडता पाछता। खूब अच्छे और रगीन कागजा पर सरला को चिट्ठी लिखता और ऊटपटाग पते लिखकर लिफाफो को एक बक्से मे जमा करता जाता।

सत्येन्द्र! तुम अकेले ही अभागे नही हो! न जान तुम जस कितन ही अभागो की तकदीर तुम्हारी ही तरह कच्ची उम्र म ही जलकर खाक हो जाती है। लकिन सभी तुम्हारी तरह पागल नही हा जात। होशियार हो जाओ सत्येन्द्र! हर चीज की एक सीमा हाती है। स्वर्गीय प्रम की भी एक सीमा निश्चित है। अगर सीमा का पार कर जाओगे ता कष्ट के भागी होग। कोई किसी का नही होता।

सत्येन्द्र की माता बडी होशियार हैं। एक दिन उन्हान पति स कहा, देखत हो जी! हमारा सत्येन्द्र कैसा हाता जा रहा है?

'देखता तो हूँ। पर किया क्या जाए?

दूसरा विवाह कर दो, अच्छी सुदर बहू आएगी तो हमारा सत्य फिर बोलने चालन लगेगा। हँसन लगगा।'

उसी दिन जब सत्येन्द्र खाना खान उठा तो मा ने बात चलाई, 'मरी बात मान जा बटा।

क्या?'

तरा मैं फिर स विवाह करूँगी।'

सत्येन्द्र के चेहरे पर फीकी हँसी फल गई। बाला, 'यह बात है! ता इसी उम्र म यह सब अब क्या हागा!

मा न अपनी आखा म पहले स ही आँसू जुटा रखे थे—आसू लुढकाकर उन्ह पोछत हुए उसने कहा 'अर बटा! इक्कीस की उम्र भी क्या कोई उम्र

है। हा सरला की याद आने पर यह बात करने का जी जरूर नही चाहता लेकिन तेरी भी दशा अब मुझसे नही देखी जाती।

दूसरे ही दिन हरदेव बाबू ने भी सत्येन्द्र को बुलाया और यही बात कही। सत्येन्द्र बोला नहीं चुप हो रहा। हरदेव बाबू पुरानी कहावत के अनुसार समझ गए—मौन सम्मति का ही लक्षण है।

सत्येन्द्र अपने कमरे में आया और सरला की तसवीर के सामने खडे होकर बोला सुनती हो सरला! मेरा विवाह होगा!

तसवीर बोली नही। खामोश रही। बोलती भी तो क्या कहती। यही न कि 'अच्छी बात है। और भला क्या कहती!

चार

नलिनी

सत्येन्द्र का दूसरा विवाह कलकत्ते में हुआ। शुभ दृष्टि की रस्म के समय सत्येन्द्र ने देखा लडकी का बहुत सुन्दर चेहरा था!

पर होगा! सुन्दर होने दो। सोचा सिर पर एक बोझ आ पडा है।

विवाह के बाद दो साल तक नलिनी ससुराल नही आई नैहर में ही रही। ससुराल, तीसरे वर्ष आई। चांद सी बहू का चेहरा देखकर सास ने सरला को भुलाने की कोशिश की। घर गृहस्थी एक बार फिर सजाने की कोशिश की लेकिन रात को जब नलिनी व सत्येन्द्र आस पास सोते तो दोनों ही एक दूसरे से बात चीत भी न करते।

नलिनी सोचती— आखिर इतनी उपेक्षा क्या?

सत्येन्द्र सोचता—जाने यह कौन कहा की है जो मेरी सरला की जगह आकर सो जाया करती है।

नई बहू लज्जा के मारे पति से अपने से कैसे बोले!

सत्येन्द्र प्रसन्न था कि नहीं बोलती सो ही अच्छा है?

एक रात अचानक सत्येन्द्र की नींद खुल गई तो देखा बिछौना खाली पडा था। चारों ओर गौर से देखा तो खिडकी पर वह दिखी। खुली खिडकी से आती चांदनी में उसके चेहरे का हिस्सा ही दिखता था जो बडा ही आकर्षक लगा। नीद की खुमारी में सत्येन्द्र ने बार बार देखा, चान्दनी की चमक में नलिनी बहुत सुन्दर लग रही थी। सत्येन्द्र ने कान भी लगाया। नलिनी रो रही थी।

सत्येन्द्र ने पुकारा नलिनी—'

नलिनी चौंक पड़ी ! क्या पतिदेव के मुख से उसकी पुकार हुई है । नलिनी की जगह कोई और होती तो क्या करती सो तो नही जानता पर वह चुपचाप पास आकर बैठ गई धीरे से ।

सत्येन्द्र बोला 'रोती क्यो हो ? क्या रो रही हो ?

आसुओ के बहने का वेग दूना हो गया । नलिनी की सोलह वर्ष की उम्र मे पति की यही प्यार की बातें हैं ?

बहुत देर तक मुह के भीतर ही भीतर रो चुकने पर आखें पोछकर नलिनी ने धीरे से कहा 'तुम्हे क्या मै बिल्कुल नही सुहाती ?'

पता नही क्या सत्येन्द्र को भी भीतर से रुलाई आ रही थी पर अपने को रोककर उसने कहा, क्या कहा सुहाती नही । किसने कहा ? मैं तुम्हारी खोज खबर नही रख पाता ।

नलिनी चुप रही ! न बोली न कुछ पूछा । सुनती रही ।

कुछ देर शान्ति के बाद सत्येन्द्र ने फिर कहा, 'सोचा था कि यह बात किसी से न कहूँगा क्योकि कहने से कोई भी लाभ नहीं । पर तुमसे छिपाऊँगा भी नही । सभी बातें साफ-साफ कह दूगा तो तुम मेरी हालत को समझ सकोगी मैं क्या करूँ मैं अभी भी सरला को, अपनी पहली स्त्री को भूल नही सका हूँ। न तो इच्छा ही है न लगता है कि कभी भी भूल सकूगा । तुम एक अभागे से बाँध दी गई हो । ऐसा भी विश्वास नही है कि तुम्हे कभी सुखी कर सकूगा । तुम्हे मालूम ही है कि मैंने अपनी मरजी से तुमसे विवाह नही किया । फिर अपनी मरजी से तुमसे प्रेम भी कैसे करूँ ।

गहरी रात के सन्नाटे मे दोनो यो ही बडी देर तक बैठे रहे । सत्येन्द्र समझ रहा था कि नलिनी रो रही थी । क्या वह भी रोया था ? एक के बाद एक सरला की बातें उसे याद आती रही । एकाएक उसका वही दृश्य आँखो के सामने जाग गया । जब सरला ने पूछा था—'क्या लिवाने आये हो ? याद आ गया तो बिना बुलाए ही आसुओ ने सत्येन्द्र की दृष्टि धुँधली कर दी । फिर वे गालो पर बहकर नीचे गिरने लगे ।

आखें सुखाकर सत्येन्द्र ने नलिनी के दोनो हाथो को अपने हाथो मे लेकर कहा मत रोओ नलिनी । मेरा इसमे कितना हाथ है जानती हो । कोई नही समझता कि दिन रात मैं अपने भीतर ही भीतर कैसी यातना सह रहा हूँ ।

काम के बाद वह नलिनी के साथ बैठकर गपशप करता है, हँसी मजाक करता है। कभी कभी गाना बजाता भी होता है। सब मिलाकर सत्येन्द्र अब बहुत कुछ आदमी बन गया है। मनुष्य जो पा जाता है। वही उसके लिए महान प्रिय सामग्री बन जाती है। मनुष्य का ऐसा ही स्वभाव है। अगर वह अशान्ति म है तो शान्ति खोजता फिरता है और अगर वह शान्ति मे रहता है तो जाने क्या बरबस ही अशान्ति को अपने पास घसीट लाता है।

छल को जानना पकड़ना मानो आदमी का सहज स्वभाव है। जो मछली भाग जाती है क्या वह खाक बडी होती है? सत्येन्द्र भी आखिर मनुष्य ही है। मनुष्य का स्वभाव तो नही बदलेगा न। इतने प्यार इतनी कोशिश इतनी शांति के जीवन के बीच म भी कभी कभी अशांति की बिजली कौंध जाती है। एक क्षण के लिए बिजली जो हलचल पैदा कर देती है उसे सम्भालने मे नलिनी को काफी मेहनत करनी पडती है। कभी कभी तो हारने लगती है जैसे अब उनसे सम्हाले न सम्हलेगा। इतनी मेहनत शायद बेकार हो जायगी। नलिनी म चीटी बराबर भी कभी गलती हो जाती तो सत्येन्द्र सोचता कि सरला होती तो शायद ऐसा न होता। होता या नही सो तो ईश्वर जाने शायद न होता या हो सकता है कि इससे चौगुना भी हो जाता। लेकिन इससे क्या होता है! मछली जो भाग गई है! सत्येन्द्र अभी भी सरला को नहीं बुला सका है। किसी दिन कचहरी मे आते ही अगर नलिनी उसे न दिखायी पडती तो वह फौरन सोचता—कहाँ यह कहा वह!

नलिनी होशियार है। वह सदा पति के पास ही रहती है। क्योकि उसे मालूम है कि उसके पति अभी उसकी मौत को नही भूल सके है। एकबारगी ही भूल जाएँ ऐसी भी इच्छा नलिनी की नही है। लेकिन बेकार ही याद कर करके मन के दुख का सजोना भी ठीक नही इसीलिए वह अपने भरसक ज्यादातर उनके पास ही रहने की कोशिश करती है। सरला का चाह न भूले हो पर अब उसका तो अनादर नही करते। यही क्या कम है? नलिनी के लिए यही बहुत है।

पटना मे ही एक प्रतिष्ठित वकील है—गोपीकान्त राय। उनका भी एक मकान कलकत्ते म है—नलिनी के घर के पास ही। कोई पुराना रिश्ता है और इसीलिए नलिनी उन्हे काका कहकर पुकारती है और उनकी धर्मपत्नी को काकी। यह काकी कभी-कभी उसके यहाँ आती थी। गोपीबाबू भी कभी कभी समय निकालकर आते। गाँव के नाते के अपने इस चचिया ससुर को सत्येन्द्र

पूरा आदर देते। दोनो घरा म थोडी दूर रहने पर भी आपस म काफी हेलमेल बना था।

कभी कभी नलिनी भी काकी क पास जाती। एक तो काकी का घर दूसर उनकी लडकी हेमा स गहरी मित्रता। बचपन की सहेली ठहरी। कोई किसी का नैम छोडे? *उस दिन बारह बजे थ। सत्येन्द्र कचहरी गया था।* कोई काम न था इसलिए नलिनी चित्र बनाने बैठी तभी एक गाडी गडगडाती हुई आकर दरवाजे पर रुकी।

कौन, आया? हेमा ही होगी! सोचने की जरूरत नही। वह शोर शराब के साथ हेमा आ पहुँची। आते ही हेमा ने एकाएक नलिनी के बाल पकड लिए और बोली— अरे भाई अब ज्यादा लिखने पढने की जरूरत नही है उठो उठो! हमारे घर चलो। कल भइया की बहू आई है न।'

नलिनी ने पूछा, वह आई है तो साथ क्या नहीं लेती आई!

हेमा बोली यह कैसे हो सकता था? अभी तो नई नई आई है। एका एक *तेरे यहाँ ही कैसे आ जाए।*

नलिनी ने कहा तो मैं भी क्या जाऊँ?'

हेमा ने हँसकर कहा अरे तू तो सिर के बल जाएगी। मैं अभी तुझे घसीट ले चलती हूँ।

फिर जब बाल पकडकर खीचा जाए और ले जाया जाय तो नलिनी ही क्या सभी चल जायेंगे। बहरहाल नलिनी को भी जाना पडा।

जाने म नलिनी को खास आपत्ति थी क्योंकि एक बार हेमा के यहाँ जाने पर लौटने म बडी देर हो जाती है। कई बार तो ऐसा भी हो गया था कि हेमा के यहा नलिनी गई और लौटी तब जब सत्येन्द्रनाथ कचहरी से वापिस आ चुके थे। ऐसी स्थिति म जब घर पर नलिनी न रहती तो सत्येन्द्र को बडी दिक्कत व परेशानी होती। वो परेशानी को वे ध्यान म लावें या नहा पर नलिनी को बडी लज्जा व क्लेश होता क्योंकि नलिनी को मालूम था कि कच हरी से आकर उसके हाथो द्वारा पखे की हवा खाए बिना पति की गरमी शात नही होती। और इसे तो ईश्वर की ही मरजी कहेंगे न कि बहुत बहुत प्रयत्न करने पर भी नलिनी सात बजे स पहले घर वापस न आ सकी। घर आकर उसने देखा कि सत्येन्द्र अखबार लिए बैठे थे, अभी तक कुछ खाया पाया भी नही। क्या किया जाता खिलाने का प्रबन्ध नलिनी ने अपने ही हाथ म ल

रखा था न। पास पहुँचने पर सत्येन्द्र न म पडा पर नलिनी का उसका यह हँसना अच्छा न लगा। वह मन ही मन नौकर म काप गई। आसन बिछाया और नलिनी न पति को जलपान कराने की कोशिश की लेकिन सत्येन्द्र न कुछ छुआ भी नहीं। उसे बिल्कुल ही भूख न था। बहुत मान करने पर भी कुछ न खाया। नलिनी समझ गई कि पति क्या इस प्रकार रूठे ह।

छ

क्या किस्मत फूट गई?

आज हेमा की विदाई थी ससुराल जाएगी। उसके पति उपेन्द्र बाबू लिवाने आए हैं। इधर कई दिनों से नलिनी हेमा से मिल भी न सकी थी। इसलिए बहुत दुखी होकर हेमा ने उसे मिलने आने को कहलवाया है।

नलिनी न प्रतिज्ञा की है कि वह बिना पति की आज्ञा के कहीं भी नहीं आए जाएगी। अब अगर प्रतिज्ञा की रक्षा के लिए पति की इन्तजारी करती है तो प्रिय सखी से भेंट न हो सकेगी। नलिनी बडे झंझट म फँस गई। हेमा तीन बजे की गाडी से ही चली जाएगी। फिर पति तो इसके बाद ही आवेंगे, आज्ञा कैसे ली जाय। बहुत मानसिक वाद विवाद के बाद नलिनी ने जाने का ही निश्चय किया। जाते समय दासी से कहा कि ठीक तीन बजे राय बाबू के गाडी भिजवा दे। नौकरानी ने समय से गाडी भेजी भी। लेकिन हेमा तीन बजे की गाडी से नहीं गई और इसीलिए उसने नलिनी को किसी भी तरह नहीं आने दिया। बहुत जिद करने पर भी हेमा ने उसे नहीं छोडा। हेमा बहुत दिनों के लिए ससुराल जा रही थी और अब न जाने कब भेंट हो इसलिए अपनी प्यारी सहेली को इतनी आसानी से कैसे जाने देती।

नलिनी वहाँ यह कहने म शरमाती थी कि वह इसलिए जल्दी जाना चाहती थी कि देर होने से पति नाखुश होंगे और फिर ऐसी बात सहज ही कोई कह भी कैसे? इतनी हीनता खुद कैसे स्वीकार की जाय? फिर इस उमर म तो और भी असम्भव है। अंत म विवश होकर यह बात भी हेमा से उसने कही पर हेमा इस पर विश्वास कैसे करती। उसने परिहास किया, 'मुझे चकमा मत दे न बेवकूफ ही बना। नाराजी वाराजी की बात म अच्छी तरह से समझती हूँ। उपेन्द्र बाबू भी तो नाराज होना जानते ह।

उसकी बात तो हेमा ने हँसकर उडा दी पर नलिनी को बहुत तकलीफ

हुई। वह कैसे कहती कि सब के पति एक ही ढाँचे में नहीं बन रहते। क्या सभी उपेन्द्र बाबू की तरह ही होते हैं।

और जब नलिनी घर वापिस आई तो दस बज चुके थे। इतनी रात बाद जब आकर उसने पता लगाया तो जाना कि सत्येन्द्र बाबू बाहर ही सो गए हैं।

मातंगिनी उर्फ माता नलिनी के नैहर की नौकरानी है। वह नलिनी से बहुत स्नेह रखती है। इसी स्नेहवश उसने आज नाराज होकर नलिनी को दस बीस बातें सुना भी दी। घर भर में केवल उसी को यह बात मालूम थी। सत्येन्द्रबाबू ने बहुत गुस्सा होकर ही बाहर के कमरे में बिस्तर लगाने को कहा था।

और गम्भीर होकर सन्नाटी रात में जब अपने बिस्तर पर पड़ा सत्येन्द्र आँख मूँदे अपनी पूर्व स्मृतियों को याद करने का प्रयत्न कर रहा था और मन ही मन विचार कर रहा था कि स्नान किया में भूला हुआ कमल की तरह खिला सरला का चेहरा और नलिनी का चेहरा कुछ मिलता है या नहीं और जब कि उसके मन में सरला के प्रेम के सामने नलिनी का प्रेम सागर के सामने पोखड़े का जल मात्र था तभी बहुत धीरे से कमरे का दरवाजा खोलकर नलिनी कमरे में आई। सत्येन्द्र ने आँख खोलकर देखा कि नलिनी ही थी। आकर नलिनी सत्येन्द्र के पताने बैठ गई। सत्येन्द्र ने आँखें बन्द करलीं। इसी तरह सन्नाटे में काफी समय बीत गया तब सत्येन्द्र नाराज हुआ, करवट बदल कर पुरुष के मान के अनुरूप स्वर में पूछा तुम यहाँ कैसे?

नलिनी रोने लगी। कुछ जवाब न दिया। अपराधी को रोते देखकर डिप्टी साहब का गुस्सा और बढ़ गया। और तेज आवाज में बोले बहुत रात हो गई है। जाओ भीतर और जाकर सो जाओ।

नलिनी रोती ही रही और आँसू पोंछकर धीरे से बोली, तुम भी चलो न वहीं सोने।

सत्येन्द्र ने सिर हिलाकर कहा मुझे बहुत तेज नींद आ रही है। अब नहीं उठ सकता।

रात में सत्येन्द्र का गुस्सा बढ़ता है नलिनी यह जानती थी इसलिए उसने आँसू पोंछ डाले। पति के सामने अब कभी न रोयगी। धीरे से पति के पाँवों पर हाथ रखकर कहा 'सिर्फ इस बार मुझे क्षमा कर दो। यहाँ तुम्हें सोने में तकलीफ होगी। भीतर चलो चलो।

लेकिन सत्येन्द्र ने जैसे प्रतिज्ञा करली थी कि अब वह भीतर नहीं जाएगा।

उमन कहा, 'इतनी रात बीते अब तकलीफ की बात मोचन की बात बकार है। तुम जाकर साओ। मैं यही मोता हूँ।'

नलिनी सत्येन्द्र को खूब अच्छी तरह जानती थी। विवश होकर वह लाट आइ और सारी रात रोत रोत बिताई। अब कहा मर गई हेमा एक बार आकर देखती क्यो नही ? नाराजी वाराजी की बात अच्छी तरह समयनी है न। अब मिटावे न इस सगडे का ?

दूसरे दिन भी सत्येन्द्र घर क भीतर नही गया न नलिनी के ही सामन आया।

नलिनी न एक चिटठी लिखकर माता के हाथ भिजवाइ। सत्येन्द्र न उस बिना पढे ही फाडकर फेंक दिया और माता का डाटा भी, अब यह मब मन लाया करो, समझी।'

इसी हफ्ते एक दिन अचानक नलिनी के बडे भाई नरेन्द्र बाबू पबना आए। अचानक भइया को आया देखकर नलिनी बहुत ही प्रसन्न हुई। लेकिन अचानक आन मे आश्चयचकित भी काफी थी।

'कस भइया ?'

नरेन्द्र न हँसकर नलिनी से कहा, घर चलने के लिए इतनी ज्यादा क्या उतावली है बहन ?'

'उतावली ?'

इस बात के पीछे की बात नलिनी उसी समय समझ गई। उमन हँसकर कहा 'तुम लागो को बहुत दिनो स नही दखा था न।'

सात

हाँ, फूट गई

फिर उस दिन पति के चरणो म प्रणाम करके नलिनी अपन भाई के साथ जब गाडी मे बैठकर चली गई तो उस रात भर सत्येन्द्र एक मिनट को भी न मो सका। वह रात भर चिन्ता मे डूबा ही रहा। मोचता रहा कि इतना न करन म भी काम तो चल ही सकता था। रह रह कर वह पछता भी रहा था और कई बार उसके मन म आया भी कि अभी भी समय है अभी भी गाडी वापस मँगाई जा सकती है। पर हाय रे पुरुष का अभिमान। उसी के कारण नलिनी को जाना भी पडा और वह वापस भी न आ सकी।

जाते समय माता भी नलिनी के साथ ही गई। वह अपनी ही इस अचानक विदाई का कारण व अर्थ भी जानती थी। नलिनी ने माता को खास तौर पर मना कर दिया था कि वह घर में किसी से भी इस बात का कोई जिक्र न करेगी। नलिनी समझती थी कि अगर किसी तरह भी यह बात खुल गई तो उसके पति की ही बदनामी होगी। वे अच्छे हों या बुरे हों। आखिर कोई औरत उसके पति की आलोचना या बुराई करने वाला होना कम है?

नेहर पहुँचकर नलिनी ने मां व पिता को प्रणाम किया छोटे भाई को गोद में उठाकर प्यार किया सब कुछ किया पर हृदय न भरी।

मां ने कहा, प्यारी बिटिया नलिनी एक ही दिन की गाड़ी की यात्रा में थकान से सूख गई है।

लेकिन वह मुरझाया व सूखा मुँह फिर प्रसन्न व हरा न हो सका।

संसार में अक्सर ऐसा ही देखा गया है कि किसी मामूली सी बात के कारण ही भयानक बुराई की पैदाइश हो जाती है। सूपणखाँ के मामूली से चित्त चंचलता के कारण सोने की लंका भस्म हो गई। एक बहुत मामूली सी रूप लालसा ही तो ट्राय के नाश का कारण बनी। राजा हरिश्चन्द्र भी तो एक बहुत मामूली ही कारण से तो विपत्ति में फंसे थे। संसार में ऐसे उदाहरण भरे पड़े हैं। यहाँ भी एक साधारण से अभिमान के कारण ही तो यह भयानक विपत्ति उपस्थित हो गई है। बेचारे सत्येन्द्रनाथ को ही क्या दोष दिया जाय?

नलिनी ने तो कभी भी अभिमान नहीं किया। पति के सुख दुःख का ही ख्याल करके वह सदा सब सहती रही। लेकिन अब उससे सहा न गया। उसने सोचा कि अगर इस बहुत छोटे से कारण के लिए उसे पति ने त्याग दिया है तो वह मर ही क्यों नहीं जाती?

अभिमान की ज्वाला से नलिनी सुलगने लगी। उधर सत्येन्द्र का अभिमान भी ठण्डा हो गया था। जिसके बिना एक मिनट भी काम नहीं चलता उसके लिए यह झूठा अभिमान भी भला कितने दिन चलता? अभिमान महान दुःख का कारण बन गया है। सत्येन्द्र रोज बाट जोहता रहा, शायद आज नलिनी की चिट्ठी आए। शायद वह लिखे, 'आकर मुझे लिवा ले चलो।' सत्येन्द्र सोचता कि इतनी भर चिट्ठी आ जाए फिर तो सिर पर बिठाकर लिवा लाऊँगा। फिर भविष्य में किसी प्रकार भी अनुचित व्यवहार न करूँगा। नलिन

भला होनी का कौन टाल सका है ? जो बदा है वह तो होकर ही रहेगा । तुम और हम तो बहुत क्षुद्र प्राणी मात्र है ।

और आजकल गिनते गिनते ६ महीना बीत गए । अभागिनी नलिनी ने कुछ भी न लिखा । एक भी चिट्ठी नही लिखी । सत्येन्द्रनाथ का पापी मन टूट गया पर झुका नही । ६ महीने किसी तरह कटे । पर अब एक एक दिन सत्येन्द्र को भारी हो रहे थे । जब मन मे सहनशक्ति घटने लगती है तो अभिमान फिर ताजा होने लग जाता है । सत्येन्द्र का अभिमान भी ताजा हो गया । फिर उसमे क्रोध भी जुड गया । हित अहित का ज्ञान न रहने से सत्येन्द्र को अपना दोष भी न दिखता था । उसने सोचा कि जब इतना अहंकार है तो उसे भी बदला भी वैसा ही लेने की जरूरत है ।

किसी ने भी अपना दोष न देखा । कोई भी नही देखता । दोनो ही आधे मिले दिन फिर धीरे धीरे दूर होते गए । यौवन के प्रारम्भ मे अर्द्ध विकसित लता को किसने खीचकर बढाया था ? लेकिन अब सहा भी तो नही जाता ! अब तो टूटने की स्थिति आ गई है ।

सत्येन्द्रनाथ ! तुम्हे दोषी नही कहा जा सकता । उसे भी दोष नही दिया जा सकता । दोनो ने ही गलती की है । गलती ही की है इसे अपराध भी नही कह सकते । गलती किसकी है अगर यही भगवान सिद्ध कर दे तो आत्मग्लानि किसे अधिक होगी । यह तो भगवान ही जानता है । यह न हम समझते है और न तुम ही समझते हो । समझ मे ही नही आता कि किस इच्छा किस आकाक्षा किस साध की पूर्ति के लिए तुम दोनो ने इतना कर डाला ।

साध कभी नही मिटती । मिटाने की बात भी नही । क्या साध है, सो भी शायद कोई ठीक से नही समझता । किन्तु फिर भी कातर हृदय न जाने किस अतृप्त आकांक्षा के लिए हर समय हाहाकार करता रहता है ।

जो होनहार है वह तो होगा ही । इच्छा रखकर भी क्या, मन के साथ द्वंद्व युद्ध करके भी तुम्हे अपराध से क्या छुट्टी दे सकूगा ?

आठ

तीसरी सुहाग रात

इतनी रूपवती, इतनी गुणवती बहू है फिर भी लडके को पसन्द नही आ सकी ! गृहिणी के क्लेश व दुख का क्या कहना ! यह सोच साचकर एकदम

उदास हो रही है कि ऐसी चांद सी बहू के आने पर भी घर गृहस्थी न बन सकी। मां के हजारों प्रयत्न करने पर भी बेटे का मन न बदला। लेकिन सब हार उपाय ही क्या है ? 'लडके को ही अगर पसन्द न आई तो बहू ही क्या है ? लडके के आदर में ही तो बहू का आदर है। और इसमे किसी का क्या दोष! अगर खुद देखभाल कर पसन्द करके कहीं ब्याह करते तो क्या मैं उसे रोक सकती हूँ। इसी प्रकार के वाक्यों का उच्चारण करते करते अपने अन्दाज के अनुसार वे वरणडाला सजाने फिर बैठ गई।

हरदेव बाबू का देहान्त दो साल पूर्व ही हो चुका है। उनकी याद आते ही आँखों में आंसू भर गए। फिर सरला की याद आई फिर नन्दिनी की याद आई। आंसुओं की धारा का वेग बढ गया। जाने अब कभी बहू आवेगी ! सत्येन्द्र के पिता होते तो शायद अभागिनी की ऐसी हालत ऐसे दिन न देखने पडते !

सत्येन्द्र ब्याह करके आया है। माँ वरण करके दोनों को घर में ले आई। उनकी आंखों में फिर पानी भर आया। उस पानी को सुखाने की कोशिश करते हुए — 'हाय वहां आंखों में जाने क्या पड गया है कि बार बार पानी आने लगता है।'

गिरीबाला बहुत ही मुंहफट लडकी है। जो चाहती है बोल देती है। नन्दिनी के साथ उसका बहनापा था। वह कह ही तो बैठी इतनी ही उमर में तीन तीन बार तो हो चुका। अभी और भी कितनी बार जाने क्या क्या देखना होगा कौन जानता है भला।

बात के तो पर होते हैं। यह बात भी सत्येन्द्र के कानों तक गई। कल ही तो सुहागरात है।

कहीं से बडे ठाट बाट व धूमधाम से एक भारी भरकम सौगात आई है। वर वधू के लिए सौगात। ढाके की साडी धोती चादर और बहुत अच्छी अच्छी चीजें भी साथ हैं। वधू के लिए जैसी बनारसी साडी आई है वैसी कीमती व सुन्दर आज तक गांव ने कभी भी किसी ने न देखी था। सभी को ताज्जुब था। सभी पूछते थे— कहां से आई है यह सौगात ?

मां बार बार घूंट पीकर कहती — सत्येन्द्र के किसी मित्र ने भेजी है।

गृहिणी ने आंखों के आंसू भी छिपाए सच समाचार भी छिपाया और रात दिन रहँसते मुँह से सौगात की मिठाई बटवा दी।

सभी अपना अपना हिस्सा लेकर चली गई। जाते वक्त राजबाला से बिना बात नहीं रहा गया अच्छी सौगात आई है।

नृत्यकाली ने भी कहा, 'क्यों न हो ?' बड़े आदमियों के यहां से ऐसी ही सौगात आती हैं।'

और धीरे धीरे जब यह बात दब गई तो योगमाया बोल उठी, 'अच्छा कोई बताये कि फिर से ब्याह क्या किया आखिर ?'

नानदा ने कहा, क्या जानें बहिन ! कोई छिपी बात जरूर होगी। वरना वह पूरी रूप गुण से भरी बहू थी। क्या मालूम ! कुछ समझ में नहीं आता !'

रासमणि, नाई की बेटी है। उसकी दशा अच्छी ही है। देखने सुनने में भी बुरी नहीं, अच्छी ही है। हां जरा नाक भर चपटी है। कोई कोई जो जलते हैं उससे, वे तो उसकी आंखों में भी दोष बताते हैं। कहते हैं, 'हाथी की आंखों से भी छोटी छोटी आंखें हैं।'

खैर, जाने दो इस निंदा की हमारी आदत नहीं। न इससे हम कोई मतलब ही है। रासमणि ने जरा हंसकर कहा, 'तुम्हारे पास अगर थोड़ी सी बुद्धि होती तो ऐसी बातें कभी न करती ! वह जो हर समय, हमेशा ठहक ठहक के हंस हंस कर बातें करती थी तभी हमें उन पर सन्देह हो गया था। अरे उसका स्वभाव और चरित्र दोनों अच्छा नहीं था रे ! बिल्कुल अच्छा नहीं था ! नहीं तो भला इस तरह क्यों कोई निकाल देता ? और क्या फिर से, तीसरा ब्याह करते ?'

मुंह से तो किसी ने उसकी बात पर कुछ न कहा पर बहुतों की राय उस की राय से मिल गई।

और दूसरे दिन ही गांव के हर निवासी ने जान लिया कि रासमणि ने जमींदारों के घर का गूढ़ और छिपा रहस्य जान लिया है। और क्यों न हो, नाई की बेटी में भी इतनी बुद्धि न होगी तो ब्राह्मण या कायस्थ की बेटी में होगी ? बात को सबों ने स्वीकार किया।

अब गृहिणी की बारी आई। यही बात जब उनके कानों तक पहुँची तो अपने कमरे की किवाड़ बन्द करके वह एकबारगी जमीन पर लोट लोटकर रोने लगी। कौन कहता है कि मेरी नलिनी कुलटा है ! वह ऐसी नहीं हो सकती ! पता नहीं क्या बात है सरला के मुकाबले में मां नलिनी को ही अधिक प्यार व स्नेह करने लगी थी। वे जानती थीं कि जीवन भर के लिए ही नलिनी की तकदीर फूट गई है। मां ने मन ही मन सोचा कोशिश करूँगी। सत्येन्द्र रखे तो अच्छा ही है नहीं तो मैं तो उसे लेकर काशीवास करूँगी। अभागिनी की इस जन्म की सभी साधों पर पानी फिर गया।

तब फिर चुपचाप उन्होंने दरवाजा खोला और मातो को भीतर बुलाकर फिर दरवाजा बन्द कर लिया।

यह मातो ही तो सौगात लायी थी न !

दोनों ही ने एक दूसरे को देखकर खूब आंसू बहाये। आंसुओं का काफी विनिमय हुआ। किस तरह नलिनी का सोने का सा रंग काला पड गया है, किस अपराध के कारण सत्येन्द्र ने उसे पावों से ठोकर मारी है, किन वानर वाक्यों में उसने सास के चरणों में प्रणाम भेजा है आदि विवरण मातो ने खूब अच्छी तरह आंसू बहाते और पोछते हुए धीरे धीरे कह सुनाया। यह सब सुनकर गृहिणी का पहले वाला स्नेह सौगुना बढ़ गया और पुत्र पर क्रोध व संताप पैदा हो गया। मां के मन में भी दारूण अभिमान पैदा हो गया। क्या मैं सत्येन्द्र की कोई नहीं हूं ? क्या वह मेरी सभी बातें यों ही ठुकरा देगा ? क्या मैं उसके लिए उपेक्षा योग्य हूँ। मेरी क्या कोई भी बात न चलेगी ? मैं फिर से नलिनी को घर ले जाऊँगी ? मेरी घर की लक्ष्मी की यह दुर्दशा करनी चाहिये ?

और उसी दिन दुखी मां ने बेटे को बुलाकर कहा 'नलिनी को जाकर लिवा लाओ।

पुत्र ने सिर हिलाकर कहा, 'नहीं।

मॉं रो पड़ी। बोली तुझे क्या हुआ है रे ? मेरी बहू नलिनी के नाम पर गांव भर में कीचड उछल रहा है कलंक बरस रहा है। आखिर तू ही उसका पति है न ! क्या इस बात की भी मर्यादा न रखेगा ?

कैसा कलंक ? कैसा कीचड ?'

इस तरह से निकाल देना और इस तरह से ब्याह कर लेना भला मैं किस किस का मुंह बन्द कर सकूंगी ?

'किसी का मुंह बन्द करके क्या होगा ?

तो भी क्या लाएगा नहीं ?

नहीं !'

मॉं बहुत अधिक नाराज हो गई। वह पहले से ही हर प्रकार से तैयार होकर आई थी कि कैसे गुस्सा होगी कैसे बातें करना होगा। लिहाजा अधिक कुछ भी सोचना न पड़ा। तैयार थी ही बोली 'तो कल ही मुझे काशी भिजवा दो। मैं भी फिर यहां एक पल भी नहीं रह सकती।

सत्येन्द्र अब वह पहले वाला सत्येन्द्र न था। सरला के आदर का धन,

खेल की चीज, शौक की वस्तु अयमनस्क उच्चमना सरल हृदय, प्रफुल्ल, मुख यति व नलिनी का अनेक अनक जतन और अनेक क्लेश स मनका-सा वना हुआ सत्येद्रनाथ अब नही था। उसने भी अपनी छाती पर अब पत्थर रख लिया था। लाज शरम मान, अपमान हिताहित ज्ञान सबकुछ उसन गँवा दिया था। उसने अपने आप अनायास ही कहा तुम्हारी जा तबियत हा, करा। जहा तबियत हो चली जाओ। मैं अब उमे नही ला सकता नही ला सकता।

यह क्या ? इसका मा को स्वप्न मे भी ध्यान न था कि सत्येद्र के मुह मे एसी बात निकलगी ? उस यह उत्तर बेटे स सुनना पडेगा। रोती हुई वह वहा स तो चली गई। जात हुए कहती गई कुछ भी हा पर मेरी बहू कुलटा नही हा सकती। यह तुम सब अच्छी तरह समझ ला। गाव वाले भी चाहे जो अफवाह उठावें। मैं उनकी बात पर कभी कान न दगी।

फिर बुआजी न सत्येद्र को बुलाकर कहा तुम्हारे किसी मित्र न तुम्हार लिए सौगात भेजी है। तुमन देखा या नही ?

सत्येद्र न सहज ही गरदन हिलादी, 'नही ता। किस मित्र न ?

मुझे भी नही मालूम ? ता बैठा कपडे उठा लाऊँ।

थोडी देर के बाद बुआजी एक गठठर कपडे का ल आई। सब सत्येद्र का दिखाया। उसन देखा कि सभी कपडे बहुत ही कीमती हैं। वह आश्चय के सागर म डूब गया। कौन मित्र भेज सकता है यह सब ? कौन है वह ? एक बनारसी साडी अच्छी तरह उलट पुलट कर दखा ता उसक छोर म एक गिरह थी उसे खोला। कुछ बँधा था खोलकर दखा। एक छोटी सी चिटठी थी।

दस्तखत देखकर सत्येद्र के माथे पर जैस ढाकन लग गया।

लिखा था,

बहिन स्नेह का यह उपहार वापस नही करना चाहिए। तुम्हारी बहन, जीजी ने भेजा है। अवश्य इसे स्वीकार करना।

फिर,

उस सुहागरात की फूलो की सेज सत्येद्र के लिए कांटो की सज बन गई।

नव

नरेन्द्र को एक चिटठी

किसी युवक का अभिमान किसी बालक म देखा जा सकता है क्या ? सत्येद्र की तरह अभिमान करके इतना बडा अनथ करते हुए भी किसी बालक

का कभी किसी न नही देखा। बचपन में किताबें हाथ मे लेकर खेल करता था तो पिताजी ने उसकी सजा दी थी जो भोगी थी। सत्येंद्रनाथ! तुमन हृदय के साथ खेल क्यो है फिर उसकी सजा से क्यो डरते हो ?

तुम लोग युवक हो न! सारा ससार ही तुम्हारे लिए सुख का शान्ति का निकेतन है। मगर जरा यह तो बताओ कि तुम म स किसी का क्या कोई समय ऐसा नही लगा जब सचमुच ही अपन प्राण बोझ बन जाते हो ? जब जीवन की हर नस शिथिल होकर टलने लगी हो ? अगर तुम्हारा अपना अनुभव न हो तो जरा सत्येन्द्रनाथ का ही देखो। अगर उसम तुम्हे घृणा करने को जी चाहे तो खुलकर आजादी से घृणा करो। हां घृणा ही करना सहानुभूति न दिखाना। घृणा करोगे कुछ होगा नही कुछ कहेगा नही दया न करना नही तो मर जायगा।

और अगर पापी ही मर जाए तो प्रायश्चित कौन भोगेगा ? सत्येन्द्र के शान्तिमय जीवन का एक एक दिन भी एक एक असह्य बोझ बन कर आता है। दिन भर घायल की तरह छटपटाने पर भी वह उस बोझ को नही उतार सकता।

कभी कभी, रहकर बीच बीच म सत्येन्द्र को लगता है कि मानो वह जीवन की अतीत बात भूल गया है। हा अगर भूला नही है तो सिर्फ यह बात कि उसकी प्यारी पत्नी नलिनी पटना म चरित्रहीनता हुई थी और वह अपने पति द्वारा त्याग दी गई है।

सत्येन्द्र के तीसरे ब्याह को भी दो महीना बीत गए। आज अचानक नरेन्द्र का पत्र और एक छोटा सा पारसल मिला है।

पत्र नलिनी के भाई नरेन्द्रनाथ का है लिखा है,

सत्येन्द्रबाबू

बिल्कुल इच्छा न रहने पर भी आपको पत्र लिखने का विवश हुआ हूँ। सिर्फ अपनी प्राणाधिका बहिन नलिनी के कारण। मरने के पहले उसने बहुत बहुत आग्रह करके कहा था कि यह अँगूठी आपके पास फिर से भेज दी जाए। वही आपके नाम की अँगूठी वापस भेज रहा हूँ। मेरी स्वर्गीया बहिन की इच्छा थी कि आप इसे अपनी नई पत्नी को पहिना दें। आशा है कि उस की यह अन्तिम इच्छा पूरी होगी। और मरने के पहले वह आपसे बहुत बहुत अनुनय करके कह गई है कि उसकी छोटी बहिन कष्ट न पाये। —श्री नरेन्द्रनाथ।

पता नही सत्येन्द्र को यह बात याद आई या नही कि जब नलिनी का एक पुत्र सतान हुई थी और मर गई थी तो सत्येन्द्र ने यही अँगूठी उसे पहना दी थी।

× × + +

सत्येन्द्रनाथ अब पटना म नही ०। कारण क्या हुआ सो तो पता नही पर माताजी भी काशीवास न कर सकीं।

नई बहू का नाम है विधु।

विधु शायद पहले जन्म म नलिनी की बहन ही थी।